

**THE BOOK WAS
DRENCHED**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_180811

UNIVERSAL
LIBRARY

Osmania University Library

83

121P

Access on No ^{GH} 1483

YTH 211

; book should be returned on or before the date last
low

प्रतिभा



(राजनीतिक उपन्यास)



अनुवादक— पं० अनसूयाप्रसाद पाठक

निवेदन

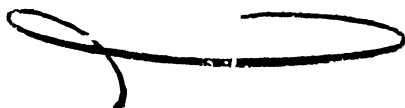
प्रतिभा अपने ढङ्गका एक सुन्दर उपन्यास है। लेखकके राजनीतिक-जीवनमें जो जो विचार-धाराएँ बही हैं वहीं लड़ियाँ गुन्थी गई हैं। ग्राम्य जीवनमें खासकर किसानोंके मनमें कैसे उतार चढ़ाव होते हैं और अगर वे कुछ पढ़ लिख जाते हैं तो क्यासे क्या बन जाते हैं, आधुनिक मनचले युवक जोशमें आकर क्या क्या कल्पनाएँ करते हैं और फिर किसी सुन्दरी किशोरीके रूप पर मुग्ध हो जाते हैं, और फिर अपने कर्त्तव्य-च्युतिकी ओर अपनेको तर्ककी कसौटी पर कसते हैं। सांसारिक भोग भोगनेके लिये व्यस्त हो पड़ते हैं। जब मैंने इस उपन्यासको पढ़ा तो मुझे सामयिक लगा और हिन्दीमें अनुवाद करनेकी इच्छा हुई। मैंने श्रीयुक्त हरेकृष्ण जी महताबसे अनुमति मांगी। उन्होंने केवल इसी पुस्तकके लिये नहीं दी, बल्कि लिखा कि—आप मेरी सारी पुस्तकोंमेंसे जिन जिन को चाहें हिन्दीमें अनुवाद कर सकते हैं, पूछनेको जरूरत नहीं है।

मैंने खुशीसे यह काम आरम्भ किया। समयाभावके कारण काफी समय लग गया है। और कुछ भूलें भी रह गयी हैं, जो अधिकांश प्रेस प्रूफकी हैं। हिन्दी संसार इसे पसन्द कर लेगा और जो जो परामर्श देगा, उनका स्वागत कर अगले संस्करणमें त्रटियाँ सुधार ली जायेंगी।

उत्कल साहित्यकी शायद एक दो ही पुस्तकें हिन्दीमें अनुवादित हुई हैं । और उत्तमोत्तम पुस्तकोंका अनुवाद करनेका काम सभाने अपने हाथमें ले लिया है । और वह धीरे धीरे इस कामको पूरा करेगी । अगला प्रकाशन श्री० गोपीनाथजी महंति एम० ए० का होगा ।

निवेदक—

अनुवादक ।



—एक—

गरीब घरके लिये, आदमियोंके साथ सम्बन्ध करनेमें भविष्य जितना आनन्दमय होता है उससे कहीं अधिक समस्याओंके समाधानमें दुःखद और अति उद्बेगजनक भी होता है। जिस दिन सनातन की कन्याका रामहरिके लड़केके साथ विवाहकी बात तय हुई उसी दिनसे सनातनके सिरपर मानो बज्रसा पड़ गया। इसके प्रथम यही अपनी लड़कीकी शादी करनेमें अनेक कोशिशें कीं और इसमें उसे आनन्द मिलता था। कितनी आशाओंकी लहरें उसके दिलमें उठती और उसे अस्तव्यस्त कर देती थीं। रामहरि जमींदार और धनीमानी व्यक्ति हैं। उनके वंशकी इज्जत है, यहीं सनातनकी लड़की जायेगी इस विषयमें गांववालोंको कल्पना तक न थी। उसने भी स्वप्नमें नहीं सोचा था। किन्तु भाग्यकी बात कहो या सनातनकी चतुरताका जोर हो, आखिरकार सनातनकी लड़कीकी शादी यहीं होना तय हो गया। रामहरिके पुत्र कटक कालेजसे बी० ए० पास कर वहीं वकालत पढ़ते थे। रामहरि खुद पूरे ग्रामीण थे, लेकिन उनकी अभिलाषा थी कि पुत्र वकील बने

और हाकिमके सामने एक मातबर आदमी होकर खड़ा हो । वकील होकर रुपये तो कमायेगा ही, इसके बावजूद नाम भी कमायेगा । यह सोचकर अपने कृपण होनेपर भी पुत्रके पढ़नेमें जो अर्थ व्यय होता था, उसमें कंजूसी नहीं की । एक बार ऐसा मनमें आया कि अब लड़केकी पढ़ाईमें वे नहीं खर्च करूँगा, लेकिन जब मनसे फिर एक प्रेरणा मिली कि लड़का पाठ पढ़कर आयेगा तो उसकी प्रतिपत्ति बढ़ेगी तो वह अनिच्छा काफूर हो गई । लड़केको अभी वकील होनेमें दो वर्ष बाकी हैं, इसी समय माताने जिद किया अब लड़केकी शादी हो जानी चाहिये । घरके एक कोनेमें पड़ी रहनेवाली स्त्रियोंके मनमें पूर्णिमा पर्व आदिको छोड़कर दुनियाके और अन्य आमोद प्रमोद उपभोग करनेका अवकाश नहीं मिलता । जिसके घरमें लड़के लड़कियाँ होती हैं, वे अपने बच्चेके शादी व्याह बराने—उसी सम्बन्धमें बातचीत चलाने, जन्मपत्री देखने-दिखाने, मिलने-मिलाने, फिर व्याह होना, कन्याका लाना और विदा कराना, आनेपर अपना अधिकार जमाना, फिर बाल बच्चे होनेपर नाती-नतियोंको लेकर खेलने तकके-जीवनमें आनन्ददायक अनेक काम सामने आ जाते हैं ।

रामहरिकी स्त्री इस पथका पथिक हो स्वामीके पीछे लगी कि लड़केके व्याहकी बात क्यों नहीं चलती ? रामहरिने स्त्रीके कथनपर वाधा देनेका कुछ कारण नहीं देखा । वे खुद ही अपनी जात विरादरीमें नजर दौड़ावे लगे । गरीब घरकी कन्या होगी, और सुन्दरी भी होगी, इस प्रकारकी दुलहिन लड़केके लिये जरूरत है । बड़े घरानेमें व्याह कराना उनका मत नहीं । कारण बड़े घरकी बेटी बात नहीं सुनती । लड़की जितने गरीब

घरकी होगी उतना ही आशाकारिणी बनेगी--ऐसा उनका विश्वास था और अनुभूति थी । उनकी पत्नी अति गरीब घरकी लड़की थी । केवल इतना ही नहीं जन्मपत्री भी ठीक मिलती होगी, जिससे कि कन्याके ग्रह-दोषसे पुत्रपर किसी प्रकारकी विपरित न आये । ये सब बातें सनातनकी कन्यामें पूर्ण होते देख, वहाँ शादीकी बात पक्की हो गयी । प्रारम्भमें जन्मपत्रो मिलनेमें कुछ दिक्कतें आई थी—किन्तु जमीदार घर गुमास्तागरी करनेके कारण जो कौशल सनातनमें था उसीके परिणाम स्वरूप ज्योतिषीको हाथमें कर लिया और जन्मपत्री मिल गई । वरकी ओरसे रामहरिने कन्याको देखनेके लिये जिसे भेजा था वह कन्याके सौन्दर्यको देखकर जितना मुग्ध नहीं हुआ उससे कहीं अधिक मुग्ध हुआ था सनातनके अतिथि सत्कारसे, पुरस्कारसे । विवाह होना ठीक हो गया । शुभ लग्न देखकर व्याहका दिन भी तय हो गया । इसके बाद सनातनके सिर पर चिन्ता नाचने लगी । सनातन एक जमीदारके घर गुमास्तेका काम करते हैं । मासिक ३) वेतन पाते हैं । अवश्य कुछ ऊपरी आमदनी भी होती है । साधारणतः मासिक ७।८ रुपये पड़ जाते हैं । इसके सिवाय उनकी आयका दूसरा जरिया नहीं था । घरमें एक पुत्र, स्त्री, खुद और एक कन्या—जिसका व्याह अभी अभी ठीक हुआ है—है । कन्या देखने पुरस्कार देने, जन्मपत्रो मिलने आदिमें, खर्च करनेमें तेज दीखे । वे जब यह सोचते कि लड़की तो जमीदार घरकी बहू होगी, दामाद तो जमीदारका एकमात्र पुत्र, धन स्वत्वाधिकारी होगा और जमीदारके यहाँ इतने दिनों तक काम करनेकी जो अभिरुचि है, वह दामाद और समधीनो अज्ञात नहीं रहेगा—इतनी बातें उनके दिलको यह पूरी तसल्ली दे देती कि

समझीकी जमींदारीमें नौकरी मिलना कोई कठिन कार्य नहीं होगा । नौकरी मिल जानेके बाद जमींदारके साथ जो सम्बन्ध जुड़ गया है इसके परिणाम स्वरूप थोड़े समयमें वह एक कर्त्ता बन जायेगा फिर चिन्ताका विषय नहीं रहेगा — इस प्रकारकी आगामी छवि जब सनातनके मनमें पूरी अङ्कित हो जाती तो उनकी छातीके अंदरसे एक आनंदमय दीर्घनिःश्वास निकलता और सारे विघ्न बाधाओंको दूर कर आगे बढ़नेमें उनको काफी शक्ति मिलती । उनके लिये सौभाग्यकी बात तो यही है कि वरकी ओरसे दाइजकी मांग नहीं हुई है, कारण कन्याको दरिद्रता ही एक गुण समझ लिया गया है । फिर भी शादीमें दो सौ रुपयेसे कम खर्च तो होनेके नहीं । बरात आयेगी तो उनकी सेवा तो कुछ करनी ही होगी, कुछ भी लड़कीको न दिया जाय तो भी एक दो गहना तो देना ही होगा । अवश्य यह सब खर्च मय व्याजके वसूल करके आजीवन सुखसे समय कटेगा—यह आश्वासन मनके अंदर है—किंतु अभी तो कमसे कम नगद दो सौ रुपयोंकी जरूरत है । ये सारी बातें सनातन अपनी स्त्रीके साथ पुंखानुपुंख आलोचना करते हैं । इस व्याहमें जो खर्च होगा, वह भावी आशाकी तुलनामें ना कुछ है । और फिर अगर लड़कीमें जरा भी बुद्धि होगी तो दो सालके अंदर भाग्यका नक्सा ही बदल जायेगा । ये बातें लड़केको सुनाकर कहते ।

सनातनकी पत्नी भी सुनहरे भविष्यकी छाया देखकर स्वामीके आनंद उछवासके उद्बेगमें साझीदार होती । उनके मनमें यह धारणा थी, कि घर गृहस्थीमें प्रवेश करनेके समयसे आज तक जो कुछ संपत्ति मैंने जमा की है, वह सनातनको मालूम हो गया है और वे उसे लेनेकी इच्छा करते

हैं। किन्तु वह इसको हाथसे छोड़ना पसंद नहीं करती। पतिके मुखसे सब बातें सुनती और कहती—‘देखो कहींसे रुपयेका जुगाड़ करो’, ‘मैं जुगाई भला क्या कर सकती हूँ।’ इन सब कथनोपरांत सनातन समझ जाते, निशाना ठीक नहीं बैठा। फिर कोशिश करते—इसी प्रकार प्रत्येक दिन चलता। वास्तवमें पत्नीके पास दो सौ रुपये हैं। शादीके समयसे लेकर आज २० वर्षके भीतर घर खर्चसे बचा बचाकर कतरव्योंत करके पैसे जमा करती, जब एक रुपया हो जाता तो किसी सूत्रसे रुपया बनाकर एक माटीकी चुकरीमें रखती जाती; वे ही अब दो सौ हैं। बीच बीचमें उस पूँजीकी चुकरीको कभी कभी देखकर वे बड़ी खुश होतीं। रोज शामको वहीं पर धूप दीप दान करतीं। मार्गशीर्ष मासके गुरुवारके दिन जो ‘कुरेई’ बैठाकर पूजा होती, वहाँ यह चुकरी भी पूजा पाती। सनातन इसको लज्ज करते। उन्हें विश्वास था कि “वनमें जो हाथी विचरण करते हैं वे सब राजाके ही हैं” यह सोचकर मन ही मन आनंदित होते। अब उसीपर नजर पड़ी है। पति पत्नीके धैर्यकी खींचातानी लगी है। पत्नी सोचती, जरा-सा दृढ़ होकर रहनेसे स्वामी कहीं न कहींसे रुपयेका जुगाड़ अपने आप करेंगे ही। स्वामी सोचते—चुपचाप रहनेसे मा ! लड़की की शादी, फिर भविष्यकी ऐसी स्वच्छ आशा, ऐसी हालतमें स्त्री अपने आप पूँजी निकालेगी।

—दो—

सनातनकी कन्या केवल देखनेमें ही सुन्दर न थी स्वास्थ्य भी अच्छा है उसका सौन्दर्य और स्वास्थ्य देखनेसे उपेन्द्रभंज या कालिदासके नारी सौन्दर्य वर्णना मनमें अंकित हो जायगी । जिस प्रकार गाँवकी परिस्थिति है उससे अन्नचिंता ही सबको अस्थिर किये है । सुन्दर असुन्दर देखनेकी फुर्षत भला किसे है ! किंतु फिर भी कन्या इतनी सुन्दर है कि अन्न चिंताको भुलाकर गाँववालोंकी बातचीतमें स्थान पा लिया है ।

गाँवमें एक उच्च प्राथमिक पाठशाला है, वहाँका पाठ लड़की पढ़ चुकी है । पढ़नेके समय इस सौंदर्यको जिसने देखा है दाँतों तले अँगुली दबाया है । पाठशालामें आनेवाले परिदर्शकोंकी दृष्टि स्वभावतः इस लड़की पर पड़ती और सभी खूब ऊपरतक पूछनेके लिये परामर्श देकर सौंदर्य उपलब्धि स्वरूप अपना यही प्रतिदान करते । माता पिता बिटियाको 'अपुछि' नामसे पुकारते थे । इसीके अनुसार पाठशालाके-उपस्थिति खातेमें भी 'अपुछि देई' नाम लिखा गया है ।

एक बार महेन्द्र बाबू इस पाठशालाको देखनेके लिये आये थे । वे कटक कालेजमें पढ़ते हैं, इनके पिता सब डिप्टी मजिस्ट्रेट हैं—खूब स्वच्छलतासे चलते हैं । इस सम्बन्धमें कुछ कहना अनावश्यक है । अनेक युवक पढ़ते हैं, इसलिये गाँव आने पर पाठशाला पर नजर देते । गाँवमें शिक्षाकी

उन्नीके उद्देश्यसे उतना नहीं जितना कि “हम शिक्षित हैं” यह गाँवके लोगोंको मालूम करानेके लिये। इसका फल यह भी होता है कि पाठशाला के गरीब शिक्षकके ऊपर हजार मालिकके साथ और एक शामिल हुआ। ऐसा अनेक स्थानपर मालूम होनेपर भी महेन्द्रका ऐसा कुछ उद्देश्य नहीं था। उसके गाँवके घरमें कोई नहीं है। माता पिता विदेशमें हैं। घरमें केवल एक गुमास्ता है। वही घर की देखभाल करता है। अतएव महेन्द्रका गाँवके प्रति निजी कुछ भी स्वार्थ नहीं था। केवल यही उनका ख्याल था कि गाँवमें शिक्षाके विस्तारके प्रति प्रत्येक शिक्षित युवकका कर्त्तव्य है। कर्त्तव्य वश हो वे जिस समय पाठशाला आये थे उस समय ‘अपुछि’ की उम्र १२ साल की थी। वह पाठशालाकी ऊँची श्रेणीमें पढ़ती है। महेन्द्र बाबू पाठशाला जाकर चारों ओर नजर डाल गये। उनकी आँखें ‘अपुछि’ पर अटक गईं। उन्होंने कनखियोंसे देखकर शिक्षकसे पूछा—“इस लड़कीका नाम क्या है?” नम्रताके साथ शिक्षकने कहा—‘श्रीमती अपुछि देई’।

महेन्द्र बाबूने कहा—‘क्या?’

शिक्षकने सिर खजुआते हुए कहा माता पिताके एकमात्र सन्तान और फिर एकैसोमें जन्मे बच्चेको—जिसका नाम ज्योतिष गणनाके अनुसार नहीं होता और भगवानकी दयाके भरोसे जिसे छोड़ दिया जाता है—‘अपुछि’ कहा जाता है।

इस प्रकार उत्तर देकर शिक्षकने सोचा, प्रश्नकर्त्ताकी परीक्षामें वह सौ में सौ नम्बर पायेगा। कारण सामान्य शब्दके अर्थमें वह इस प्रकार

विचक्षण उत्तर दे सका है। ऐसा उत्तर दे उसने प्रेमपूर्ण प्रसन्नभावसे महेन्द्रबाबूकी ओर देखा। महेन्द्र बाबू गंभीर हो कुरसी पर बैठकर बोले हमारे देशमें बालबच्चोंका सुन्दर नाम भी नहीं दिया जा सकता। उसके बाद महेन्द्र बाबूने शिक्षककी ओर देखकर लड़कीसे कहा—अच्छा जिस किताबको पकड़े हो, पढ़ो तो? लड़की पढ़ने लगी। मधुर स्वर, सुन्दर स्पष्ट उच्चारण। उसके पढ़ते समय महेन्द्र लड़कीके मुखकी ओर टकटकी लगाकर देखते रहे। इस बीच लड़की तीन पन्ने पढ़ गई। महेन्द्र बाबूको याद न रहा कि बन्द करनेको कहे। लड़कीने सोना प्राश्निक महाशय किसी दूसरे काममें लग गये हैं। उसने पुस्तकके ऊपरसे मुख उठाकर महेन्द्र बाबूकी ओर देखा। उसने देखा कि उनकी सम्पूर्ण नेत्रज्योति सिमिट उसके मुखपर जमी है, वह थोड़ी लज्जित हुई। महेन्द्र बाबूने भी थोड़ा संकोच अनुभव किया। हठात् मुखसे निकल गया—‘अच्छा बंद करो’ उसके बाद शिक्षकसे हाजिरी खाता माँगा। ‘अपुलि’ नाम जहाँपर लिखा हुआ था उसपर अपनी कलमसे एक लम्बी लकीर खींच दी और कहा—यह नाम ‘अपुलि’ न होकर ‘प्रतिभा’ होना लाजिम है। मैं लिखे देता हूँ ‘श्रीमती प्रतिभा देई’ इतना कहनेके बाद शिक्षकको देखकर कहा—समझे मास्टर, नाम सामान्य बात नहीं है। नामके अनुसार मानवका गुण भी विकसित होता है। इसमें एक साइकोलजिकल एफेक्ट है। अंग्रेजी न समझनेके कारण फिर समझा कर कहा—नाममें अर्थके अनुसार मनके ऊपर क्रिया—प्रतिक्रिया करनेकी शक्ति होती है। शिक्षकने समझा इसको पढ़ाने और पाठशालाके प्रति महेन्द्र बाबू खूब संतुष्ट हैं। शिक्षक उनकी बात पर जी हाँ जी हाँ बराबर करते जाते थे। महेन्द्रबाबूने

थोड़ी देर हाजिरी खातेको देखकर लड़कीकी ओर देखा और जानेके लिये उठे। होशियार शिक्षक ऐसे खुश परिदर्शकको भला आसानीसे कैसे छोड़े। नम्रतासे बोले इस साल पाठशालाका छुपर बंद भी नहीं हुआ है। आप....., महेन्द्र बाबूने ५ रुपये निकाल कर शिक्षकके हाथमें दे दिये।

उस दिनसे लड़कीका नाम 'प्रतिभा' पड़ गया घरमें माता पिताने जिस समय कन्याका कृतित्व सुना, बड़े खुश हुए। शिक्षक भी उसी लड़कीके ऊपर विशेष तत्त्व लेने लगे। उच्चप्राथमिक परीक्षामें प्रतिभाको सरकारी बृत्ति मिली,—लेकिन उसके ऊपर और अधिक पढ़ानेके लिये माता पिता राजी नहीं हुए। कटकमें रहकर पढ़ने आदिके खर्चका समूचा भार महेन्द्र बाबू लेनेको तैयार थे। इससे सनातन लड़कीको और पढ़ानेमें राजी भी हुए औरे फिर नाराज भी। लेकिन जब स्त्रीने मुख खोलकर कहा—इतनी बड़ी लड़कीको कटक भेजकर वहाँ वैश्या घरमें नाम लिखवानेकी इच्छा है क्या? उस समय महेन्द्रबाबूको पूर्ण विश्वास हो गया कि अब आगे लड़की पढ़ नहीं सकेगी। इससे महेन्द्रबाबूके मनमें बड़ा आघात लगा। सोचा—अशिक्षा और अज्ञानताके वारण कितनी वनमल्ली प्रस्फुटित हो अनजानमें नष्टभ्रष्ट हो जाती हैं—यह सोच एक दीर्घ साँस छोड़ा। लेकिन कटक्से शिक्षकके जरिये पुस्तक और मासिक पत्रिका नियमित भेजा करते।

पाठशालासे निकल प्रतिभा घरके एक कोनेमें बन्दिनी हुई। घरसे निकल कर बाहार आनेका उपाय नहीं। माँ हमेशा उसपर आँख रखकर चलती। बात बातमें कहती—इतनी 'बड़ी लड़की' घरके बाहर जायेगी। अरे

बापरे !' इसी प्रकारका एक वातावरणकी सृष्टि हुआ करती । इससे प्रतिभा के लिये घरसे बाहर होना एक बड़ा अन्याय है, ऐसा अनुभव करती । केवल उसका छोटा भाई पाठशालामें पढ़ने आता था । उसीके हाथ महेन्द्रबाबूके द्वारा भेजी पुस्तक और पत्र-पत्रिका जाती । सुविधाके अनुसार प्रतिभा पढ़ती । अधिक समय पढ़ते देख माँ नाराज हो कहती— लड़की पाठ पढ़कर क्या नौकरी करेगी ? इतनी पढ़ाई भला क्यों होती है ? लेकिन माँकी विरक्ति प्रतिभाके पढ़नेकी ओर विरक्ति नहीं जन्मा सकी । प्रतिभा सबेरे पौ फटनेके पहले उठती, आँगनमें गोबर पानी गेरती । और गाँवके गोइँड़े वाले तालाब पर अपना नित्यकर्म कर आती । दिन भरके कामके लायक पानी भरकर रख देती । फिर गौसारका गोबर साफ करती तब कहीं माँ विस्तर परसे उठती । उठते ही माँकी अभ्यस्त आखें घरकी चारों ओर घूमती फिरती । जरासी कहीं त्रुटि देखी जाती तो होती गालियोंकी पुष्प वृष्टि । अन्यथा माँ मुखमें दाँतुन दबाकर तालाबकी ओर चली जाती । उसी समय गाँव भरकी स्त्रियाँ वहीं तालाब पर जमा होती । वहीं पर गाँवके अंतःपुरकी सारी बातोंकी आलोचना होती । और वहीं आलोचनाएँ कभी कलहका रूप धारण कर लेतीं तो कई घंटे बीत जाते । अगर उस कलहमें प्रतिभाकी माँ ने भाग लिया तो फिर घर लौटते दिनके दोपहर होती । नहीं तो पहरके भीतर नहा धोकर लौट आती । इस समयके भीतर प्रतिभा गौसारको साफ करके गौ दुहती और सबेरेकी रसोईका सारा सरंजाम रखकर कुछ पढ़ापढ़ी करती । इससे पता लगता है कि उसका मन पारिपार्श्विक अवस्थासे संतुष्ट नहीं, बल्कि और ऊपर चढ़नेके लिये सीढ़ीकी खोजमें है । किंतु उसके मनकी चाहकी खोज करे कौन ? वह तो गरीब घर और फिर लड़की जो ठहरी ।

—तीन—

महेन्द्रबाबू फिर एकबार घर गये थे । पूर्व रीतिके अनुसार पाठशाला भी गये । शिक्षकसे पूछा— मैंने जो पुस्तकें और मासिक पत्र प्रतिभा के लिए भेजा था, आपने उसे दिया है कि नहीं ? उसने यह जाना, कि कौन ले जाकर देता है । प्रतिभाके छोटे भाईको पास बुलाकर पीठ पर स्नेह जनित नम्रताके साथ हाथ केरते पूछा— तुम्हारा नाम क्या है ? बालक कुछ समय तक इधर उधर देखता रहा; कुछ भी उत्तर नहीं दिया । शिक्षकने आँख दिखा कर कहा, पूछते हैं, 'तुम्हारा नाम क्या है; कह दो । बालक धोतीके छोरको हाथमें लेकर मोड़ता रहा, कभी शिक्षकके मुखको देखता कभी महेन्द्रबाबूको । आखिर में शिक्षकका गर्जन सुनकर बोला— सिद्धेश्वर । महेन्द्रबाबू नाराज न हो जाये- इसलिये कैफियत देते हुए कहा— इसकी बहिन जिस प्रकार सुन्दर पढ़ती थी यह ऐसा नहीं है । इसकी बुद्धि भी अच्छी नहीं है । महेन्द्रबाबू साथमें जो किताब और मासिक पत्र लाए थे बालककी ओर बढ़ाते हुए कहा— इसे ले जाकर प्रतिभाको देना, समझे ? सिद्धेश्वर धीरे धीरे आगे हाथ बढ़ाकर गम्भीर भावसे पुस्तक पकड़ा और उदास हो अपनी जगह पर जा बैठा । देशके बालक किस प्रकार भिर होते हैं अपरिचित व्यक्तिको देखकर संकोच करते हैं, इन सब बातोंको दूर करने और साहसी बनानेके लिये कहा, साथही शिक्षकोंके क्या क्या कर्तव्य

होते हैं उसके बारेमें भी उपदेश दिया । शिक्षक बार बार जी हाँ, जी हाँ कह कर सब उपदेशोंको ग्रहण करते गए । इसबार महेन्द्रबाबूसे जाते समय अर्थ सहायता नहीं माँगी । सिद्धेश्वरने घर आकर पुस्तक और मासिक पत्र प्रतिभाको दिया । सिद्धेश्वर पाठशालामें एक निरीह बालक जान पड़ता था, किन्तु घरमें उसकी बदमासीसे सभी व्यस्त थे । दोनों किताबें लाकर प्रतिभाके ऊपर फेंककर बोला--ले, हमारे स्कूलमें महेन्द्रबाबू आए थे उन्होंने तुम्हे पढ़नेके लिये दिया है । यह कथन प्रतिभाके माँके कानमें पड़ा, वह दौड़कर आई और फुफकारते बोली--कौन दिया है ? सिद्धेश्वर खेलनेके लिए घरसे बाहार जाते बोला--महेन्द्रबाबूने दिया है । अब तो प्रतिभाकी माँको सम्भाले तो कौन । बोली--वह तुम्हे किताबें क्यों देता है, उसे और क्या कोई आदमी नहीं मिला, मेरी ही लड़कीको क्या सस्ता पाया है । धनी है तो क्या जब जो इच्छा होगी करेगा, आदि आदि नाना बातें बोलते हुए गर्जन तर्जन करने लगी । प्रतिभा मन ही मन खुद लज्जित हुई । कुछ समय नीरव रही फिर धीरे धीरे बोली--वे तो हमेशा किताबें भेजा करते हैं । क्या इस बार नयी बात है ? माँ क्रोधके मारे बात करनेमें भी असमर्थ थी । क्या कहा --बराबर भेजता है । मैं तो जानती थी कि बिटिया पाठशालामें पढ़ती थी । ये किताबें सरकारकी ओरसे आती है यही महेन्द्रबाबू भेजा करते थे ? हमें क्या खानगी-खानावदोष समझलिया है ? जाती हूँ मास्टरको जरा देखूँ तो ! यह कहकर हठात् बाहर चली गई । प्रतिभाकी माँको सारा गाँव अपुछिमाँ कह कर पुकारते थे, और उस मुखफटसे सभी डरते थे । वह जिस समय गुस्सा करती उसका चेहरा भी भयङ्कर मालूम देता था उसकी गालीके डरसे कोई उसके पास फटकता

तक न था । न कोई उसके घरमें ही आता था । पाठशाला घरके कुछ ही दूर पर थी, वहीं मास्टर रहते भी थे । स्कूलकी छुट्टी करके शिक्षक महाशय बरामदेमें बैठे हुए थे । उसी समय अपुल्लिमाँ विकराल रूप जा उपस्थित हुई । बिना पूछताछ किए चौदह पुरुषका नाम गिनना शुरू कर दिया । यहाँ मास्टरी करता है या भडुआगिरी करता है ? तेरे पास पाठशालामें मेरी लड़की पढ़ती थी इसलिये तू दूती सजा है । अल्पायू (अल्प आयू वाला) तुझे डाकिनी खाए मास्टर, तुझे डायनी खाए, कुल बोरन आदि आदि अति कदर्य नङ्गी गालियोंकी बौझार करने लगी । शिक्षक अबक, कुछ समय तक उसकी ओर देखते रहे, उनका ग्वून भी गरम होने लगा । उठकर बाँह भाड़ बोला--चुन बदमास, सरकारी विद्यालयके सामने आकर हल्ला मचाती है । लेकिन इससे अपुल्लिमाँ दबनेवाली नहीं थी । उसने और जोरसे चित्कार किया । क्या कहा-- कम उमरिया, डाकिनी खाये, तेरी औरत रांड हो जाय, तेरा वंश बूड़े, आदि गाली देने लगी । इस प्रकारका गोलमाल मुनकर आसपासके पाँच-सात आदमी आ जुटे । उन्होंने अपुल्लिमाँसे कहा---चुन कर । तुझमें लाज शरम तो छु भी नहीं गई । तू यहाँ स्कूलमें आकर शिक्षकों गाली देती है ! हमारे गाँवका मान मर्यादा नष्ट करती है । जा भाग घर जा । अपुल्लिमाँने देखा साधारण मत उसके बिरुद्धमें जा रहा है । वह क्रोधके मारे तमतमाई हुई है । क्रोधको दबा नहीं सकती । उसी प्रकार गर्जन करके अपनी ओर सबको खींचनेके उद्देश्यसे बोली--सुनते हो, मेरी लड़की इसकी चटशालीमें पढ़ती थी । इसलिये लुका लुका कर उसके

छोटे भाईके हाथमें किताब इत्यादि भेजता है । इस मुहल्लेका महेन्द्र मास्टरको हाथ करके मेरी लड़कीके पास सब जिनस पत्र भेजता है । यह कम उमरिया मेरे घरको समझ क्या रखा है ? जमे हुए दर्शकोंने अपना विस्मय प्रकाश किया और मास्टरकी ओर देखनेके प्रथम शिक्षक अपना कैफियत देने लगे हैं । महेन्द्रबाबू विद्वान आदमी हैं; धनी हैं । इसकी लड़की अच्छा पढ़ती है समझ करके मुझे कितनी पुस्तकें और मासिक पत्र देनेके लिए कहा था--मैंने उन्हें भेजा था । इस पर यह आकर मुझे उलंग भाषामें गाली देती है । यहाँ यह कैफियत चलती थी उधर यह गाली भी जारी है । आदमी कुछ इधर सुनते हैं कुछ उधर । शेषमें यह फैसला हुआ कि शिक्षकसे गलती हुई है । सयानी कुमारी कन्याके पास अन्य पुरुषके कागज पत्र देना अन्याय है । लेकिन मास्टर विचारेने बिना जाने सुने ऐसा किया है । भविष्यमें अब ऐसा नहीं होना चाहिये । ऐसा मास्टरको होशियार करके अपुष्टिमाँको समझा बुझाकर घर भेजा । घर पहुँचने तक मास्टर पर गाली बरसा होती रही, घर जाने ही क्रोधकी गति प्रतिभाकी ओर मुड़ी । सुनेगी, जा सुन गाँववाले क्या कहते हैं । कुलछिन आज घरका सान मिट्टीमें मिला दिया । महेन्द्र कौन है ? क्यों तुझे इतने आदरसे किताबें देता है । पाठ पढ़कर बबुआइन बनेगी क्या ? तेरे कर्ममें न जाने क्या दशा है इत्यादि कहते कहते क्राधकी धारा अपने आप सुख गई । धीरे धीरे यह बात समुचे गाँवमें फैल गई, गाँवकी जनरव ऐसा चलता कि उसका थाहपाना नामुमकीन है । इस बातपर काना फुसी हुई कि राघवबाबूके पुत्र महेन्द्र और सनातनकी लड़कीमें परस्पर

गुप्त कागज पत्र चलते थे । उसकी माँ ने उन्हें पकड़ा । चारों ओर सोच समझकर बात दबा दी गई । गाँवके लोगोंने किसीको सच्ची घटना खोज करनेकी आवश्यकता महसूस नहीं किया ।

धीरे धीरे वह जनरल राघवबाबूके कान तक पहुँचा । वही महेन्द्रबाबूके भी कानमें गया । यह सुन वे बहुत विचलित हुए । किस भाषामें गाँववालोंकी निन्दा करें; समझ न सके । प्रथम उनके मनमें तो आया कि इस बातको उठाया किसने ? उसीको पकड़ना चाहिए । लेकिन उन्होंने सोचा--- यह घटना उसके पिताके कानमें पड़ेगी तो क्या समझेंगे । इसलिये इस बातकी जाँच-परताल करना उचित नहीं समझा । केवल शिक्षकको बुला कर सारी बातें सुन गये । बोले कुछ भी नहीं । गुम-मुम बैठे रहे । कुछ क्षण बाद बोले---नारीका जहाँ इस प्रकारका निर्यातन है वहाँ उसका मज्जल नहीं है । इतना कह महेन्द्रबाबूने शिक्षक को विदा कर दिया । खुद कटक चले गये । किन्तु प्रतिभाके मनमें दिन दिन नयी बात ज ने लगी ।

—चार—

जिस मासिक पत्रिका और पुस्तकके लिये इतना हंगामा हुआ, उसी मासिक पत्रिकामें “समाजमें नारीका स्थान”, शीर्षक एक लेख छपा है, लेखक हैं—हमारे चिर परिचित महेन्द्रब.बू ; और उस पुस्तकका नाम है “नारी” । उसमें विभिन्न प्रकारके नारी जागरण और प्रगतिके सम्बन्धमें नाना लेख हैं । मासिक पत्रमें प्रतिभाने देखा—उसके सम्बन्धमें भी लिखा है । किस प्रकार नाम बदला गया, बुद्धिकी विचक्षणता होते हुए भी आगे पढ़नेकी कोशिश किस प्रकार व्यर्थ हुई ये सारी बातें सप्रसंग उल्लेख है । उसमें यह भी लिखा था कि अगर पढ़नेमें सामाजिक बाधा न आती तो प्रतिभा एक दिन नारी नेत्री होकर बाहर निकलती । इस प्रबन्धकी प्रतिभाने बारबार पढ़ा । अपने मनमें जिनको स्वाभाविक नियम मान चुकी थी, उसके सम्बन्धमें नाना प्रश्न उठे ! पुरुष शिक्षा पाता है तो नारी क्यों नहीं पायेगी ? नर मुक्त आकाशके नीचे इधर उधर घूमेगा तो नारी ही क्यों अंधेरे घरके भीतर पिंजरेमें पढ़े पक्षीके समान बन्द रहेगी । इस प्रकार के नाना प्रश्न उत्कट रूपसे प्रतिभाके मनमें उठे । उस दिन माँ ने जो गाली दी थी उसे याद कर लज्जित हुई और क्रोधके मारे अपनेको अधिक अस्थिर पाया । माँ कहती थी ‘क्या यह वेश्या घर है’ ? इसका मतलब ? वह क्या सोचती है कि नारी केवल वेश्या वृत्ति करनेके लिये ही पैदा हुई है । संसारमें उसका क्या कोई काम नहीं है । उसे विशेष

दुख इसलिये और हुआ कि वह एक भद्र पुरुषके द्वारा कुछ पढ़ने को पाती थी, तो उसको लेकर वेश्यालय तक कल्पना कर डाली गई। इन सब बातों को जब वह एकान्तमें बैठकर सोचती तो उसकी आँखोंसे अश्रुधारा वह निकलतो। अश्रुधारा निकलनेके बाद वह थोड़ी शांतिका अनुभव करती। उसके हृदयका बोझ सा हलका हुआ। पश्चात् पुस्तक देखी—उसमें अनेक नारी जीवनियोंके साथमें अनेक सुन्दर प्रतिकृतियाँ हैं। वे अपने आपको विकाश करके समाजकी परिचालिका बनी हैं। नारी—साहित्य, विज्ञान, राजनीति आदि नाना क्षेत्रमें अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया है। और पुरुषोंका पथ-प्रदर्शक भी बनी हैं। उन्होंने समाजके बन्धनको नहीं माना। ऐसा भी देखनेमें आया है कि अपने बलसे प्रातःकालीन कमलके समान विकसित हुई हैं। कितनी अपने पिता माताकी सहायतासे और सुविधा पाकर उर्वरा भूमिके अन्नके समान कामयाब हुई हैं। अगर मुझे भी सुविधा मिले तो मैं भी उनमें एक बन सकती हूँ; ऐसी चिन्ता प्रतिभाके मनमें उठी। महेन्द्र बाबूने लिखा है—वह नारी नेत्री हो सकती थी। आशा और अभिलाषाको कितना ही छिपाया जाय लेकिन वह कभी मरती नहीं। अभिलाषाएँ मर गई हैं ऐसा मालूम होनेपर भी समयपर पर्देपर हाथ पड़ते ही निर्दिष्ट स्वर निकलेगा इसमें सन्देह नहीं। जिस समय दाबी गई अभिलाषा जगती है उस समय फिर उसके बेगको सम्भालना नामुमकिन है। प्रतिभाके मनका उच्छ्वास कल्पनाको अतिक्रम करके चल रहा था—वह अपने आपको सम्भाल नहीं सकती थी। जिस समय अभिलाषाकी ऊँची तरंगें उठतीं उस समय माता पिता पर क्रोध आता। जिस हालतमें वह थी, उसपर भी

गुस्सा आता था। अपनेको हतभागिनी समझ अपने ऊपर भी क्रोध करती। किन्तु महेन्द्र बाबूके प्रति उसकी श्रद्धा दिन दिन बढ़ रही थी। वे बड़े घरके लड़के हैं, उपकार करनेके लिये ही तो नारियोंकी श्रवणतिपर इतनी चिन्ता करते हैं, समाजको गाली देते हैं। यह उनकी महानुभावता ही है कि गरीब घरकी बेटी अपुछि का नाम प्रतिभा देकर उसके सम्बन्धमें मासिक पत्रमें चर्चा करते हैं। उसीके परिणाम स्वरूप आज यह सभीके लिये आलोचनाका विषय बन गया है। आज तक मेरी बुद्धि और विचक्षणताको किसीने भी तो नहीं देखा, नहीं चीन्हा। महेन्द्र बाबू ऐसे व्यक्ति थे तभी तो उनकी नजर मुझपर पड़ी। वे पुनः कटकमें पढ़नेका सर्व खर्च बहन करनेके लिये प्रतिश्रुति दे रहे थे। कैसे उदार विचार हैं उनके। इस प्रकारकी चिन्ता करते करते उस दिन पाठशालामें एकाग्र दृष्टिसे मेरी ओर कैसा देखते थे। वे चितवन याद पड़ गई। इस स्मृतिके साथ ही साथ उस सम्पर्कय सारी घटना याद आ गई। महेन्द्र बाबूका मुख मण्डल, चितवन भंगी, सहानुभूति सूचक बातें, उनका कण्ठस्वर। प्रतिभाको ऐसा मालूम दिया मानो दुनियामें वे अद्वितीय हैं। सारी चिन्ताओं को समेटकर मनमें आया कास उनके दर्शन फिर होते—यह सोच उसने दीर्घ निश्वास छोड़ा।

उधर माँ का कर्कश स्वर कानमें पड़ते ही सारी चिन्ता भाग खड़ी हुई। वह मानो स्वप्न राज्यमें अभी तक थी। अभी अभी सोकर उठी है। ऐसा उसे भान हुआ। 'सासके घरमें भाङ्ग की मारसे तेरी पीठ लाल न कर दी गई तो मेरा नाम न लेना। वेला लौट गई। गोरुओंकी नादमें पानी

[अठारह]

नहीं। सन्ध्याकी दीपवत्ती बारी नहीं गई, रसोईके लिये पानी नहीं बिटिया मेरी पुस्तक पढ़ती है। अरे तू ही एक लड़की है न दुनियाके राज्यमें और कोई है !’

कुछ समय बाद प्रतिभा फिर अपने वास्तविक जगतमें आ गई झटपट उठकर घरकी टहलमें जुट गई। किन्तु उसके मनमें महेन्द्र बाबूकी चिंता बैतरणीकी धारा बहने लगी।

—पांच—

महेन्द्र अपनी सम्मान रक्षा करनेके उद्देश्यसे जल्दी कटक वापस चला तो गया, लेकिन उसके मनमें कठोर चोट लगी थी। सोचता—“पुरुषके लायक मुझे जो सुविधा मिली है, जिसका कि मैं उपभोग करता हूं, उसके सम्बन्धमें अगर केवल मुझपर ही लोग आंखें उठाते तो मुझे आपत्ति नहीं। लेकिन मेरे कारण एक निरीह बालिकाकी जो बदनामी हुई है उससे तो उसे अति वेदना मिली होगी, गांव भरमें जो एक चहल पहल मच गई है वह प्रतिभाके कानमें निश्चय पड़ी होगी, सुनकर उसके मनमें क्या बीतती होगी। मेरे ऊपर उसकी क्या धारणा हुई होगी। लज्जाके मारे मुख उठा न सको होगी। उसकी माँ ने भी उसके सम्मानकी ओर दृग्पात नहीं किया। सारी बातें घूरेमें फेंक दी। विषय भी ऐसा क्या है, दो किताबें भेजना कौन सा ऐसा पाप था जिसके कारण एक अनूढ़ा बालिकाके नामपर ऐसा कलङ्कका काला दाग लग गया। समाज ही इसका दोषी है। समाजके दोषादोषका विचार करना तो पीछेकी बात है लेकिन इस समय तो मेरे कारण ही प्रतिभा कलङ्किनी बन लज्जावसवर्त्ती हो हीन जीवन बिताती होगी। गांव भरके स्त्री पुरुष उसे क्या न क्या कहते होंगे। प्रतिभा यह प्रमाण करनेके लिये कि महेन्द्रके साथ मेरा कुछ भी सम्बन्ध नहीं शायद मेरी दी किताबें और मासिक पत्रोंको फाड़ फेंका होगा अथवा अग्निमें भस्म कर दिया होगा।

यह भी हो सकता है कि मेरे लेखके प्रति प्रतिभाकी नजरें न पड़ी हों ! मेरी सारी चेष्टायें माटीमें मिल गईं । अब तो मैं उसे कभी देख नहीं सकूंगा । पुस्तक आदि भी नहीं भेज सकूंगा । अगर किसी तरह भेजूं भी तो लोक निन्दाके डरसे फाड़कर दूर फेंक देगी । यह भी हो सकता है कि उन सबको लेकर माँ के सामने रखकर अपनेको शुद्ध प्रमाणित करे । इससे तो सुन्दर जीवन जङ्गली तुलसीके विरवाके समान कुम्हिला जायेगा । क्या मैं किसी प्रकार उसकी सहायता नहीं कर सकूंगा ?” ऐसी थी महेन्द्र बाबूकी चिन्ताकी धारा ।

महेन्द्र बाबू कालेजमें पढ़ते थे । इसी समय भविष्यमें देश सेवा करनेके लिये कुछ छात्रोंने मिलकर एक दल गठन किया है । उसमें वे नियमित भाग लेते हैं । किन्तु उनके मनमें ‘समाजमें नारीका स्थान क्या है ?’ इसके साथ प्रतिभाका व्यक्तिगत विषय भी, अन्तःसलिला बन प्रवाहित होता था । रात सोनेके पूर्व सब विषय अच्छी तरह सोच लेते । प्रतिभाको समाजमें न्याय स्थान दिलाया जा सकेगा या नहीं, यही था महेन्द्रकी चिन्ताका प्रधान विषय । एक दो बार उसके मनमें आया कि प्रतिभाके साथ शादी कर लेनेसे तो सारी झंझट दूर हो जायेगी; लेकिन ऐसी चिन्ता आती और अपने आप दब जाती कारण शादी कर लेना दो में से किसीके हाथकी बात नहीं । इसके लिये प्रथम माता पिताकी सम्मतिकी जरूरत है । वह जिस समाजके अन्दर है वह भी तो ऐसे विवाहका पक्षपाती नहीं । आखिरमें बहुत सोच विचारके बाद प्रतिभा को एक उपायके जरिये सहायता करनेकी बात सूझी । यह उपाय इतना

सहज और आसान था कि उसे भी आश्चर्य हुआ कि ऐसी बुद्धि कैसे आई ।

वह अविलम्ब अपने गांव गया । उसने देखा कि अब गांवमें प्रतिभाके सम्बन्धमें कोई चर्चा नहीं है । ग्राम्य जीवनमें बहुओं और कुमारी युवती कन्याओंके सम्बन्धमें नाना बातें उठती हैं और प्रकाश रूपसे उसपर चर्चा होती है । अगर उन आलोचनाओंको लड़कियां सुनें तो जहर खा लेनेकी इच्छा करेंगी । किन्तु कुछ दिनोंके तुला-अग्निके समान वह बात कहीं ऐसे गायब हो जाती है कि उसका चिन्ह तक भी देखनेको नहीं मिलता । सभी अपनी अपनी चिन्तामें व्यस्त । भला किसको किसकी चिन्ता करने का समय है । जरूर कोई कोई अपने स्वार्थवस होकर ऐसे विषयकी बार बार आलोचना करते हैं; किन्तु प्रतिभाके सम्बन्धमें किसीको स्वार्थसिद्धी जैसी बात नहीं थी । इसीलिये बात दब गई थी । वास्तवमें अपुष्टि माँ की गालीके डरने उस विषयको दबानेमें काफी सहायता की है ।

इस प्रकारका वातावरण देख महेन्द्र बाबूके मनमें शान्ति आई । वे पूर्व नियमानुसार पाठशाला देखनेके लिये गये । पाठशालाकी माली हालतके सम्बन्धमें शिक्षकके साथ आलोचना हुई । गांवके आदमी सहायता नहीं देते, दो शिक्षक और हैं लेकिन काम नहीं करते । जिला बोर्डकी जो सहायता मिलती है यहीं खर्च हो जाती है । घर भेजनेकी बचत नहीं होती । घरकी हालत भी अच्छी नहीं आदि आदि शिक्षक अपना दुखड़ा रोने लगे ।

यह सुन महेन्द्र बाबूने कहा—मुझसे घरमें मिलो ।

समयानुसार शिक्षक आशवासन लेकर महेन्द्र बाबूके घर गये । महेन्द्र बाबूने पूर्ण सहानुभूति प्रकारा करते हुए कहा—कहिये मास्टर साहेब मुझसे क्या सहायता हो सकती है । यह मेरा गांव है, अतएव मेरा भी कुछ कर्त्तव्य इसके प्रति है ।

गद्गद् कण्ठसे शिक्षकने कहा—“जी, आप अगर इच्छा करें तो क्या नहीं कर सकते । अब मैं आपसे कहूं भी तो क्या !”

जरा सोच महेन्द्र बाबूने कहा — “मैं मासिक ५) रुपये पाठशालाको दान-स्वरूप सहायता दूंगा । मुझे पिताजी मासिक ५०) रुपये कालेजके लिये देते हैं उसमेंसे ५) रुपये मैं आपको दिया करूंगा । यह सुन आनन्दके मारे शिक्षककी छाती गज भरकी हो गई । ऐसी सहायताकी उसने कभी कल्पना तक न की थी । कृत कृत हो शिक्षकने कहा—अच्छा है यह पाठशाला हमेशाके लिये आपका कृतज्ञ रहेगी, कृतिका गान करेगी । आपकी शिक्षा खतम होते होते यह स्कूल हाई स्कूल होकर रहेगा ।

महेन्द्र बाबूने चिन्ताशील भावसे पूछा—“अच्छा, छात्र संख्या बढ़ानेका क्या उपाय है ?”

शिक्षकने अपनी अस्थिरता प्रकाश करते हुए कहा—“मैं तो हमेशा ही कोशिश करता हूं लेकिन गांवके गंवार आदमी भला शिक्षाका महत्त्व क्या समझें । उसके बाद मेरे साथ और जो दो शिक्षक हैं वे भी मुझे सहायता नहीं करते । मैं सबेरे गांवके अन्दर..... ।”

[तेईस]

बीच ही मैं टोंककर महेन्द्र बाबूने कहा—‘अच्छा, देखिये मैं सोचता हूँ अगर बीच बीचमें छात्रोंको कुछ पुरस्कार दिया जाय़ा करे तो छात्र संख्या बढ़ानेमें खूब सहायता होगी ।’

यह बात शिक्षकको खूब पसन्द आई । आग्रह प्रकाश करते बोले—अजी, बाबूजी तब तो फिर कहनेकी क्या बात है । अर्थाभावके कारण कभी सम्भव नहीं हुआ । ऐसे कामके लिये आदमी भी तो चाहिये ।

महेन्द्र बाबूने पैरके अंगूठेसे माटी खुरोदते हुए बोले—इसके लिये भी कुछ कुछ सहायता की जायगी ।

शिक्षकने अति कृतज्ञता प्रगट करते हुए कहा—‘आप अगर सहायता करेंगे तो मैं दुगुनी छात्र संख्या कर दूंगा ।’

महेन्द्र बाबूके मनमें बार बार आता कि प्रतिभाका हाल पूछ लें । लेकिन साहस नहीं होता था । सोचता कहीं फिर दक्षी बात न उठ जाय ।

शिक्षकके मनमें प्रतिभाके सम्बन्धमें यह बात न उठती कि इस सहानुभूतिके मूलमें कारण है, प्रतिभाके प्रति उनका स्वाभाविक प्रेम ।

शिक्षकको प्रति मास ५) रुपये मिलने लगे । साथ ही पुस्तकें और मासिक पत्र आदि छात्रोंके लिये मिलने लगे । प्रति मास एक पुस्तक और मासिक पत्र सिद्धेश्वर के नाम महेन्द्र बाबू भेजने लगे । इसके अलावे कुछ अन्य किताबें भी आती हैं । शिक्षकके मनमें कभी न आता कि सिद्धेश्वर के नाम क्यों पत्र और किताबें आती हैं । वह सोचता इस बालकका नाम महेन्द्र बाबू जानते थे इसीलिये प्रतिमास उसके नाम पत्र-

पत्रिका भेजते हैं। अगर अन्य बालकका नाम उनको मालूम होता तो अवश्य लिखते।

इसमें सन्देह नहीं कि महेन्द्र बाबूका सुचिन्तित विचार सफल हुआ। कारण नई किताबें लेकर सिद्धेश्वर अपनी बहिनको जा दिखाता। वह परिचित मासिक पत्रिका पा खुश होती। पुस्तक पढ़नेके लिये रखती। पुस्तक पढ़नेमें उसे इतना आनन्द न आता जितना कि चित्र देखनेमें। छवि ही देखकर सिद्धेश्वर खुश होता। प्रथम प्रथम जब मासिक पत्र और किताबें लाया प्रतिभा भीतर ले जाकर पूछती—ये किताबें किसने दी हैं।

सिद्धेश्वरने कहा—महेन्द्र बाबूने कटकसे मेरे लिये भेजा है।

प्रतिभा—मुखमें किसी प्रकारका परिवर्तन न दिखा फिर पूछा—तेरे लिये ही या अन्य विद्यार्थियोंके लिये भी।

सिद्धेश्वर आनन्दसे नाचते हुए बोला—और चार बालकोंके नाम भेजा है। लेकिन भेजनेसे क्या मेरी किताब सभीसे अच्छी है। इसमें मेरा नाम लिखकर भेजा है।

अब और कुछ पूछनेकी जरूरत प्रतिभाने नहीं समझा दीर्घ निःश्वास छोड़कर पुस्तकको अपनी छातीसे लगा लिया।

—छ:—

सनातन और अपुलिमा प्रतिभाके विवाहकी बातचीत करते लेकिन प्रतिभा से लुका छिपाकर नहीं। ऐसा करनेका उनका अभ्यास नहीं है और न वैसी सुविधा ही है। गांवोंमें प्रकाश्य या अप्रकाश्य आलोचना कुछ भी नहीं है। हरेक अपने अपने विषयकी आलोचना खुलासा करते हैं। इसके बावजूद सभी गरीब, सभीके घर छप्परके हैं। ऐसे कमरे नहीं अलग जाकर एक दूसरेसे मन्त्रणा करें। सनातनके घरमें दो कमरे हैं। दो पल्लेका छप्पर है। पास ही एक छोटा सा और छप्पर है जिसमें गोरु रहते हैं। पासके और एक छोटे घरमें रसोई होती है। एक कमरेमें सनातन अपनी स्त्रीके साथ वास करते हैं और एकमें घर गृहस्त्रीका सरंजाम हांडी आदिके साथ कुछ कूड़ा कचरा भी वास करता है। सनातन प्रायः नौकरीके कारण गांवसे बाहर ही रहते हैं। अतएव प्रतिभा, सिद्धेश्वर मां के पास ही सोया करते हैं। जब कभी सनातन आते हैं तब भाई बहिन उसी कचरेवाले कमरेमें सोते हैं। भीतरका आंगन भी अति छोटा है ऐसी हालतमें किसीसे छिपाकर बातचीत करना नामुमकिन है। इसलिये विवाहकी सारी बातचीत प्रतिभाके कानमें पड़ती है।

जिस समय ऐसी बातें चल रही थीं उसी समय सिद्धेश्वर पाठशालासे पुरस्कार स्वरूप मिले मासिक पत्र लाया था। उसमें एक प्रबन्ध था जिसके

[छम्बीस]

लेखक थे महेंद्र बाबू । उसमें लिखा है कि आजकलकी प्रचलित विवाह प्रथा नारियोंको नाना भ्रंशमें डालती है । उसमें स्वयम्बरकी चर्चा है । यह भी लिखा है कि माता पिता स्वार्थ बस हो कन्याओंके हित अनहित पर विचार न करके हमेशा के लिये एक बन्धन में फाँस देते हैं । जिसका नतीजा होता है कि नारीका जीवन भार हो जाता है और जिन्दगी भर कुदृती रहती है । इसीसे समाज तथा देशके लिये बड़ा ही अनिष्ट होता है । इन सबके प्रतिकार का एकमात्र उपाय है—वर कन्या अपना अपना मत दें । उनके ही इच्छानुसार विवाह कार्य सम्पन्न हो । ऐसी बातें प्रबन्ध में खूब विस्तारके साथ आलोचित हैं । इस प्रबन्धके पढ़नेके बाद जब कभी प्रतिभा सुनती कि पिताने अपनी दरिद्रता दूर करनेके निमित्त यह विवाह सम्बन्ध किया है तो उसके मनमें पिताके प्रति रोष उत्पन्न होता है । वह सोचती — “इन्होंने जीवन दिया है तो क्या यह इन्हींकी सम्पत्ति है, जिसका जीवन है उसका क्या कुछ भी अधिकार नहीं । ये लोग यह तो कभी चर्चा नहीं करते कि बेटीका भविष्य कैसा बीतेगा । इसके बारेमें लड़कीका मन क्या कहता है । माता सोचती है— बिल्लीसे मछलीकी रक्षाके समान युवती कन्याको घरमें वह कब तक ताके रहेगी । किसी प्रकार शिरका बोझा हलका हो । पिता सोचते हैं ‘लड़कीको सामने रखकर खुद किस प्रकार सुखसे जीवन यापन करेंगे’—‘तो क्या लड़कीका कुछ भी कर्त्तव्य नहीं है ?’—आदि आदि—नाना विषय प्रतिभाके मस्तिष्कमें उमड़ते रहते । लेकिन निरुपाय, उसका नाम बाहर प्रकाश पाये ऐसा उपाय भी तो नहीं । मनकी बात मन ही में मसोस कर नारी युग युग से इसी प्रकार का निर्यातन सहती आती है । आज ऐसा उपाय भी तो नहीं

कि जरा पत्थरके नीचे से आना शिर तो टेक सके । शहरमें भले ही कुछ आलोचना हो लेकिन गांवमें और फिर गरीब घरकी बेटीके लिये ऐसी आलोचना करना कल्पनासे बाहरकी बात है । जितना अपने माता पिता से विवाहकी बात सुनती है उतना ही उसका मन विवाहके विरोधमें होता जाता है । यहां तक कि जिस रोजसे विवाहकी बातें उठीं उस रोजसे किसीने प्रतिभाको हंसते हुए नहीं देखा, मशीनकी तरह घरका काम करती है । घरके कामसे छुट्टी पाती तो बैठकर पुस्तकें उलटती । गांवमें ऐसा कोई संगी साथी भी नहीं जिसके साथ बैठकर आलोचना करे और अपने मनकी साध पूरी करे । उसके बाद माँ का यह हुक्म है कि घर छोड़कर कहीं नहीं जाना । इस प्रकारका जीवन चिन्ताशक्ति शून्य पशु पक्षीके लिये सम्भव हो सकता है लेकिन मानवके लिये तो सम्भव कभी नहीं है । इतना होते हुए भी युग युगसे वही प्रथा चलती है । समाज मनुष्यके ऊपर किस प्रकारका शासन करता है वह इसीसे मालूम हो जायेगा ।

प्रतिभाका मन जब कभी ऊबता तो महेन्द्र बाबू की ओर ही झुकता । मनमें आता काश एक बार उनसे मुलाकात होती तो वह दृढ़ताके साथ पूछती कि माता पिता बिना कन्याका मत लिये शादी कर देते हैं ऐसी हालतमें उसका क्या कर्तव्य है ? इस सम्बन्धमें कोई निर्दिष्ट मत तो दिया ही नहीं । लेकिन मुलाकातकी बात उतनी ही सम्भव है जितनी रातको सूर्य उदय होनेमें । जिधर प्रतिभा ऐसी चिन्ता करती उधर ही पत्थर की दिवार सी सामने खड़ी मालूम होती । लांघनेकी राह नहीं ।

[अठाईस]

कुछ भी हो प्रतिभाके मनमें यह बात दृढ़ बन गई कि वह इस विवाहको पसन्द नहीं करती, विरोध करती है ।

विवाहके प्रथम जिस प्रकार नवयुवक और नवयुतियोंके मनमें भावी आनन्द की सरसता खेला करती है, वे जिस प्रकार सुत्र-स्वप्न देखा करते हैं, प्रतिभाके मनमें ठीक उल्टा है । उसे ऐसा भान होता मानो माता पिता उसे घसीट कर यमदूतके द्वार पर बैठा रहे हैं । ससुराल जाने पर लड़की किस प्रकार अदब कायदेसे चलेगी, स्वामी, सास-ससुरसे कैसा वर्त्ताव करेगी—आगे ऐसी शिक्षा गुरुजन दिया करते थे । वह शिक्षा और अन्यान्य पारिवारिक शिक्षाएँ आज गरीबी तथा आधुनिक सभ्यता के भारसे लोप हो गई हैं । पाठशालामें जिस प्रकारकी शिक्षा दूसरे देशों में दी जाती है वह यहाँ नहीं । नयी सभ्यताके प्रवाहमें प्राचीनता न जाने कहाँ बह गयी । किन्तु नूतनता भी तो अपनी प्रतिष्ठा नहीं कर पा रही है ।

ऐसी सन्धि स्थलमें नाना प्रकारकी समस्याएँ सामने आयेंगी इसमें दुःखी या आश्चर्यान्वित होनेकी कोई बात नहीं । किन्तु प्रतिभा इस अव्यवस्थाके आगे बली चढ़ रही है यही दुःख होता है । असान्तिकी चरम सीमा तक पहुँचनेके कारण प्रतिभाने मनमें सोचा—माता पिताके शादी कर देने पर भी वह कभी अपनेको विवाहित नहीं कहेगी—इसका अर्थ क्या है ? इसके प्रभावसे क्या क्या घटनाएँ घटेँगी उसका मुकाबिला करनेकेलिये प्रतिभा तैयार तो है ! आदि बातोंकी ओर पुंखानुपुंख आलोचना करनेकी शक्ति प्रतिभामें नहीं । न धैर्य ही है । जितनी उसकी शादीके बारेमें आलोचनाएँ होतीं उतनी उसके मनमें विद्रोहकी गाँठ मजबूत होती जाती कि वह कभी अपनेको विवाहित नहीं मानेगी ।

— सात —

गीतामें लिखा है :—

ध्यायतो विषयान् पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते,

संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ।

जिस किसी विषयके प्रति पूर्ण अभिलाष रखकर लोग चिन्ता करते हैं । आखिरकार वह चिन्ता निश्चय कभी न कभी सफल होती है । महेन्द्र-बाबूके लिये इसी प्रकार हुआ है । प्रतिभाके लिये चिन्ता करना उनका दैनन्दिन काम हो गया था । मासिक पत्रमें जो प्रबन्ध निकल रहे हैं, उसे प्रतिभा जरूर पढ़ती होगी, उसके सम्बन्धमें वह क्या सोचती होगी, यह अपनी कल्पना और अनुमानसे जाननेकी चेष्टा करते । प्रतिभाके साथ मुलाकात होनेकी सुविधा अगर मिले तो वह क्या क्या विषय आलोचना करेगा, उस समय उसकी बातचीतकी स्वर भंगी कैसी होगी, वह लक्ष्म करेगा । उस समयका आनन्द वास्तविक इस मर जगत्में देवभोग्य होगा—महेन्द्र जब इस प्रकारकी कल्पना करता तो वह आनन्द सागरमें गोते लगता हुआ किसी दूसरी दुनियांमें पहुँच जाता । उसका सारा शरीर शिहर उठता । वह एक प्रकारकी अधीरताका अनुभव करता हुआ दीर्घ निश्वास छोड़ता और फिर उसी कल्पना राज्यमें आकर कल्पनाको किस प्रकार एक नाम रूप दिया जा सकता है, इसकी चिन्ता करता । काश प्रतिभाके साथ मेरी शादी हो जाती ! यह चिन्ता पहले उठती और

बैठ जाती, लेकिन अब वह इच्छा और अधिक जोरसे सामने आकर खड़ी है। विवाहमें क्या क्या बाधाएँ हैं, उनका वारन किस प्रकार हो सकता है? आदि विषयोंकी आलोचना वह मन ही मन करता। उसके पक्षमें प्रथम बाधा है वह कि जिस समाजका उसने गठन किया है वही समाज। जो वह एक छात्र संघ नहीं है। जिन्होंने देश सेवाका व्रत लिया है और जो उसको देखकर चलते हैं वही इस समाजके सभ्य हो सकेंगे।

इस प्रकारकी चिन्ता प्रथम महेन्द्रके शिरमें गंगाकी भाँति आई। बादमें फिर और भी अनेक अंतरंगबंधुओंके साथ इसके बारेमें आलोचना की और उस समाजकी नींव डाली गई। और उस समाजका नाम रखा गया “वीर समाज”। जो परंपरासे रूढ़ीवादी समाज चला आता है वह देशके लिये घातक है अतः उसके विरुद्ध विप्लव करना होगा। अज्ञान, कुसंस्कार के विरुद्ध छाती तानकर खड़ा होना है वीरोंका काम। जिनका इस पुराने समाजके विरुद्ध लड़नेका बल है वही इस समाजके सभ्य हो सकते हैं। इस समाजमें देशकी नाना प्रकारकी समस्याएँ आलोचित होतीं। जातिभेद पर्दाप्रथा और देशमें अशिद्धा और कुशिद्धाएँ कितनी प्रकारकी समस्याएँ हैं—सभी पर चर्चा होती, बिना विप्लवके इन समस्याओंका हल सम्भव नहीं; इस पर वीर समाजी वृन्द विश्वास करते थे। विप्लव करनेके लिये जीवन दानकी जरूरत भी पड़ सकती है। यह बात भी सभ्य वृन्द भूले नहीं थे। अपने जीवनकी किस प्रकार विप्लव मार्गपर चला सकेंगे। इसके लिये किन किन तैयारियोंकी जरूरत है इसकी भी चर्चा करते। प्रथम उद्देश्य था—पढ़ाई खतम करनेके बाद कोई सरकारी नौकरी नहीं करेगा,

इकतीस

यह सभीने मिलकर एक स्वरसे निश्चय किया । उसके बाद यह भी निश्चय हुआ कि सभी सभ्य अविवाहित रहेंगे । कारण विवाह करनेसे उसी पुरानी प्रथाका दास बनना पड़ेगा । फिर उपार्जन करनेके लिये बाध्य होना पड़ेगा । और फिर विप्लवका काम छोड़कर उसीके साथ रफानामा करना पड़ेगा ।

ये दो बड़े बड़े सिद्धान्त हैं । इनको कार्य रूपमें परिणत करनेमें कौन कौन सी कठिनाइयाँ सामने आयेंगी उन सबकी ओर भलिभाँति विचार करके वीर समाजी सभ्यवृन्द खुदको तैयार करते थे या नहीं, इस सिद्धान्तके लिये जितनी चिन्ताकी जरूरत होती महेंद्रबाबू के नेतृत्वमें चलनेके लिये अन्य सभ्य पश्चात् पद नहीं होते थे । यही सिद्धान्त महेंद्रबाबूके सामने प्रतिभाके साथ शादी करने में बाधा स्वरूप खड़े हैं । एकबार समाजकी साप्ताहिक बैठकमें महेंद्रबाबूने विवाह प्रथाकी आलोचना करनी शुरू कर दी । उन्होंने कहा—हम लोगोंमें विवाह न करनेका जो सिद्धान्त तय किया गया है, उसमें जरा दुर्बलताकी छाया भी झलकती है । जिस प्रथाके जरिये आजकल विवाह सम्बन्ध होता है उसके विरोधमें अगर हम लोग शादी न करेंगे तो यह वीरोचित कार्य नहीं होगा । हम सब असवर्ण विवाह करेंगे, यही सिद्धान्त हम लोगोंको पकड़ना चाहिये । विवाह प्रथाके विरोधमें हम खड़े हों, किन्तु विवाहके विरोधमें कुछ काम करना जरा अति होती है; ऐसा मैं सोचता हूँ ।

इसके प्रतिवादमें नवीनबाबूने कहा—अगर सभ्यवृन्द विवाहके विरोधमें रहकर खुद विवाह करेंगे तो वे ऐसी अनेक समस्याओंके साथ बन्ध

जायेंगे कि दूसरे दूसरे काम करनेका समय भी नहीं पा सकेंगे । और फिर यह बात भी ठीक है कि विवाह मानवको बांधकर रख देता है, पैरमें लंगर डाल देता है, आगे जरा भी बढ़ने नहीं देता—नाना युक्ति दिखलाकर कहा—बुद्ध, चैतन्य आदि तकने भी आखिर अपनी अपनी पत्नियोंको छोड़ वैराग्य लिया । दूसरी ओर विवाहित जीवनके कारण अनेकोंको देश-सेवा बाध्य होकर छोड़नी पड़ी । ऐसी एक नहीं अनेक मिशालें नवीनने दीं ।

यहाँसे तुमुल युद्ध शुरू हुआ । विवाह एक ऐसा कार्य है, जो युक्ति तर्ककी कसौटी पर नहीं कमा जा सकता । शत सावधानता अवलम्बन करने पर भी न मालूम किधरसे एक फूल शर छाती पर आकर लगता है, जिससे प्राण व्याकुल हो उठते हैं । वह तर्कके अन्दर नहीं आता ।

अनेक आलोचनाके बाद अधिकांश सभ्योंकी रायसे महेन्द्रबाबूका मत मान्य हुआ और समाजकी नियमावलीमें संशोधन किया गया । विवाह न करना उत्तम है, लेकिन जो बिना शादी किये रह नहीं सकता है वह असवर्ण विवाह करेगा और दायिज आदिके सम्बन्धमें कोई चर्चा नहीं करेगा ।

ऐसा सिद्धान्त हो जानेके बाद महेन्द्रको जरा शान्ति मिली । उसने सोचा अब प्रतिभाके साथ शादी करनेमें बाधा नहीं । असवर्ण विवाह भी कहलायेगा; कारण वह खुद तो कायस्थ लेकिन लड़की है खण्डायत घरकी । दायिज पानेकी आशा तो है ही नहीं । अतएव दावी करनेकी बात भी नहीं है । अब रही बात एक—दोनों पक्षके मातापिताका राजी होना ।

महेन्द्रबाबू नाना चिन्ताओं उपायके खोजनेमें लगाने लगे । अब उसी मासिक पत्रमें प्रेम काव्य कविताकी चर्चा होने लगी, जिसके कि ग्राहक

उसके पिता भी थे । एक मासिक पत्रिका सिद्धेश्वरके नाम, ग्राम्य पाठशुलाके पत्तेपर भेज दी गई ।

महेन्द्रबाबूके पिता जनार्दनबाबू अनेक दिन सबडिप्पी रहे । लेकिन उनकी नौकरीमें खास कोई उन्नति नहीं हुई । उसका कारण है कि वे खुद साधु स्वभाव के व्यक्ति नहीं हैं । अपना शौक पूरा करनेके लिये मासिक पत्रके ग्राहक थे सच लेकिन उसे कभी भूल कर भी खोलनेका कष्ट नहीं उठाते थे । अतएव वहाँ महेन्द्रबाबूका सूक्ष्म उपाय भी नाकामयाब रहा । दो तीन मास बीत गये फिर भी उनकी शादीकी बात न उठती । महेन्द्रबाबूने जब बि० ए० पास किया तो तीन-तीन जगह से शादी का प्रस्ताव जनार्दनबाबूके पास गया । पिताकी जिद थी कि जो लड़केको विलायत पढ़नेके लिये भेजेगा, खर्च देगा, उसीकी लड़को के साथ शादी होगी । यह सब बात महेन्द्रबाबूके कानमें भी पड़ती । मनही मन पिता पर गुस्सा करते ।

पढ़ा लिखा युवक—न मालूम विवाह के सम्बन्धमें कितने लेख लिखा है लेकिन कभी भी जनार्दनबाबूने यह नहीं सोचा कि एकबार विवाहके सम्बन्ध में पुत्रसे भी तो पूछना चाहिये—महेन्द्रबाबूके क्रोधका यह था प्रधान कारण । उसने सोचा—अब पिताजी को रास्तेमें लानेका यही एक उपाय है कि वह घोषणा कर दे कि वह शादी नहीं करेगा । ऐसा करने से माता-पिता व्याकुल होकर मनायेंगे; तब मैं अपनी मंशा जाहिर करूंगा कि मैं अपनी मर्जी के अनुसार शादी करूंगा । शेष में आन्तरिक

[चौबीस]

अभिलाषा पूर्ण होगी— यह सोच महेन्द्रने पिताके पास एक पत्र लिखा कि— शादीकी बात सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ है; कारण मैंने आजीवन अविवाहित रहने की प्रतिज्ञा की है। यह चिट्ठी पा जनार्दन-बाबू जरा विचलित हुए। अपनी पत्नी के साथ परामर्श किया। यह निश्चय हुआ कि कुछ काल तक शादी की चर्चा करना बन्द रखा जाय। यही नहीं; महेन्द्र के चाल-ढाल पर नजर रखने लगे, खबर रखने लगे।

— आठ —

नवीनबाबू, जो वीर समाज के सभ्योके लिये शादी करना उचित नहीं समझते थे, वे हैं श्यामहरि बाबूके पुत्र । वे महेंद्रबाबू के सहपाठी हैं । दोनो एक साथ बि० ए० पास कर के निकले हैं । उन्होंने विवाह न करने का जो विरोध किया है वह केवल तर्क वश नहीं, बल्कि उनका पूर्ण विश्वास था कि विप्लव करने के लिये, आर्थिक मूँदकर अपने आपको उस कुण्ड में फेंक दिया जाय तो वास्तविक विप्लव कभी भी नहीं हो सकेगा । उसमें यह विवाह पूर्ण प्रतिबन्धक है । स्त्री सहधर्मिणी है । साथमें रहकर वह भी विप्लविनी बनकर कार्यमें सहायक होगी, यह विश्वास उनको न था । विवाह करनेके बाद स्त्री को खुश रखनेके लिये कुछ न कुछ पीछे हटना ही पड़ेगा, इसमें सन्देह नहीं—ऐसा उन्हें विश्वास था । वे अपनी आँखोंके सामने एक चित्र रखकर अपनी जीवनधारा को चला रहे थे । महेंद्रबाबूकी तरह वे आँखें मूँदकर पेलिया नहीं पड़ते थे । जो सोचते उसपर दृढ़ताके साथ चलते । इसलिये उनके यार-दोस्त उनको जिद्दी समझते थे । पढ़ने लिखने में उन्हें रुचि कम थी ।

वे विप्लव-स्वप्न में ही हमेशा विभोर रहते । विप्लव के प्रबल तूफान में पराधीनता सूखी घास-तृणके समान अस्त व्यस्त हो न मालूम किधर उड़ी जाती है, तूफानके धक्केसे तमाम पेड़ जिस प्रकार झुधर उधर

लटका-पटका खा रहे हैं, इसी प्रकारकी छुवि हमेशा उनकी आखोंके सामने नाचती थी। इसीमें उनको अपूर्व आनन्द मिलता था। उन्होंने कुछ दिन तक एक साधुके पास प्राणायाम सीखा था। इसलिये नहीं कि उनको मुक्ति मिलेगी बल्कि इसलिये कि ऐसी शक्ति उपार्जन करेंगे, जिसके फल स्वरूप तमाम दुनिया एक दिन उसके ही पद चिह्नोंपर चलेगी। आगे भी उसके वंशधर वैसा ही करते चलेंगे। उनकी अपूर्व शक्तिके प्रतापसे देशमें जितने अकल्याणकर कार्य हैं सबके सब काफूर हो जायेंगे। अनेक बार पढ़ाई बन्द कर देनेकी बात सोचते; लेकिन पिताकी आज्ञाका पालन करनेके कारण अपनी इच्छाको दबाये रहे। साथ वे अपनेको एक महत्-कार्यमें लगाये रखनेकी कोशिश करते।

एक दिन उनको पिताका पत्र मिला— तुम्हारी शादी ठीक हो गई है। निश्चित समयके दो-तीन दिन प्रथम घर आना पड़ेगा। पत्र पढ़कर वे प्रियमाण से हो गये। जीवनके लिये कितनी मधुर कल्पना उन्होंने कर रखी थी। वे सारी धूलीमें मिल गईं। विवाहका अर्थ उन्होंने समझा था कि एक गाँवकी अशिक्षित बालिकाको लाकर उसको पैरसे साँद देंगे। यह बालिका सांसारिक सुखस्वच्छन्दताके लिये उससे पूर्ण दावी करेगी अगर उसे पूर्ण न किया जा सका तो फिर यह जीवन भार स्वरूप होगा। पूर्ण करना अगर उचित है तब तो फिर उसीमें लग जाना होगा। उसका फल होगा यह कि वह भी एक गाँवका जमींदार बन अपना पेट पालन करेगा। ऐसे तो बहुत हैं, आते हैं जाते हैं। उनको दुनियाका क्या बनता बिगड़ता है। जीवनकी सार्थकता कहाँ है—यह चिन्ता भला किसे

है ! देशमें अज्ञाभाव, रोग, अशिक्षा और नाना दैविक विपत्तियोंका आये दिन नृत्य होता रहता है । उसके साथ ही फिर देशकी पराधीनताको दूर करनेमें जो अपना जीवन दान करेंगे, वे ही वास्तवमें धन्य हैं । उन्हींको इतिहास याद रखेगा । वह भी क्यों, भला उनमेंसे एक नहीं बन सकेगा । किन्तु यह विवाह उसके जीवनको बरबाद कर देगा । किन्तु पिताकी आज्ञाका अमान्य करेगा कैसे ? आज तक मैंने पिताके सामने शिर उठाकर बातें तक नहीं कीं । आज मैं उनको कैसे और क्या कहकर मना करूंगा । वे भी जिस दंगके आदमी हैं मेरे मनकी बात समझेंगे कैसे ? किन्तु अगर इधर बाधा नहीं देता तो विवाह निश्चित है—इस प्रकार चिन्ता-भौतिमें पड़ा नवीन नाना उपाय करने पर भी निकल नहीं सकता था । लेकिन यह बात वह धरे बैठा था कि शादी मैं नहीं करूंगा । इस प्रस्तावित शादीको किसप्रकार बन्द करा सके यही एक गभीर चिन्ता उसके मनमें उमड़ रही थी । वह विवाहका विरोधी था और अपनेको लज्जित समझता था । उसके सभी सङ्गी उसकी इज्जत करते थे । इसलिये उसमें आन्तरिकता अधिक है, दिखावापन नहीं । वीर समाजमें असवर्ण विवाह करनेकी अनुमति है । लेकिन वह तो घोषणा कर चुका है कि वह शादी नहीं करेगा । ऐसे मौके पर वह इसके सम्बन्धमें अपने साथियोंसे आलोचना करे भी कैसे ! लज्जा जो लगती है । अतः आलोचना नहीं हो सकी । शादी तो करनी है ही नहीं । झूठ-मूठ साथियोंमें आलोचना करनेसे लाभ क्या है ? यहाँ तक कि अपने अन्तरङ्ग बन्धु भैंद्रबाबू तक को भी नहीं बतलाया । किन्तु उधर विवाहकी तिथि नेकट आने लगी । अगर उत्तर कुछ न दिया गया तो विवाहका आयोजन

चलता रहेगा । यह निश्चयकर कि शादी नहीं करनी है— पिताके पास एक पत्र लिखा :—

मेरे जीवनमें जितनी कल्पनाएँ हैं उनकी साधनामें विवाह प्रधान बाधक होगा और फिर अभी तो काफी उम्र है; शादीके लिये ऐसी जल्दी क्यों ? इसी प्रकारकी युक्ति दिखाकर पिताके पास पत्र तो लिखा गया । लेकिन अन्तरसे एक आवाज आती—“पिता जी क्या मानेंगे ? क्या उनकी बातको अमान्य कर सकोगे ? विवाह निश्चय होगा । जीवन माटीमें मिल जायगा । ऐसे जितने भाव मनमें उठते, नवान अपने को उतना ही दुर्बल समझता जाता ।

—नौ—

नवीन अपने मनकी बात खुलासा केवल प्रकाशबाबूके साथ आलोचना कर सकते हैं। इसलिये जब उन्होंने देखा कि इस विवाह प्रस्तावसे जीवनके आदर्शके साथ धक्का लग रहा है और बड़े यत्नसे निर्मित इस जहाजको डुबोने बैठा है तो सलाह लेनेके लिये नवीन प्रकाशके पास गया। प्रकाश विप्लव विज्ञानका पण्डित है। उसमें उसकी ख्याति है। पृथ्वीके किसी भी युगके विप्लवको वह इस प्रकार वर्णन करता है मानो सभी विषय उसीके सामने होकर गुजरे हैं। इन्होंने ही उनका निर्माण और अवसान किया है। युवकोंमें वह एक आदर्श पुरुष था। जिस समय जहाँ बाढ़ आदि हुई, प्रकाश अपनी युवक डोलीको उन दुःखियोंकी सहायताके लिये जा पहुँचा है। अतएव जनसाधारणमें उसका नाम है। यही नहीं साधारण जनता प्रकाशको अपना आदमी समझती है। और अपने मनके भाव खुलेतौरसे प्रकाश करती है। उसी समय सभी कालेज-छात्र प्रकाशके भक्त थे। उनमें प्रथम था महेन्द्र। वीर-समाज गठनकी प्रेरणा महेन्द्रने प्रकाशसे ही ली थी। आरंभमें प्रकाश वीर-समाजकी बैठकोंमें नियमित भाग लेता, लेकिन बादमें वह विशेष दिलचस्पी न लेता था। परन्तु नवीनके साथ उनकी घनिष्ठता बराबर बनी रही। नवीन सोचता कि मेरे जीवनकी आदर्श-नौकाको चलानेका शक्तिशाली व्यक्ति एकमात्र प्रकाश ही है। पथदर्शक है। प्रकाश भी नवीनको हृदयसे विश्वास करता

है यह नवीन भलि-भांति जानता है । विवाह प्रस्ताव सुननेके बाद नवीनके हृदयमें जो तूफान चल रहा है, जिसको शांत करना, सहन करना नवीनके लिये कठिन है । ऐसी हालतमें प्रकाश ही केवल सहायता कर सकेगा । इसी विश्वासको ले नवीन शामके समय प्रकाशके पास गया ।

प्रकाश उस समय घरमें न था । नवीनने कुछ समय तक बैठकखानेमें उसकी अपेक्षा की । घरमें दो पुरानी कुर्सी और एक मेज रखी है । पासही एक आलमारीमें कुछ पुस्तकें रखी हुई हैं । इस बैठकखानेके अलावे एक कमरा सोनेके लिये है । बालक नौकर भीतर न जाने क्या करता था । बाहर खुरखुरानेकी आवाज सुनी तो आकर देखा कि नवीन-बाबू आये हैं । देखते ही बोला—बाबू अभी आते हैं । आप बैठिये ।

नवीनने पूछा—कहां गये हैं ? कितनी देर हुये गये ?

बालकने कहा—वेस बेरे ही कहीं गये हैं, खाना खाने भी नहीं आये । कह गये हैं कि शामको आयेंगे । यह कह वह भी भीतर चला गया ।

नवीन चारों तरफ देखता, प्रकाशके बारेमें भी रोचता—यह आदमी, जिसका घर नहीं, संसार नहीं, गरीब होते हुए भी धनका लोभ नहीं—किन्तु हमेशा लोक-सेवामें लगा रहता है । देशकी दुर्दशाका वर्णन करते उसकी आँखोंसे अश्रु धारा बह चलती है । मानो उनका हृदय पिघलकर बह चला हो । वे कहा करते हैं, देशकी मुक्तिके लिये लाख-लाख सेवकोंकी जरूरत है; ऐसे कर्मों जिनका एकमात्र कार्य होगा देश सेवा । जिस प्रकार आत्माकी उन्नतिके लिये लाखों सन्यासी घर बार छोड़कर वैराग्य

धारण करते हैं उसी प्रकार सब त्यागकर देशसेवामें व्रती होना चाहिये । इस सन्यासी जीवनकी कल्पना कितनी मधुर सुखमय और सुन्दर है । इस प्रकारकी जीवनयापना कितनी सुखमयी होगी, वह सुख केवल प्रकाश ही अनुभव कर सकता है । और वही सुखकी कल्पना नवीनके जीवनसे स्वप्नके समान विलीन होने जा रही है ।

नवीनको याद आया कि गत दो साल पीछे जब ब्राह्मणी-नदीकी बाढ़से जेनापुरके लोग नाना प्रकारकी विपत्तियोंका शिकार होकर हमेशाके लिये लोप पाने जा रहे थे । अनेक ग्राम बह गये थे । लोग भूखसे, रोगके मारे मरे जा रहे थे, उस समय प्रकाश अपनी जानपर खेलकर लोगोंकी सेवा करता था । उनको साहस धैर्य और कुछ सामयिक सहायता देकर जीवन देता था । नवीन भी उस समय प्रकाशके साथ था ।

वह भी एक समय था । माता भूखकी यंत्रणा न सहकर पुत्रको त्याग खुद खाकर बचनेके प्रयासमें होती । वह भी व्यर्थ था । घरमें खाने-पीनेकी व्यवस्था नहीं लेकिन जमीन-कर वसूल किये जा रहे थे । घरके टूटे कपाट और चौकट लिलाम किये जा रहे थे । सरकारी सहायताको दान करनेवाले दाता आकर डाकबङ्गलेमें आरामसे हैं । आपत्ति करने-वालों पर विरक्ति और उपहासकी वर्षा की जाती । और झूठी रिपोर्ट करके अपनी पदोन्नति लिप्ता और उपाधिके लिये यही एक उत्तम शरू पा खुश होते । जिसके पास कुछ पूंजी है और बुद्धि भी, वे सोचते किस् प्रकार कम खर्चमें दूसरोंकी सम्पत्ति पर कब्जा कर लें । उधर साधारण आदमी मजदूरी लेकर काम करनेको तैयार नहीं । उलटे भूखे प्यासे रहकः

[बयालीस]

मरजाना पसन्द करते । यह हालत नवीनको दिखलाकर प्रकाशने कहा — देखा ! यह है देश ! जिसकी मुक्तिके लिये उपाय करना है । पराधीनता केवल शत्रुही नहीं और भी कुछ है । यहाँ तो एक भी विदेशी नहीं । हाकिमसे लेकर विपत्तिग्रस्त सभी तो इसी देशके हैं । सभी तो हमारे देश भाई हैं । किन्तु कोई किसीके मुखकी ओर तो देखते ही नहीं । जो लोग भूखे हैं, वे इतने निर्जीव बन गये हैं कि महाजनकी धान-राशि और खौड़ी से धान लूट लेनेकी शक्ति नहीं रखते । सामर्थ नहीं, उत्साह नहीं, उस ओर चिन्ता तक नहीं, डर है । जिस प्रकार नमकीन माटीमें नारियल बढ़ता चला जाता है उसी प्रकार ये भी निर्जीवताके साथ चल रहे हैं, बढ़ रहे हैं और उनके साथ ही साथ बढ़ती है निर्जीवता । सब गोलक-धन्धेको काटनेके लिये चाहिये ठोस, निर्भीक, कर्मशील एक निपट देश सेवक, क्या नवीन ऐसा देश सेवक नहीं बन सकता ? यह विवाह उसकी सारी कामनाओंको चूर मार करदेगा । शेषमें 'पुत्र, कन्याके पिता है'— यही परिचय संसारमें रहेगा । इसी प्रकारकी चिन्ता-सागरमें बूझता उतराता नवीन बैठा था — हठात् उसने सुना 'क्यों नवीन कहाँ, कैसे आना हुआ ?'

नवीनने उठकर नमस्कार किया । और कहा— ऐसे ही घूमने चला आया था ।

प्रकाश कुरसी पर बैठकर नवीनके कन्धेपर हाथ धरकर गम्भीर हो बोला नवीन ! जिस समयकी प्रतीक्षा मैं कर रहा था वह अब आ गया है । मैं इस देशमें जिस परिस्थितिकी जरूरत समझता था वह

[तियालीस]

अब आं गई है । महात्मागांधी एक प्रबल जन-आन्दोलन करने जा रहे हैं । जिससे एक सौ वर्षसे प्रपीड़ित जनताके मनमें एक नवीन आशाका संचार होगा । किन्तु वह आन्दोलन कैसा आकार धारण करेगा मैं खुद नहीं कह सकता । जब श्रावण मासकी उत्तरकोणिया वायु चलती है, तो यह वर्षा होनेके लक्षण है । बहुत कालकी अनावृष्टिके कारण सूखी ऊसर भूमिमें अब शस्यांकुर जामेंगे । इतना ही मुझे मालूम देता है । इसलिये तुम और तुम्हारे साथी तैयार हों । वर्षा होते ही जिस प्रकार कास्तकार अपना सारा काम छोड़कर कन्धेमें हल धर करके असीम आशाको हृदयमें धारणकर अपने खेतोंमें जाते हैं और उसीमें अपनेको मानों मिलाते से देखे जाते हैं । तुमलोग भी वैसाही करोगे तो ? तुम देखते हो ऐसा भी हो सकता है कि किसानकी आशा सुफल न दे लेकिन फिर भी किसान अपनी आशा और विश्वाससे काममें लीन रहते हैं ।

महात्मागांधी स्वराज पानेके लिये एक आन्दोलन करने जा रहे हैं । यह बात नवीनको मालूम थी और इसके सम्बन्धमें दोस्तोंसे आलोचना भी हो चुकी है । किन्तु अपने पर ही प्रयोगकी कभी चिन्ता तक न की थी । प्रकाशके प्रभने सोई हुई आत्मचिन्ताको जाग्रत कर दिया । नवीनने सोचा—सचमुच, ऐसी हालतमें शादी विवाहकी आलोचना क्यों ? उसे आनेवाले अन्दोलनमें शामिल होना होगा । उसे विवाहके सम्बन्धमें बातें करना लज्जा मालूम दी । किन्तु उसके मुखसे मालूम होता था मानो वह गम्भीर चिन्तामें है । प्रकाश कुछकाल चुप रहा, फिर नवीनके मुखकी ओर देखकर बोला— यही है चौरस्ता, यहीसे अपना अपना मार्ग

पकड़कर चलना होगा। यहीं प्राचीनताके साथ नवीनताका संघर्ष होगा, होगा। विप्लवके समय ऐसा ही होता है। कितनी सब पुरानी बातें धो जायेंगी। कितनी नयी बातें पैदा होंगी। अब खेतमें हल चलते समय जिस प्रकार ऊपर की मिट्टी नीचे और नीचेकी ऊपर आती है वैसे ही अब होनेवाला है। तुम उसके लिये तैयार तो हो? चिताकुल दृष्टिसे प्रकाशकी ओर देखकर नवीनने कहा— मेरे जीवनका तो आदर्श अब यही रहा है।

इसी समय रसोइयेने प्रकाशबाबूको खानेके लिये बुलाया। प्रकाशबाबूने कहा— सोचो, देखो दुनिया जैसे चलती है, चलेगी और विप्लव भी होगा, यह असम्भव।

माता पिता बेटेको अच्छा कहते रहेंगे। उनकी इच्छाके अनुसार सारा काम होता चलेगा, मनकी सारी इच्छायें जो प्रकाश अप्रकाश अवस्थामें हैं, उनकी पूर्ति होती रहेगी। धनी मानी बनकर चारों तरफ जय जयकार होती रहेगी और विप्लव पथके पथिक भी होते चलेंगे, यह नामुमकिन बात है। नौकाकी पालकी रस्सी काटकर बीच समुद्रमें नौकाको छोड़ देना होगा। किसीकी ताड़नासे हृदय नहीं दबेगा या किसीके क्रन्दनसे हृदय बिगलित नहीं होगा। किसी आशाके वश हो हृदय आलोड़ित नहीं होगा। किसी अभिलाषाकी अतृप्ति से निराशा नहीं आवेगी। यही है केवल विप्लवकी लक्षण। इसी तरह होनेकी चेष्टा करो, सोचो। मैंने आज दिनभर कुछ नहीं खाया। जाओ फिर कभी मुलाकात होगी।

नवीन नमस्कार करके विदाय ले चिन्ताका भार लेकर लौटे।

—दश—

कुछ ही दिनोंके बाद भारत भरमें एक आलोचना आरम्भ हो गई— अंग्रेजोंके साथ असहयोग करना है। स्कूल, कालेज, कोर्ट, कचहरी यहाँ तक कि अपनी अपनी पदवियाँ भी छोड़ देनी होंगी। भारतकी मुक्तिके लिये अन्दोलन है। इसमें देशकी सभी प्रतिष्ठित व्यक्ति तक अपने प्राण भी उड़ेल चुके हैं। खासकर छात्रोंको सभी कहते हैं। स्कूल, कालेज छोड़कर बाहर आओ।

अन्यथा यह कथन रह जायगा कि जिस समय देशकी आशा पहाड़की ऊँचाईके समान संचरण करती थी उस समय अनेक विश्वासघातकोंने इस मुक्तिसंग्राममें भाग नहीं लिया था। कालेज न छोड़ना छात्रोंके ललाट पर काला दाग हमेशाके लिये लगा रहेगा।

यही था उस समयके वायुमण्डलकी चिन्तार। वीर-समाजके सभ्योंको इस चिन्तारने चंचल कर दिया था। प्रकाशरूपमें महात्मा गान्धी अंग्रेज सरकारको शैतान कहकर सम्बोधन करते हैं और स्वाधीनताकी वाणीका प्रचार करते हैं। इस कथनने छात्रोंके मनमें बहुत प्रभाव विस्तार किया था। वास्तवमें अपने जीवनमें जिस प्रकारकी कल्पना किया करते आते थे। आज वही आकर द्वार खुटखुटा रही है। कल्पना करना कितना आसान है और उसे कार्य-रूपमें परिणत करना कितना

कठिन है यह सभी अनुभव करते थे । आनन्दमय जीवन बीतता चला जायेगा और उधर देशसेवा भी होती चलेगी—यह असम्भव है । आज मालूम पड़ा ।

इधर वीर-समाजके नेता महेन्द्र बाबूने अपनेको अधिक अव्यवस्थित हालत में पाया । महेन्द्र बाबू की कामना थी, एक अच्छे वकील होंगे, सभा समितिमें व्याख्यान भाड़ आर्थेंगे, मासिक पत्रोंमें सुन्दर लेखमाला भी प्रकाशित करेंगे, अपनी पसन्दगीपर एक संगिनी होगी । कटकमें एक पक्का घर बनायेंगे, वहीं सुरुचि और सुपरिपाटीके अनुसार संगिनीको सुसज्जित करके सुन्दर जीवनयापनके लिये एक सुन्दर सुमनशयन तैयार करेंगे । इसके साथ ही साथ एक देशभक्तकी दुन्दुभि भी बजती रहेगी । इस कल्पनाको नाना रंगसे बहुत सुन्दर ढंगसे चित्रित किया था । इसी समय एक प्रबल झड़ तूफान आ कल्पनाके सौधको ढहा रहा है और मानो सारे चित्र धुले जा रहे हैं । वे देख रहे थे कि एक प्रबल बाढ़ उमड़ती चली आ रही है । जिसके द्वारा शस्य स्यामल हरा भरा अरहर का उरवर खेत भी सफेद बालूके स्तूपमें परिणत हो जा सकता है, अथवा मरु भूमि भी उरवर भूमिमें परिणत हो सकती है । जैसे जैसे बाढ़ उमड़ती चली आती है वैसे वैसे लोग अपनी अपनी स्थिति संभालनेमें व्याकुल रहते हैं—कौन कहां लगेगा । सारी दुनियाका रंग ही बदल जायेगा, बादमें कौन कहां किस परिस्थितिमें देखनेको मिलेंगे उसका अनुमान इस समय नहीं है । लेकिन यह बात सच है कि आज कल की परिस्थिति बहुत दिन तक रहन सहनकी व्यवस्थाको उलट पलट किये

रहेगी । महेन्द्र बाबू इस समय अपनेको कैसे सम्भालेंगे, सोच नहीं पाते । कभी कभी तो सोचते हैं—क्यों न इस श्रोतमें अपनेको छोड़ दूं, और अनिश्चित भविष्यको परीक्षा कर देखूँ ; किन्तु इस चिन्ताके आते ही छाती धकधकाने लगती है । श्रोतमें बहनेके लिये शक्ति और साहसकी जरूरत पड़ती है—यही महेन्द्र बाबूके पास नहीं । वे अनुभव करते, चिन्ता करते; बादमें अनिश्चित पथके पथिक होते, उसके परिणामकी उनको कल्पना करनेकी शक्ति न थी । ‘तो क्या वह तमाम जन समाजमें एक निन्दित रहकर अपना समय बितायेगा ?’—यह चिन्ता उनको घायल कर देती । जितना वे अपने बारेमें चिन्ता करते उतना ही गभीर निराशामें डूबने लग जाते । वीर समाजके संगियोंके मतामतका उनको ख्याल नहीं आता । जो अपनी खुदकी रक्षा नहीं कर सकता वह भला दूसरेकी चिन्ता करेगा क्यों कर ? अतएव तूफानके बीचमें पड़े सूखे पत्तेकी जो गति होती है महेन्द्र बाबूकी ठीक वैसी ही गति थी । वे अपनेको असहाय, अनिश्चित मन पाते, वे जिस प्रकार व्यतिव्यस्त थे, उनके वीर समाजके संगी साथियोंकी भी वही गति थी । केवल नवीन यह निश्चय कर चुका था कि वह अपनेको इस प्रबल तूफानके बीचमें छोड़ देगा । पिता माता और शादी ये तो सब सप्रसङ्ग मनके सामने आते और ‘किन्तु’ को छोड़ चलते बनते ।

एक दिन प्रकाशने नवीनको बुलाकर कहा—नवीन । यह जो प्रबल प्रवाह चला आता है इसमें अवगाहन करो चाहे नहीं, डुबकियां लगानेमें शामिल हो चाहे नहीं, इससे अच्छा हो या बुरा, लेकिन इससे समूचे

[अदतालीस]

देशपर तो प्रभाव पड़ेगा, पुरानी वस्तुओंके मूल्यके स्थान पर नया मूल्य आयेगा, उसीसे सारा संसार चलेगा, इसके सम्बन्धमें तुम क्या सोचते हो ? इस धारामें पैरोगे या बहोगे अन्यथा विचलित हो किसी किनारे पर अटक जाओगे । तुम्हारा वीर समाज इसके बारेमें क्या सोचता है, जो कल्पना वीर समाजकी थी आज वह कार्य रूपमें परिणत होती है तो ।

इस कथनने नवीनको और उत्तेजित कर दिया । उसने महेन्द्रबाबूसे कह कर वीर समाजकी एक बैठक बुलवाई । इस बैठकमें प्रकाश भी शामिल हुआ था । वीर समाजकी दूसरी दूसरी बैठकोंमें जो उत्साह, तेज देखा जाता था वह अब वहाँ नहीं था । बरफ जमी पड़ी थी । ऐसा लगता मानों वाष्प होकर सब इसमें शामिल हुए हैं । प्रकाशकी ओर देखकर लज्जित मुख हो शिर नीचे झुकालेते । मस्तिष्ककी चिन्ताधासके पैरके साथ हृदय के पैर मिल नहीं रहे थे । इसीलिये सभी संकुचित थे ।

नवीनने कहा—आज तक हमलोग बड़ी बड़ी बातें करते आये हैं बड़ी बड़ी चिंताएँ की हैं । आज परीक्षाका समय है । इसी समय हमें यह चिन्ता करनी है कि जो आन्दोलन आ रहा है उसके प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ।

महेंद्रने बीच में पूछा—तुम्हारी क्या राय है नवीन ?

नवीनने दृढ़ताके साथ कहा—मेरी रायमें तो यही ठीक समय है जब कि हम देशके लिये कुछ कर सकेंगे । देशमुक्तिके लिये इससे बढ़कर और दूसरा मौका नहीं मिलेगा ।

[उनचास]

महेंद्रबाबूने विरक्ति दिखाते हुए कहा—तो क्या हम सब कालेज छोड़ दें ?

नवीनने जोर देकर कहा—अवश्य ! कालेजकी पढ़ाईका गौरव तो रोज देखते ही हो । सबेरे पड़ते कुहिरके समान न मालूम कहाँ गायब हो जाता है । महेंद्रने गम्भीर होकर कहा—सो तो सच है । लेकिन..... । कुछकाल नीरव रहने के बाद बोला—कर्त्तव्य अवश्य करना है, यही बड़ी बात नहीं है । इस समय परस्पर विरोधी विचारधाराको लेकर चल रहे हैं । देश के प्रति जिस प्रकार हमारा कर्त्तव्य है उसी प्रकार माता पिताके प्रति समाज के प्रति और अपने प्रति भी तो कुछ कर्त्तव्य है, इन सभी विरोध-भाव जनित वातावरणके कारण मेरा मत है कि जल्दबाजी न कर आंदोलनकी गतिविधिको गौरसे देखना उचित है ।

महेंद्रके इस कथनसे सभीको जरा शान्ति मिली । ऐसा लगा मानो सभी यही चाह रहे हों । किन्तु लज्जा और सङ्कोचवस हो, कोई इसपर मत प्रकाश नहीं कर सक रहे थे । नवीन खुद मौन हो गया । उन लोगोंके मनमें जो 'किन्तु' आज तक परदेके भीतर था प्रवल हो बाहर आ गया ।

प्रकाशने सभीकी ओर देख, कहा—अपेक्षा करनेका अर्थ है खुद ही कुछ निश्चय न कर सकना । बहती धारामें तृणके समान बहना, भाग्यका फल कहना, पुरुषत्व नहीं है ।

महेंद्र बाबू दूसरोंका मौन समर्थन पाकर बोले—देखिये प्रकाश बाबू, आप हैं दुनियासे अलग । दुनियाको छोड़ अकेला जीवन बिताते हैं ।

आपकी बात अलग है। और हम ठहरे युवक, नाना प्रकारकी अभिलाषाएँ हैं। सम्भोगकी अभिलाषा नहीं, काम करनेकी अभिलाषा हमारे मनमें निहित है। उन सबपर विचार करना क्या उचित नहीं है ?

अधीरता प्रकाश करते हुए प्रकाश बाबूने कहा—कहिये तो किस कामकी अभिलाषापर विचार करना चाहते हैं ?

महेंद्रने दृढ़ताके साथ कहा—समाजमें जो दुर्नीति फैली है उसका संस्कार करना क्या बड़ा काम नहीं है ? इस कामको संभालना क्या कम बात है।

महेंद्रको लक्ष्यकर प्रकाश बाबूने जोर देकर कहा—समाज समाज तो चिह्नाते हो, लेकिन उसमें जीवन भी है ? वह तो कभीका मर चुका है। इसीलिये उसके विरोधमें विप्लवको निरापद समझ उसकी कल्पनामें सुल पा रहे हो। लेकिन इसपर कभी जरा सा भी क्या सोचा है कि बिना स्वराजके समाज संस्कार बिलकुल असम्भव है। विदेशी विधर्मोराज्य शक्तिके कारण समाज अपना शिर उसी प्रकार नीचे किये हुए है, जिस प्रकार तेलिया कीड़ा संकुचित होकर गोंडरी मार लेता है। उसी प्रकार समाज संकुचित है। इससे समाजका कितना भी अनिष्ट क्यों न हो यह कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि उसी संकुचित मनोवृत्तिके कारण ध्वंशसे समाज रक्षा पा चुका है। विधर्मों राजदण्ड कितनी महासभ्यताका संहार किया है उसका गवाही है दक्षिण अमेरिकाके मय और अस्टेक कीर्तिके ध्वंशावशेष। अभी हालमें भूगर्भसे उनका उद्धार किया गया है, उसका साक्षी है मध्य एशियाके वेलिनीएन इजिप्शियन पुरानी सभ्यताका

पुराना इतिहास । उसका साक्षी है मध्य एशिया और भारतवर्षसे बौद्ध धर्मका निर्माण । हिन्दू समाज संकोचके कारण विलोपसे अपनी रक्षा कर रहा है । यह संस्कार विदेशी विधर्मी सभ्यताके ऊपर प्रतिष्ठित है । वह संस्कार कितना ही मज्जलमय क्यों न हो, उसके प्रवर्तकोंमें कितनी भी आन्तरिकता क्यों न हो उसके प्रति समाजके हृदयमें आन्तरिकता सन्देह जनक व्यापार है । इसीलिये यह आत्मसंकोच है । यह ठीक वैसे ही है जैसे कि ग्राम्यकी पतिव्रता नारी नागरिकोंके इस विकाशमें सन्देहिनी बन संकोचसे हट जाती है । इसीलिये जितने संस्कार हों अगर वे विदेशी राज्य शक्तिके विरोधी नहीं हैं तो वे सभी समाजके वर्जित हैं । उस संस्कारकी नींव है विदेशी राजशक्तिका अवसान । उस संस्कारके प्रति समाजको कुछ संकोच नहीं होगा और समाज 'अच्छा' है इसपर माथापच्ची नहीं करेगा । हृदयसे प्रभावको स्वीकार करके माता जिस प्रकार सन्तानकी अटपटी या अल्हड़पनको मान लेती है उसी प्रकार । एकदेशी संस्कार किसी कामका नहीं । समूह संस्कार ही जरूरी है । इसीलिये यदि सभी आशाओंको जलांजलि देकर निकलते हो तो निकलो । विप्लव तुम्हारी अपेक्षा थोड़े ही करेगा । वह किसी प्रकारका ऊबड़ खाबड़ बारिवन्धनकी परवाह न कर आगे बढ़ जायेगा । केवल तुम लोगोंका जीवन अकार्य प्रमाणित होगा । पूर्व दिशामें जब सूर्य उदय हो गया तो फिर उजालेकी वन्या सर्वत्र फैल गई । गिरिशिखरसे लेकर नीचे छोटे छोटे पेड़ पौधे तक उससे आलोकित हैं । जो उस आलोकके प्रति तर्क करता है और युक्ति दिखलाकर वञ्चित होनेकी चेष्टा करता है उसके लिये सघन जङ्गलके बीच गुफा बना

उसमें बास करना चाहिये । वहीं अपना निरर्थक जीवन बितानेका मौका पायेगा । आलोककी बाढ़ तो अब आयेगी ।

इस कथनके खतम होते ही प्रकाशका मुखमण्डल लाल और गम्भीर हो गया था । दोनों आंखोंसे मानो ज्वाला निकल रही हो । जब उसने चारों ओर घूमकर देखा तो ऐसा लगा मानों सर्वत्र उजाला फैला हो । एक क्षणके लिये ही सही ऐसा लगा मानों सभी उसी बाढ़में कूदने के लिये लङ्गोटा कसे किनारे खड़े हैं । किन्तु थोड़ी देरमें हृदय और मनमें चिन्ता ही प्रबल हो एक द्वन्द्व खड़ा कर दिया । हृदयमें है विप्लवमें शामिल होनेकी इच्छा किन्तु दिमाग उसके विरोधमें खड़ा है, ऐसी हालतमें सभी नीरव हैं और म्रियमाण हो गये हैं । “थोड़ी देर बाद नवीनने कहा—मैं अपना सिद्धान्त सबके सामने प्रगट किये देता हूं । आप लोग जो भी करें, लेकिन मैं पढ़ाईको छोड़ इस आन्दोलनमें शामिल होता हूं ।”

महेंद्र और अन्य छात्रोंने नवीनको जिस निगाहसे देखा उसमें वर्षाका आभास था । जिस कामको एक पसन्द करता है, खुद नहीं कर पा रहा है; किन्तु दूसरा उसे कर रहा है, उसपर जिस प्रकार अकारण वर्षा हुआ करती है उसीका केन्द्र बना नवीन । अब कोई युक्ति तर्क नहीं करते । प्रकाश जानेके लिये उठे, नवीन भी उठा । वीर समाजकी बैठकका यहीं अवसान हो गया । बाढ़के जलसे प्रथम यही घर टूटा ।

—ग्यारह—

सन् १९२१ सालमें जो गांधीजी की आंधी इस छोरसे उग्र छोर तक चली उससे न जाने कितने विशाल तरुवर जड़ मूलसे पुछ गये, कितने पेड़ ठूठे बन गये और फिर उनमें शाखाएँ आईं और नई नई कोंपलें उठीं। उस समय अनगिनत सूखे पत्र पवनकी देगवान धारामें पड़कर अनजान कौन कहां धूलधूसरशून्य आकाशमें जाकर विलीन हो गये। उन सबका इतिहास खोज करना असम्भव है। और फिर यहां हमारा उद्देश्य भी तो नहीं है। यहां तो केवल हम अपने परिचितोंके वृत्तान्तके साथ सम्पर्क रखते हैं। उनमें हमारे महेन्द्र बाबू भी एक हैं। वीर समाजके विच्छिन्न होते ही विकल होकर कौन कहां किस रास्ते भागा; ऐसी हालतमें कौन किसकी क्या खबर रखता है। और फिर कालेजी जीवनमें जो बन्धुता स्थापित हुआ करती है, वह तो ठीक वैसे ही जैसे रेलगाड़ीमें बैठे यात्रियोंमें हुआ करती है। जीवनके किस स्टेशनमें कौन उतरेगा, किसे पता है। केवल गाड़ीके अन्दर बैठे रहने तककी बन्धुता रहती है। उसके बाद कोई किसीको याद रख सकेगा कि नहीं यह दूसरी बात है। महेन्द्र बाबूके मनमें अब किसी बन्धुके प्रति चिन्ता नहीं। उनकी खुदकी इतनी चिन्ता है कि वे सबको भूल गये हैं। उनकी आत्मचिन्ता का उल्लेख करना कठिन है। बड़े यत्नके साथ जो अभिलाषा पोषण

करते चले आये थे, आज वह आंखोंके सामने टुकड़े टुकड़े होकर छितरा गई हैं, अब उसे छोड़कर नये उपायसे कोई नयी इमारत निर्माण करनेकी शक्ति भी नहीं रही। भसकी पड़ी हुई अभिलाषाको धर पकड़ कर थून्ही लगा बांध रखनेकी जितनी कोशिश होती वह सब बेकार जाती है। निराशाकी घोर अन्धेरी रात सामने होती। आगे पीछेकी बातोंको देख सुनकर क्रोध होता। इसके साथ सभीकी मुश्किल और जो थी वह था महेंद्र। सबकी दृष्टि महेंद्र पर थी। छात्र अध्यापक सभी उसकी ओर ही देखा करते थे। सभी यह विश्वास करते कि देश मुक्तिके काममें वह कभी पीछे नहीं रहेगा। मौका आते ही वह कूद पड़ेगा। वह क्या करता है, क्या करना चाहता है, यही सब लक्ष्य कर रहे थे। देशभक्तके नामसे इसने जितनी ख्याति पायी है उसकी कीमत बहुत ज्यादा है। उसके कीमतके मुकाबिलेमें मूल्य चुका देनेका सामर्थ्य नहीं है। अतएव जो मूल्य देशभक्त नामसे महेंद्रको मिला है उसे लौटा देना होगा। उसका परिणाम होगा— सभी उसकी खिल्ली उड़ायेंगे। यह खिल्ली छोटी मोटी भी तो नहीं। इसके कारण तो कालेजमें महेंद्र मुख भी नहीं दिखला पायेगा। यह चित्र महेंद्रकी आंखोंके सामने रङ्ग विरङ्गा होकर घूमा करता था। अगर आंदोलनमें भाग लेता है, तो उसे घरबार छोड़ना पड़ेगा। कारण पिता सरकारी नौकर, डिप्टीकलक्टर जो हैं। भिक्षुके समान उपार्जनहीन होकर यह जीवन कहां किस प्रकार बितायेगा, वह समझ भी नहीं पाता था। अनिश्चिततामें मनको दुर्दल करनेकी जो शक्ति है वैसी और किसीमें भी नहीं है।

स्वप्नमें भी किसी दबावके परिणाम स्वरूप भयभीत हो चित्कार करने की प्रबल अभिलाषा जिस प्रकार मुखसे नहीं निकलती, मुख बन्द रहता है, ऐसी हालतमें नर जितनी व्याकुलताका अनुभव करता है, महेन्द्रकी ठीक वही हालत थी। गभीर अन्धकाराच्छन्न अवस्थामें रहते हुए भी प्रतिभाका चित्र महेन्द्रके मानस पटपर अङ्कित हो बिजलीके समान गायब हो जाता। जरासे परिचयमें ही कितना प्रेम, अपरिचित होते हुए भी वह उँडेल गया है; आज उसके सामने ठीक वही दशा है जैसे बिजली बत्तीके बुझा देनेपर अन्धकार घनीभूत हो सबको ग्रास कर लेता है।

मनकी अस्थिरताने महेन्द्रको किसी एक किनारे तक नहीं पहुंचने दिया था, इसी समय उनके पिता एक रोज आ पहुंचे। एक जिला मजिस्ट्रेटने उनको एक खत लिखा था कि आपका लड़का सरकार विरोधी आंदोलनमें भाग लेने जा रहा है। आपका लड़का है इसलिये आपको सावधान करा दिया है। अन्यथा आपके ऊपर भी आपत्ति आ सकती है। और पुत्र तो विशेष रूपसे विपदमें है ही। आन्दोलनके आरम्भ होते ही पुलिस सभी प्रकार सन्धिरथलोंको खोजकर कौन कहां किस स्थानमें है अनुसन्धान कर रिपोर्ट दे चुकी है। महेन्द्र बाबूके नेतृत्वसे परिचालित वीर समाज एक विप्लवी अनुष्ठान है। इसके सभ्योंका नाम, जिसके अधिकांश सभ्य छात्र हैं उनके माता पिताका ठिकाना देकर मजिस्ट्रेटको लिखा गया है। वे छात्र हैं इसलिये दया करके प्रथम उनके अभिभावकोंको खबर दी गई है।

चिन्ही मिलते ही जनार्दन बाबू पुरीसे बिना खबर दिये हाजिर हो गये हैं । वे एक सरकारी कर्मचारी हैं, इसलिये सरकारी कार्यकलाप उनको मालूम है । सच हो या भूँठ एक बार पुलिसके रजिस्टरमें नाम चढ़ जानेसे फिर चाकरी मिलना नामुमकिन है । महेंद्रसे वे अनेक आशा किये बैठे हैं । अतएव चिन्ही पाते ही उनकी अस्थिरताकी सीमा नहीं रही । उन्होंने महेंद्र बाबूको देखते ही व्यग्रताके साथ कहा—यह क्या हो रहा है ? यहाँ पाठ पढ़नेके लिये आये हो या लफंगोंके साथ लफंगा बनने आये हो ? लो देखो—ऐसा कह जेबसे एक पत्र निकालकर महेंद्र बाबूकी ओर बढ़ा दिया । महेंद्र बाबू चिन्ही पढ़ते हैं । इधर जनार्दन बाबूका मुख भी काम करता है । मैं एक डिप्टी हूँ । तू एक डिप्टीका लड़का है । तेरे नाम ऐसी रिपोर्ट क्यों आई । एक सालके बाद तेरी नौकरी रखी है । इस सम्बन्धमें मैं चर्चा चला ही रहा था कि यह रिपोर्ट मिली । इससे तेरा जीवन मिट्टीमें मिल जायगा और मुझपर भी विपद आयेगी ।

उसी दिन जनार्दन बाबू महेंद्र बाबूको और पुलिसके इन्स्पेक्टरको साथ ले मैजिस्ट्रेटके पास गये । पुत्र निर्दोष है समझाया । पुत्रपर गुस्सा हो उनकी मुस्कान प्राप्त की थी सत्य, लेकिन वे इतने ही में शांत न हुए । कालेजसे नाम कटाकर महेंद्र बाबूको अपने साथ ले गये । उतनेसे ही महेंद्र बाबूका मन ऐसा टूटा कि फिर कभी नहीं जुड़ा ।

—बारह—

जिला मजिस्ट्रेट से जिस प्रकारका खत जनार्दन बाबू को मिला था उसी प्रकारका एक पत्र रामहरि बाबू को भी मिला था। लेकिन लड़के को तो नौकरी में भरती करने की उनकी इच्छा नहीं थी इसलिये वे विचलित नहीं हुए। किन्तु शादी करने में नकार उत्तर पाकर रामहरि बाबू के मन में यह शङ्का हो रही थी कि लड़का कहीं गृहत्यागी न बन जाय। घर में एक दो बार नाक दबाकर प्राणायाम करते देखा था। लेकिन उस समय इस काम को गम्भीर नहीं मानते थे। सोचा करते थे इस निराशा का एक प्रतिकार है विवाह करा देना। परन्तु विवाह के प्रति अनिच्छा देखकर मन में सोचा मर्ज क्या लाइलाज हो गया है। यही उपाय खोजा करते थे कि ऐसी हालत में क्या करना उचित है। पर मजिस्ट्रेट के पत्र ने उन्हें एक पथ दिखलाया। उन्होंने एक खत नवीन को लिखा। मजिस्ट्रेट के पत्र की चर्चा की। खत देकर एक आदमी को कटक भेजा और कहा नवीन को साथ लाना। पत्र में मैंने भी आने के लिये लिखा है। लेकिन चिढ़ी मिलने के प्रथम ही कालेज छोड़कर नवीन सत्याग्रह के रङ्ग में पूरा रङ्ग चुका था। सभा, जुलूस, विलायती कपड़ों की दुकान पर धरना आदि देने के काम में लाखों आदमी अपने आप आकर शामिल होने लगे थे। प्रोत्साहन और आवाहन की जरूरत ही नहीं पड़ी। यह खुद-व-खुद आरम्भ हो गया। जिस प्रकार छोटे छोटे नाले नदी में मिलकर बाढ़ ला देते हैं, उसी प्रकार

[अठावन]

यह सत्याग्रह आन्दोलन पूर्ण वेगसे चल पड़ा। युद्ध रूपी जल घटाकी शोभा सा उपलब्धि करना सहज नहीं। लोगोंके दिलोंमें एक नदी धाराके समान भावधारा बह चलती है। उस विप्लवसे केवल विप्लव की ही सृष्टि हुई है। उस समय वहां केवल विप्लवका ही चिन्ह नजर आता है, असंख्य लोगोंके व्यक्तिगत उद्यमका वहां नाम निशान न था। लेकिन लगता ऐसा था कि मानो प्रबल बन्धा प्रवाहमें असंख्य जनता असहाय बही चली जा रही है। नवीनने अभी इस बाढ़में प्रवेश किया ही था, दूर तक जा नहीं पाया था कि अभी अभी पिताका बुलावा आया। नवीन जरा विचलित हुआ। लेकिन उसे खुशी हुई कि चिठीमें जिज्ञा मजिस्ट्रेटकी चर्चा तो है, लेकिन विवाहका जिक्र नहीं है। उसने सोचा मेरी युक्तिका फल फला है। विवाह बन्द हो गया है। अब पिताजीको समझा सकूंगा। मजिस्ट्रेटकी चिठीका डर नहीं है। लेकिन उनको यह भी विश्वास था कि पिताजी आन्दोलनमें भाग लेनेकी अनुमति नहीं देंगे। बाल्य कालसे जिस प्रकार बढ़े हैं उससे यह सामर्थ्य नवीनमें न था कि प्रत्यक्ष या परोक्ष पिताके विरुद्ध कुछ भी कर सके। अगर पिताजीने आन्दोलनमें भाग लेनेकी अनुमति दे दी तो फिर सब भगड़ा ही मिट गया, अन्यथा मटियामेट। उनके सामने कुछ कहना उचित नहीं। सारा किस्सा यहीसे लिखकर दे देना ही उत्तम है। इस प्रकारके विचार मनमें आते ही, नवीनके मनमें एक प्रश्न उठा। अच्छा, जब इस आन्दोलनकी बाढ़में अपनेको छोड़ दिया है, पता नहीं कि कब कहां क्या है, किस कूलकिनारेमें जा लगे, किस जीव जंतुओंका खुराक बने, ऐसी दशामें एक बार माता पितासे मिल ही क्यों न लिया

जाय । लेकिन फिर दिमागमें बुद्धिने प्रश्न किया—अगर विदा लेते वहीं अटक गये तो ? इसी प्रकार हरौं गुनौ करते दो दिन बीत गये, कुछ भी निर्णय न कर सका । दूसरे दिन सबेरे इस निर्णयपर पहुंचा कि पिताके पास जानेकी जरूरत नहीं । सब बातें चिट्ठीमें ही लिख देगा । यों सोच नहा धोकर पिताको पत्र लिखने बैठा ही था कि रामहरि बाबू खुद ही आ उपस्थित । उनको पता लग गया था कि नवीन गांधीकी आंधीके भोंकेमें पड़ गया है । उसका फल होगा कि सरकार जमींदारी छीन लेगी और नवीनको जेलमें बन्द कर देगी । अभी तो यह विपद सीमाके अन्दर है । लेकिन पीछे कितनी विपद छिपी है किसे आलूम ? और कुछ भी बिना आगापीछा सोचे पुत्रको ले जानेके लिये आ पहुंचे । पिताको देखते ही नवीन घबड़ा गया । रामहरिने एक मिनट भी विलम्ब न कर कहा—चल, भटपट तैयार हो, रेलका समय और आधा घण्टा है । घोड़ा गाड़ी तैयार है । देरी मत करो । यदि कपड़े लत्ते बन्धे नहीं तो रहने दो, पीछे पिर कभी ले जाना । रामहरिकी यह ताड़ना सुन नवीन हतबुद्धि हो पड़ा था । अपनेको सम्भालकर और शरीरमें जितनी शक्ति थी सबको केन्द्रीभूत कर पिताके साथके आदमीसे बोला—अभी न जाकर रातकी गाड़ीसे चलनेमें क्या हानि है ?

यह सुनते ही रामहरि गरज कर बोले—नहीं अभी साथ चलना होगा, चलो गाड़ीमें बैठो । आगा-पीछा सोचनेका समय नहीं था । बाध्य हो नवीन पिताके पीछे पीछे चलकर घोड़ा गाड़ीमें जा बैठा । गांव आ पहुंचा ।

पानीसे निकालकर सूखी जमीनमें कैंक देनेसे मछली जिस प्रकार छुटपटाती है, नवीनकी ठीक वही हालत गांवमें थी। २३ दिन तक रामहरि कुछ भी नहीं बोले। लेकिन बादमें भोजन करते या जब देखते नवीन कुछ खुश है, कथन पर कान देगा—नाना प्रकारके उपदेश देते। हमारे पास क्या नहीं है, क्या मैं तुमको नौकरीके लिये पढ़ाता था—जितना पढ़ा उतना ही, अब तुमको अपने घर द्वार जमीन जायदादकी देखभाल करनी चाहिये। जो है उसे संभालो। अधिक बढ़ानेकी कोशिश करो। निकम्मे निठल्लु लौंडोंके पीछे पड़कर हुआ हुआ हुक चिल्लाना और कहना देशसे अंग्रेजी शासनको लोप करेंगे, इससे क्या अंग्रेजी राज उठ जायेगा। ऐसी बातें किसी जमींदारके बालकके लिये अशोभनीय है। जमींदारी तो अंग्रेजी राजके कारण ही टिकी है। अगर वह छीन ले तो फिर कहो कहाँ जायेंगे, कहीं कुली मजदूरी करनी पड़ेगी। बातोंके सिलसिलेमें जब रामहरि अपने बालकके सामने ये सारी बातें कहते तो समझते इन बातोंसे बालकको समझाना कुछ भी बाकी नहीं है। लेकिन नवीन यह सुनकर दीर्घ निश्वास छोड़ता, इधर उधर देखता, सोचता—क्या जीवन इसी जमींदारीके लिये निर्मित हुआ है ! लेकिन उत्तरमें पितासे कुछ कहनेका अभ्यास न था और साहस भी न था। बालक बालपनसे जितने दबावके सहारे बढ़ता है उससे उसका साहस भी उतना ही नष्ट हो जाता है। फलस्वरूप न तो पिताका प्रभाव पड़ता है, न माताका और न गुरुका प्रभाव पड़ता। इन सबके मिश्रित प्रभावके नीचे दबकर हृदय और मस्तिष्क कितना निस्पेषित हो जाता है उसका ठिकाना ही नहीं।

—तेरह—

घरगृहस्तीक्री परिचालना करनेमें जो अनुभूति रामहरिने उपार्जन की थी, जो कौशल आज तक सीखा था वह सब नवीनके पीछे खर्च कर दिया। बेटा बैराग छोड़कर घरगृहस्ती सम्भाले, ज्यादासे ज्यादा सांसारिक विषय बढ़ाये, और खुद रामहरि नाती, पन्नातियोंके कोलाहलके बीच खड़े हो आनन्दमय जीवन यापन करें, यही सुख स्वप्न नवीनको वास्तव जगतकी ओर खींचनेका उद्यम करता। वे रोज सवेरे उठते, नहा धोकर पूजापाठ करते, मन्दिर जाते, ठाकुरसे प्रार्थना करते 'प्रभु ! नवीनको सद्बुद्धि दो,' नवीन अनेक समय एकान्तमें गुमसुम बैठा रहता। किसी काममें मन नहीं देता और न पिताकी बातोंका सम्मान ही करता। इससे रामहरि समझते ठाकुरने मेरी प्रार्थना सुन ली है। प्रथम तो रामहरिको शक था कि शिक्षित पुत्र उसकी बात टाल जायेगा। जिस समय कटक नवीनको लाने गये थे उनको डर था—कही नवीन उसकी बात अमान तो नहीं करेगा ? अब वह आशङ्का जाती रही। लेकिन अब चिन्ता है नवीनके मनमें किस प्रकार सांसारिक विषय जमाया जाय। उसके लिये केवल एक उपाय है नवीनकी शादी कर देना। वह भी तो ठीक है। रुपयोंका जुगाड़ न कर पानेके कारण सनातनने खबर दी थी कि विवाहकी तारीख आगे बढ़ा दी जाय। अपने नहीं बल्कि कन्यापक्षकी कमीके कारण

समूहिको कुछ भी आपत्ति नहीं हुई। केवल १५ दिन विवाहकी तिथि बढ़ी है। जमींदारके पुत्रकी शादी है, इसीलिये यह आयोजन है। यह लुकाछिया थोड़े ही रहेगा। यह नवीनसे भी छिपा न रहा। जल्दी उनकी शादी होगी लेकिन घरमें कोई भी इस सम्बन्धमें नवीनसे पूछनेकी जरूरत नहीं समझता। विवाहकी तारीख जितनी निकट आती जाती है, उतनाही नवीनके मनका विषाद बढ़ता जाता है। इतना समझकर पिताको पत्र लिखा था लेकिन उसका फल कुछ भी न हुआ। उलटा ताड़नाके साथ कटकसे लाया गया है। अतएव नवीनका मन और दुर्बल हो गया है। अब पिताके सामने किसी बातके लिये “न” कहनेका साहस नहीं होता। वह विवाहके इतना विरोधी था कि जिसके साथ विवाह होना है उसके सम्बन्धमें जानकारी पानेका कौतूहल तक मनमें नहीं आता था। आज तक शङ्कराचार्य और विवेकानन्दके मतका पोषण करते हुए विवाहके विरोधमें अपना मत मजबूत कर रखा था; लेकिन वह विरोध पिताके सामने प्रकाश किये बिना गति करता था। विचारी निरपराध नारी-जातिपर, खासकर उसपर, जिसके साथ विवाह सम्बन्ध स्थापित हो गया था।

जिस प्रकार दुर्बल आदमी किसी कार्यके प्रति निराश हो अपनी कार्य-सिद्धिके लिये देवताके घर धरना देता है, नवीनकी वही गति थी। वह सोचता—किसी प्रकार विवाह रुक जाता, कोई दैविक विपत्ति आ जाय तो कितना अच्छा होता, पिताकी बीमारीकी बात मनमें आ जानेपर उसे ठेलपेलकर सोचता—कन्याके घरवाले अगर बीमार पड़ जायं तो कितना

सुन्दर हो । कास वह कन्या ही मर जाती, नवीन इस प्रकारकी कल्पनामें गोते लगा ही रहा था कि कटकसे प्रकाशका एक खत मिला । उसमें खास कोई बात नहीं थी । केवल लिखा था---“तुम कैसे हो ? मैं बहुत कार्यव्यस्त हूं । सोचता हूं कास मेरे सौ हाथ होते, सौगुना शक्ति होती, जिससे मैं जनसाधारणकी विपद अपने हाथ उठा सकता ।” आदि आदि । चिढ़ीमें कोई खास बात नहीं थी, लेकिन उससे इतनी उत्तेजना तो जरूर मिली कि चिरपोषित अभिलाषा आज किस प्रकार निस्पोषित है । इससे नवीनका मन और खराब हो गया । सारा जीवन माटीमें मिल गया । भगवान ही रक्षा करे तो और बात है । लेकिन दुर्बल आदमीकी सहायता देव भी तो नहीं करता ।

इस प्रकार नकफुँदनी सी लगी---नवीन विवाहके द्वार तक आ पहुंचा । वर और बरात ले रामहरि कन्याघरकी ओर चले । खूब धूम-धामके साथ जुलूस और रोशनी आदिकी अच्छी व्यवस्था है । विभिन्न प्रकारके बाजे बुलाये गये थे । चारों ओर महाकोलाहल मचा है । ग्राम्यजीवन में यह एक उत्साहका साधन मिला है । सभी आनन्द मगन हैं । केवल एक वर ही ऐसा था जो जड़वत् मुख सुखाये बैठा था । वरयात्री घरसे निकले । कन्याके ग्राममें नवीन वरवेशमें सजकर जुलूसकी पालकीमें बैठा । जुलूस कन्याके घरके द्वारमें पहुंचा । इस समय नवीनके हृदयमें क्या बीतती थी, यह बात तो बड़े बड़े अति सूक्ष्मदर्शी मनस्तत्वविद् भी ठीक ठीक नहीं बतला सकते । विवाहके बाद भी अपने जीवनको कैसे देशसेवा कार्यमें लगा सकूंगा, यही चिन्ता नवीनके मनमें ऊमस रही थी । परन्तु सहज उपाय सामने नहीं दीख रहा था ।

[चौखण्ड]

कन्या घर अति गरीब है यह देख नवीनका मन और खराब हुआ। कारण गरीब घरकी लड़की होनेसे नाना प्रकारके विषय विलास वासना का उपभोग करनेकी इच्छा रखेगी। कन्याके पिता भी गाँवके एक माम-लतकार हैं, यह भी नवीनसे छिपा न रहा। कन्याका घर गरीब होनेके कारण पिता उसपर जो बड़प्पन दिखा रहे थे इससे नवीनका मन और भी मलिन हो गया। अगर विवाह ही करना था तो क्या किसी संभ्रान्त कुलकी कुलीन शिक्षिता कन्या न थी। यह सोच पिताके ऊपर असीम क्रोध आता। अन्तमें वर कन्या वेदीपर आये। ब्राह्मण पण्डितगण शुद्ध अशुद्ध संस्कृतके वेद मन्त्र उच्चारण करनेमें लगे हैं। उधर कन्याके घरमें ऋन्दनकी ध्वनि सुनाई पड़ती थी। इधर रामहरि उच्च स्वरमें सब सामान ठीक करनेकी आज्ञा दे रहे हैं। सनातन विषाद मुख प्रकाश करते पास ही एक ओर खड़े देखते हैं। नियमानुसार एकके बाद एक विवाह की सारी क्रिया खतम होती गयी। नवीन जड़वत् बैठा है। कोई भी चिन्ता क्षण भरके लिये भी उसके मनमें स्थान नहीं पा रही थी। नाना प्रकारकी चिन्तासे वह अस्थिर हो गया था। उधर प्रतिभाकी भी वही दशा थी। माता पिताके ऊपर, समाजके ऊपर क्रोध आता था किन्तु मुख खोलकर कुछ कह नहीं सकती थी, साहस जो न था। इस प्रकार असहायता प्रसूत मानसिक विभ्राट उसके मनको भी मथे डालता था। वह भी जड़ वस्तु बन गई थी। इस शादीमें आखिर हो क्या रहा है—न तो नवीन जानता न प्रतिभा ही। लेकिन जब ब्राह्मण देवताने वर और कन्या के दाहिने हाथोंको एकट्ठे करके जोड़ा और यथा “शिवणस्य मन्दोदरी” जोरसे मन्त्र उच्चारण किया तो नवीनको ऐसा अनुभव हुआ मानो शरीर

की नश नशमें एक बिजली शक्ति सी सञ्चार हो गया । ऐसी अनुभूति
 इसके प्रथम उसको कभी नहीं हुई थी । उसके हृदयके निचले सतहसे
 एक आवाज आई कि यह तुम्हारी आजीवन संगिनी है, इसे अपना लो ।
 लेकिन यह आवाज नवीनको दुर्बलताका चिन्ह मालूम दिया । यही है
 दुर्बलताका धीर प्रवेश । उसने सोचा—‘मेरा जीवन घर-गृहस्ती बनाने
 के लिये नहीं है ।’ ‘कितने उत्तम उत्तम काम उसके द्वारा हो सकते हैं ।’
 ऐसी उच्चाभिलाषाके आते ही उसके मनसे सारी जड़ता धो सी गई । उसने
 एक अपूर्व स्फूर्ति अनुभव की, जिसे आज तक कभी भी अनुभव नहीं
 किया था । इधर विवाहकी क्रिया सम्पन्न होती थी उधर अभिलाषाका
 स्वप्न देखनेमें लगा हुआ था । विचारी प्रतिभाको भी हस्त संयोगसे एक
 नई अनुभूतिके सञ्चारका अनुभव हो रहा था । अच्छा हो या बुरा सारा
 जीवन तो बन्ध ही गया । मनका सारा असन्तोष नेत्र पथसे आँसुओंके
 साथ बह चला । अब जिसका हाथ पकड़ा है उसीको सम्भालनेसे संभ-
 लेगा अन्यथा समुद्रमें डूबेगी । असहाय हालतमें उसका मन स्वामीकी
 ओर दुलका । दोनोंका मन अपनी अपनी चिन्तामें लगा था । जब
 ब्राह्मणोंमें सिन्दूर दानके दक्षिणाके लिये भगड़ा होने लगा तो दोनोंका
 मन उस ओर फिर और फिर अपने अपने स्थानको लौट आये ।

—चौदह—

हेमन्त कालीन शीतल पवनके चलनेसे शस्यपूर्ण खेतोंमें जिस प्रकार उत्ताल तरङ्ग मालायें खेलती सी जान पड़ती हैं ठीक उसी प्रकार या उससे भी अधिक नव-विवाहित दम्पतिके हृदयमें नई-नई उमंग मालायें, नयी कल्पनाएँ और आनन्दकी लहरें खेलनी चाहिए थीं। और वृद्धावस्था होते हुए भी, नूतन जीवनकी नूतन उन्मादनाके साथ, नये नये साजबाजके साथ सब आते और उनको अभिवादन ज्ञापन करते। यह भी हो सकता है कि अपनी वाङ्मयको देखकर नवयुवक नवयुवतीके प्रति ईर्ष्या करते। किन्तु ऐसा लगता है मानो सारा जगत हमारे नव-विवाहित युवक-युवती को देख उपहास करते हों, सभी असफलतापर घोरघणा कर रहे हों। स्त्रीको खुद ही नहीं मालूम था कि उसे क्यों अच्छा नहीं लग रहा है। अगर मा स्नेहसे कुछ कहती तो उसे ऐसा लगता मानो उसका तिरस्कार हो रहा हो। अगर पिता प्रेमसे कुछ कहते तो उसके शरीरमें आग सी लग जाती। पत्नीका स्वर तो ऐसा मालूम होता मानों बिच्छूने डङ्क मार दिया हो, बैठना, उठना, सोना और जागना सब उसे नीरस लगता था। संपेरा जिस प्रकार साँपको पकड़कर मोड़ मरोड़कर अपनी पेयारीमें भरकर बन्द कर देता है और साँप भीतर छुटपटाता रहता है, वही हालत नवीन की थी, लेकिन भेद केवल इतना ही है कि वे खुद पेयारीको निर्माण करनेवाले हैं और संपेरा भी खुद बने हैं। उधर प्रतिभा अपनेको एक

अद्भुत अवस्थामें बन्धी पाती है। गरीब घरकी लालित-पालित और मा की ताड़नाको सहकर बड़ी कन्याका दिल सूखा सा था। उसमें फिर महेंद्र बाबूके द्वारा भेजी किताबोंसे आनन्दका एक बूँद ही सही, समझ, शांति लाभ करती थी। उसीकी प्रतिक्रियाके फल-स्वरूप प्रतिभा महेंद्र बाबूकी ओर आकर्षित हो गई थी। परन्तु अब वह यहां गरीब घरकी लड़की नहीं है, वह यहां है बड़े घरकी पुत्र वधू और इस घरके एकलौते पुत्रकी पत्नी। माके रुद्ध व्यवहारके स्थानपर है यहाँ सासका प्रेम कोमल व्यवहार। प्रतिभाने कभी सोचा न था कि सासका व्यवहार मासे इतना अधिक कोमल होगा। उसकी धारणा थी कि सासका घर एक श्रद्धाचार-पूर्ण काल-कोठरी होगी; लेकिन वह यहां ठीक उलट देखती है।

दो चार दिन ससुरालमें बीतनेके बाद रामहरि की पत्नी श्रीमती जान्हवी देवीने एक रोज अपनी पतोहूको बुलाकर कहा—देखो बहू ! मेरे और कोई नहीं, नवीन ही मेरा सब कुछ है। तू मेरी बेटी, मेरे घरकी लक्ष्मी होकर आई है। तेरी जो इच्छा हो, जो जरूरत हो, मुझसे कहना, गरीब घरकी बेटी अपनेको समझकर मन मसोस कर मत रह जाना। मैं भी एक दिन तेरे समान ही गरीब घरकी लड़की थी। मेरी सास चुड़ैल मुझे ऐसा हैरान करती थी कि कभी कभी सोचती जहर खा लूँ ! मैं जानती हूँ; बड़े आदमियोंके घर गरीब घरकी लड़की आनेपर उसे हीन माना जाता है, लेकिन तू ऐसा मत सोचना, कारण तेरी सास भी तो एक गरीब घरकी लड़की है। मेरा नवीन कटकमें पढ़ता था। उसे संसारका ज्ञान बिलकुल नहीं है। और फिर उसे जाननेकी जरूरत ही क्या थी। अब

तू इस संसारको चलायेगी, यह घर तेरा है। वह कुछ भी करे, तू अगर ठीकसे पतवार पकड़े रहेगी तो नौका ठीक रास्ते चलेगी। मेरी उम्र हो गई है, अब यह संसार तेरा है।

विवाहित जीवनमें व्यवधानरहित साससे आश्वासना पाना हिन्दू नारीके सौभाग्यकी बात, कम देखनेमें आया करती है। प्रतिभाने अपनेको अति भाग्यवान समझा। विवाह, समाज और पारिवारिक अवस्थाके प्रति उसके मनमें जो विद्वेष भाव पैदा हो गया था, वह आगमें पानी पड़नेके समान गायब हो गया। वह सोचा करती थी सास दिन रात काम कराकर उसे मार डालेगी; किन्तु यहां उलटा है। जान्हवी देवी उसे बिलकुल काम करने ही नहीं देतीं। खुद करतीं, लेकिन करनेके लिये आदेश नहीं देतीं। फल स्वरूप प्रतिभा कुछ ही दिनमें इस प्रकार घरके साथ मिल गई कि कोई यह कल्पना ही नहीं कर सकता कि यह नव-विवाहित बहू है। इस ओर उसे जितनी शांति मिलती स्वामीके साथके व्यवहारके प्रति उतनी ही अशांति बढ़ रही थी। नवीन उसके साथ बातचीत नहीं करता था। उसको ख्याल होता कि मासिक पत्र-पत्रिका पढ़कर जो ज्ञान उसने उपार्जन किया था स्वामीके साथ और बढ़ता। महेंद्र बाबू जिस विषय पर लेख लिखा करते हैं उसे स्वामीके साथ आलोचना करनेकी इच्छा करती। उसके मनमें जो एक सम्माननीय नारी बननेका भाव अङ्कुरित हुआ था आज वह स्वामीके साथ फलता फूलता तो कितना उत्तम होता। किन्तु वह देखती है उलटा। आलोचना तो दूर रही जरा सी बात भी तो नहीं करते।

[उनहत्तर]

स्वामीके मुखसे कुछ सुननेकी लालसाए नव वधूकी लाजको धक्कियाकर एक दो बार, स्वामीको कुछ अस्पष्ट स्वरमें बोली थी, लेकिन उत्तरमें उसे मिला—गभीर चिंता जनित अस्थिरतामें गोते लगाते मौनावलम्बन । स्वामीके मनमें है क्या, उसे मालूम न था इसलिये उसको जाननेके लिये नाना कल्पना करती । वह सोचती—सास आदर करती है सत्य; लेकिन अपढ़ गरीब घरकी लड़की समझ कर ही तो वे मेरा आदर नहीं करते । औरतको यही भाव अभिमान पैदा करते हैं और स्वामीको अपनी मुट्ठीमें रखनेकी कोशिश करते हैं । अब धीरे धीरे प्रतिभा स्वामीके प्रति अभिमान करने लगी । प्रेमिकके मनको अभिमान नीचा करनेमें समर्थ होता है; लेकिन जहां प्रेम है ही नहीं वहां तो उसका उल्टा ही फल मिलता है । प्रतिभाका अभिमान जितना बढ़ता, नवीन उतना ही कठोर होता जाता । दिन दिन परस्पर एक दूसरेसे दूर हट रहे थे । कुछ रोज तो जान्हवीने लक्ष्य किया कि प्रथम प्रथम अपरिचित होनेके कारण ऐसा हुआ ही करता है । लेकिन जब उसने देखा कि नवीन सोने नहीं आता बात नहीं करता तो उसने सोचा कि गरीब घरकी कन्या समझकर वह प्रतिभाको पसन्द नहीं करता है । एक रोज खाकर नवीन बाहरके कमरेमें कुछ पढ़ता था । जान्हवी किवाड़के पास खड़ी होकर बोली—नवीन तू घर सोने क्यों नहीं आता ?

उस समय नवीन गांधीजीका—युवकोंका कर्तव्य नामक एक प्रबन्ध पढ़ रहा था माको बुलाते देख विरक्त हो बोला—ना मैं नहीं जाऊंगा । जान्हवी पास जाकर पीठपर स्नेहसे हाथ फेरते बोली, बात क्या है ?

[सत्तर]

मुझसे कहो न तब तो मैं समझूँ । नवीन उठ खड़ा हुआ और विरक्त होकर बोला—मा तू यहांसे जा, मुझे कुछ भी अच्छा नहीं लगता । मैं कहीं नहीं जाऊँगा । इसी घरमें पड़ा पड़ा सड़कर मरूँगा । यह कह नवीन घरके भीतर चहल-कदमी करने लगा । जान्हवी दुख और विस्मयके मारे नवीनकी ओर ताकती रह गई । उसने सोचा प्रतिभाने कुछ कहा है । अपने कमरेमें प्रतिभाको बुलाया । और प्रेमसे बोली—बहू, तूने नवीनको क्या कुछ कहा है ? बेटी मुझे पराया मत समझ, अपनी मा समझ सारी बातें साफ साफ कह । भला तुम दोनोंके सिवा मेरे और कौन है ? यह कहते कहते आँखोंसे दो बून्द आँसूके टपक पड़े । प्रतिभाके समझमें न आया कि क्या उत्तर दे । चुपचाप नतमस्तक खड़ी रही । जान्हवी प्रतिभाको अपनी गोदमें खींचकर पीठ सहलाते बोली—क्या तूने कुछ कहा है ? प्रतिभा सासकी गोदमें रोने लगी । बात क्या है ? जान्हवी देवीके समझमें कुछ भी न आया । इस घटनासे और भी व्यतिव्यस्त हो पड़ी । प्रतिभाके आँसू पोंछ बोली—बात क्या है ?

प्रतिभा गोदमें सोये बोली—मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम मा ? वे तो मुझसे बोलते ही नहीं ।

जान्हवी देवी कुछ क्षण चुप रहनेके बाद बोली—बेटी ! मेरी बात मानेगी ! कुछ भी उत्तर न पा जान्हवी देवीने समझ लिया—निश्चय मानेगी । जान्हवी ने कहा—बेटी, तू खुद जा बुला ला ।

प्रतिभाके समझमें न आया कि क्या करे, उसे लज्जा लग रही थी ।

[इकहत्तर]

उसके मान श्रभिमानमें भी व्याघात लगता था । इधर सासका अतुलनीय स्नेह वचन सुनकर वह खड़ी हो गई ।

जान्हवी देवीने कहा—इसमें मान अपमानकी बात नहीं बेटी, तुम तो मेरे एक नेरुआके दो फूल हो । जा बेटी बुलाकर ला ।

प्रतिभाने जाकर देखा—नवीन घरमें उत्तेजित सा चहल कदमी कर रहा है । वह जाकर द्वारपर खड़ी हो गई । कुछ समयके बाद पीछेसे जान्हवीने कहा—बुलाओ न !

प्रतिभा लज्जाके मारे गड़ सी गई । शिर नीचा किये अन्दर चली गई । जाते समय नवीनकी निगाह प्रतिभा पर पड़ी । वह झुल्लाकर बोला—यहां क्या मुझे खानेके लिये आई थी, जरा सी शान्तिमें था तो यहां भी आ पहुंची । स्त्री जाति मानवको ग्रास करने बैठी है । जा यहांसे—यह कह उत्तेजित हो उसे घरसे निकाल दिया । प्रतिभा लज्जा, अपमान और क्रोधके मारे विजलीके समान आकर अपने कमरेमें लेट रही । रोने लगी । जान्हवी देवी भी अपने विछौनेमें जा रोने लगी । यह लड़का ऐसा पागल सा भला क्यों होता है, समझमें नहीं आता ।

— पन्द्रह —

उस दिन नवीनको रातभर नींद नहीं आई। बार बार उसी एक बातकी चिन्ता करते करते शिर खराब सा हो गया। फिर धीर-स्थिर होकर सारी बातें एकके बाद एक सोचकर अपना कर्त्तव्य स्थिर किया। उसने निश्चय किया कि मैं अपने जीवनको साधारण घर गृहस्तीमें फसाऊँगा नहीं। अब रही बात यह कि जो विप्लव सामने है उसमें शामिल होऊँ कि नहीं। इस ओर मा की तरफसे बाधाकी आशङ्का उनको नहीं थी, पर बात सोचते सोचते प्रकाशकी बात याद आ गई। “जिस बातको निश्चय कर लोगे उसे माता पिताकी इच्छाके विरुद्ध भी कर तो सकोगे ?” इसको सोचनेके बाद ही पुरातन और नूतनके साथ संघर्ष शुरू होता है। यही है विप्लव। इसको छोड़ देनेसे विप्लव शब्दका अर्थ कुछ भी नहीं है। बच्चेके जन्मके समय जो संघर्ष होता है उससे वेदनाके कारण मा का जीवन मुश्किलमें पड़ जाता है। यहां तक कि मृत्यु हो जाती है। लेकिन बिना इसके पुत्रका जन्म भी असम्भव है। पुरातनके गर्भसे नूतनका जन्म होनेसे पुरातनपर बाधा तो अवश्य पड़ेगी; अतएव इन बाधाओंपर ध्यान देना उचित नहीं है। उसके बाद आई अपनी स्त्री, अच्छा हो या बुरा, वह तो मेरे साथ बन्ध ही गई। उसका दूसरा भविष्यत क्या है ? स्त्रीको साथ लेकर विप्लवमें शामिल हो सकेगा कि नहीं यही चिन्ताका विषय था। उसका खयाल था विवाहित जीवन और विप्लव ये दोनों एक दूसरे

[तिहत्तर]

के विरोधी हैं ।

प्रतिभाका सौन्दर्य और उसका सद् व्यवहार नवीनको अच्छा नहीं लगता। सो बात नहीं । प्रेमकी प्रथम सीढ़ीमें रहते हुए भी उसकी पूर्ण मधुरताकी कल्पना वह नहीं करता—ऐसी बात नहीं । लेकिन नवीन इसीको मानवकी दुर्बलता समझता है, जो आदमीको महत्वपूर्ण कामोंसे अलग रखता है । उसके बिना स्त्रीका चलना असम्भव तो नहीं लगता । मा अपनी बहूको लड़कोंसे भी बढ़कर स्नेह करती है । घरमें सब सुख है, कभी उपवास नहीं कर सकती । ऐसी दशामें अगर उसे छोड़कर भी चला जाय तो कुछ हानि नहीं है । मनमें दुख होगा, सो होनेकी बात है । यही तो नये पुरानेका संघर्ष है । इस प्रकार निश्चय करनेके बाद नवीनने यह पक्का कर लिया कि वह घरसे चला जायेगा । पिताके सामने जाना मुश्किल है, अपनी दुर्बलता ही प्रकाश पायेगी । अतएव रातको उठकर चला जाना चाहिए । इस जीवनको समुद्रमें फेंकनेके बाद यह चिन्ता क्यों; कि कहाँ लगेगा, जहाँ लगना होगा लग जायेगा ।

इस प्रकार ख्याल मनमें आते ही नवीनका मन पुलकित हो उठा । एक निश्चित सिद्धान्त तक पहुंचा जान अपने आप बहुत प्रसन्न हो सोचा ऐसा एक सिद्धान्त सामने आ जानेके बाद उसे कार्यरूपमें जल्दी परिणत करना उचित है । एक घड़ी रात बीती होगी कि अपने सिद्धान्तपर फिर एक बार गौरसे सोचा और उसी सिद्धान्तको ठीक समझ धोती, चादर, जो कुछ पास पैसा था लेकर घरसे निकल पड़ा ।

सबेर होते ही मालूम हुआ कि नवीन घर नहीं है । गांवमें भी नहीं ।

[चौहत्तर]

यह सुन रामहरि को अति दुख हुआ। उसकी समझमें ही न आता कि क्या करना चाहिये। चारों ओर आदमी भेजा। अपनी पत्नी और बहूके ऊपर गुस्सा हुए। रामहरिको यह विश्वास था कि नवीन पागल नहीं है, न आत्महत्या ही करेगा। वह गांधी गोष्ठीवालोंके साथ पागल है वहीं उन्हींके पास गया है। सांसारिक विषयी आदमीको ऐसी घटना जल्दी विचलित नहीं कर पाती। घटनापर नाना प्रकार युक्ति तर्कसे सोचते हैं, विचारते हैं। सम्भल जाते हैं। रामहरिने सोचा—गांधी गोष्ठीमें गया है, जाय। हानि क्या है। जमींदारीपर आंच आनेका डर आयेगा त्याग-पुत्र कर दूंगा नहीं तो घूमे कितना घूमता है। इस प्रकारका विषय ध्यानमें आना सांसारिक दृष्टिसे भी उचित नहीं है।

प्रतिभा अति लज्जित और अचम्भित हो गई। उसने सोचा लोग सोचेंगे उसीके कारण ऐसी विपद आई। निन्दाके साथ भय भी शामिल है। फूल तोड़नेके लिये अभी हाथ बढ़ाया ही था कि नेरूवेका कांटा हाथमें चुभ गया। लेकिन जान्हवी देवी हमेशा कहती—मेरा पुत्र कभी खराब काम नहीं करेगा। मन खराब था। कहीं चला गया है। घूम फिर कर फिर वापस आ जायगा। जब मेरी बहू मेरे पास है तो लड़का निश्चय आयेगा ही। कहीं कोई प्रतिभाको न दोष दे—इसलिये उसके दोषको हमेशा ढकनेमें ही व्याकुल है। वह सोचती थी—इस प्रकारकी बातें सामने रखनेसे लोग प्रतिभाकी निन्दा नहीं कर सकेंगे।

—सोलह—

नवीन घर छोड़कर स्टेशन आ पहुंचा । इसके दरम्यान उसे और कुछ भी मालूम नहीं । कांटा खुड्डीकी परवाह न थी । किस रास्तेसे चलनेसे उसे कोई नहीं देख पायेगा, उस पथसे और भी कोई जाता था कि नहीं, रास्ता अच्छा है कि बुरा मालूम नहीं । पिताकी बातें सोचकर उनपर गुस्ता होता है, प्रतिभाकी बात सोचकर उसपर क्रोध । खुदपर नाराजी, कि आज तक ऐसा सबल क्यों न बना । अन्यथा शादीका भ्रमेला उठता ही नहीं । इन सबके साथ एक उज्ज्वल भविष्य की चिन्ता मनको शीतल कर देती थी । रेलकी तृतीय श्रेणीमें चिन्ताकुल कुछ घण्टे बितानेके बाद कटक स्टेशन आ गया । पासमें जो रुपये थे उससे टिकट खरीदी गई है । इतना पैसा नहीं कि घोड़ा गाड़ी करके स्वराज्याश्रम जाय । अतएव पदयान को छोड़कर चलनेका और उपाय नहीं है । चलते चलते स्वराज्याश्रम तक आया । रास्तेमें देखा बाजार बन्द है । शहरमें निस्पन्द नीरवता है । जगह जगह दुकान खोलनेके लिये पुलिसवाले दुकानवालोंको धमका रहे थे । लेकिन उस धमकीका डर किसीको न था । एक जगह उसने देखा कि एक दुकानदार छिपकर पीछेसे सौदा बेच रहा है । पड़ोसी जान गये । उसे बहुत गाली मिली, लज्जा और बेइज्जती मिली । रास्तेमें एक बैल गाड़ी आ रही थी, मुहल्लेवाले पकड़ कर उस गाड़ीके बैल खोल दिये ।

ऐसी ऐसी बातें देखकर नवीनका मन फूल उठता था। उसने सोचा १८५७ के गदरके बाद ही १९२१ का यह स्वाधीनता आन्दोलन दूसरा स्थान रखता है। लेकिन उस समय राजा महाराजा और फौजने विद्रोह किया था, इस समय सारी जनता विद्रोह कर रही है। उस समय आखिरी मुक्तिके लिये भारत शत्रुके रक्तसे अस्त्र रंजित किया था लेकिन इस बार बिना शस्त्रके अहिंसात्मक उपायसे भारत गुलामीसे मुक्त होनेके लिये अहिंसा युद्ध कर रहा है। उसने सोचा कि सिपाही विद्रोहके बाद कैसे लोगोंको निरस्त्र करके पंगु बना दिया गया है। यहां तक कि स्वाधीनताकी आशा तक लोप पा गई है। शिक्षित आदमी सोचते हैं कि ब्रिटिशके आधीन रहकर उसके अनुग्रहका भिखारी बना रहना ही भारतके भालमें विधिने लिख दिया है। उसी भारतके मनमें स्वाधीनताकी आशा जागी है केवल इतना ही नहीं बल्कि उसके पीछे त्याग करनेके लिये भारतवासी दौड़ लगा रहे हैं। यह इतिहासमें एक नया अध्याय खुला है। उस नये अध्यायको जिन सज्जनोंने खोला है उनमें एक मैं भी हूं, यह सोचकर उसका मन खुशीके मारे नाच उठता था। नवीनके मनके उल्लासने घरकी सारी बातें भुला दिया था। माता पिता स्त्रीकी याद उसके मनमें न आती थी। वह सोचता था कि किस प्रकार इस विप्लवमें अपनी सारी शक्ति दान कर सकेगा। कभी कभी घर और समाज की बात याद आया करती। महेन्द्रके आचरणसे नवीनके मनमें विरक्ति आ गई थी। वे सोचते थे इस विप्लवके समय न जाने कौन कहां भाग खड़ा होगा। लेकिन वह केवल अकेले ही खड़ा रहेगा यह आश्वासन उसे आनन्द दिया करता था। स्वराज्याश्रम कहां है उसे मालूम

न था । पिताके साथ जब वह घर गया तो सुना था कि स्वराज्याश्रम सब जगह है। परन्तु स्वराज्याश्रम कहाँ है ? उसका परिचालक कौन है ? उसे कुछ भी पता नहीं था । किन्तु उस समय तो एक बालकसे भी पूछने पर स्वराज्याश्रमका रास्ता मालूम हो सकता था । अतएव नवीनको स्वराज्याश्रममें जानेके लिये कोई असुविधा नहीं हुई ।

स्वराज्याश्रम जानेपर मालूम हुआ कि वहाँका परिचालक प्रकाश है । यह सुनकर उसके मनमें और अधिक उत्साह आया । आश्रममें प्रायः डेढ़ सौ आदमी थे । सभी काँव भाँव कर रहे थे । पाली पड़नेपर दलके दल शराब, गांजा आदि आदि मादक द्रव्यकी दुकानपर धरना देने जाते थे । बाकी जो रहते—कोई रसोई करते तो कोई उच्च स्वरसे जातीय संगीत गाते थे । दिनके दो बज गये, खाने पीनेका कोई ठिकाना नहीं । बिना खाये पिये भी स्वयंसेवक वृन्द दुकानोंपर धरना देने जाते हैं । आश्रममें पहुँचनेपर आश्रमके उत्तेजनामय वायुमण्डलको समझना नवीनके लिये बाकी न रहा । नया आदमी था, फिर भी कोई नवानको दूसरा नहीं समझता और न नवीनने ही अपनेको अपरिचित जानकर असुविधा भोगा । उस समय तो वह अपना भाई, देशको मुक्ति पथपर चलानेके संग्रामका साथी था । एक दूसरोंके नाम तक जाननेकी जरूरत नहीं समझते । कोई किसीका न तो घर पूछता न जाति । उक्त विषयोंको जानना अनावश्यक है । अतएव नवीनके रहने या जानेपर भी किसीकी निगाहें तक नहीं गयीं ।

नवीनने देखा कि उनके छात्रसमाजका एक आदमी भी नहीं है । जा

[अठहत्तर]

२-४ कालेजके छात्र हैं भी उनको वह जानता ही नहीं। ८-१० स्कूलके छात्र हैं। बाकी सभी लिखने पढ़नेके मामलेमें विचारे निर्दोष हैं। लेकिन वहाँ शिक्षित और अशिक्षितका भेद नहीं था। जो अंग्रेजी पढ़े लिखे थे वे खुद सकोच अनुभव करते थे। कारण अंग्रेजी शिक्षा भारतमें दास भावका ही प्रदर्शन करती है। इसलिये सभी अंग्रेजी शिक्षाकी निन्दा करते हैं। जो जितनी अंग्रेजी पढ़ा लिखा है वह उतना ही निन्दनीय है। जो जितना कम पढ़ा लिखा है वह उतना ही अपनेको गौरवान्वित समझता है। नवीनको यह अच्छा नहीं लग रहा था। वह प्रकाश के साथ मुलाकात करनेके लिये अति उत्सुक है। लेकिन वे आश्रममें नहीं थे। सबेरे ही चले जाते हैं और रातको ६ बजे आते हैं। कहाँ खाते हैं क्या करते हैं किसीको भी पता न था।

—सत्रह—

उस दिन प्रकाश रातको १२ बजे लौटा । भोजन नहीं हुआ था इसलिये कोई सोया भी न था । नवीनको देखकर प्रकाशने दौड़कर छातीसे लगा लिया । प्रकाशने कहा—मेरी चिट्ठी तुमको मिली है तो ? धन्यवाद । मैं तो तुम्हारी ही अपेक्षा में था ।

नवीन मुस्कुराकर अभिवादन का उत्तर दिया । दोनों आश्रमके ऊपर चले गये । वहाँ प्रकाश रुक करता, दूसरा कोई वहाँ नहीं जाता । एक चटाई बिछाकर दोनों वहाँ पर बैठ गये । प्रकाशने कहा—मैं तुमको कालेजमें पढ़ते समयसे जानता हूँ । तुम्हारी गतिविधिकां भली भाँति लक्ष्य भी करता था, तुम शायद न भी जानते हो । तुमसे मुझे जो आशा थी सफल हुई । मैं तुम्हारा रास्ता देखता था—यह मैंने शिक्षाचारके नाते नहीं कहा, तुमसे मेरा काम है । अगर तुम न होते तो शायद मेरा काम नहीं हो पाता ।

यह सुन नवीनने अति आनन्द अनुभव किया । इतना बड़ा विप्लव उसमें मैं शामिल नहीं होता तो काम रह जाता—यह कम गौरवकी बात नहीं ।

[अस्सी]

नवीन जितना आनन्द अनुभव करता था उतना ही दायित्व भी समझता था। वह यह जाननेके लिये उत्सुक था कि उसे क्या काम दिया जाएगा। कुछ काल चुरा रहनेके बाद प्रकाशने पूछा—अच्छा-नवीन ! इस आन्दोलनमें शामिल होनेमें तुमको क्या क्या बाधाएँ मिली हैं ?

नवीन मुस्कराकर शिर खजुआता बोला—बाधायेँ कुछ भी नहीं। मैंने तो प्रथम से ही निश्चय कर लिया था। प्रकाश और समीप जाकर बोले— नहीं, मुझसे छिपाओ मत। मुझसे साफ साफ सब कहो। मैं तुम्हें भलिभाँति जानता हूँ। मैं सोचता हूँ हम और तुम दोनोंको एक हो ऐसा वातावरण पैदा करना चाहिये। मनकी सारी द्विविधाओंको ठेलकर नवीनने कहा—पिताकी इस कामके प्रति बिल्कुल राय नहीं थी। मैं तो छिपकर चला आया हूँ।

प्रकाश—अगर वे तुमको फिर लेनेके लिये आयेँ ?

नवीन—नहीं, वे अब नहीं आयेँगे।

प्रकाश—मन लो आ जायेँ।

नवीन—जरा सोचकर फिरसे बोला—मैं कहूँगा- मैं नहीं जाऊँगा।

प्रकाश—तुम अविवाहित हो तो ?

नवीन इस प्रश्नसे विचलित हो गया। उसके मनमें एक प्रकारका विरक्ति-भाव आ गया। क्या उत्तर दे कुछ सोच न सका। प्रकाशने फिर पूछा—

[एम्पासी]

नवीन व्यस्त हो गया। धीरेसे बोला- मैं विवाहित हूँ। लेकिन उस विवाहसे मैं सहमत नहीं हूँ। मेरा जबरदस्ती विवाह करा दिया गया है।
उत्तर और साथ ही साथ कैफियत।

प्रकाश जरा चुप होकर बोला—तुम्हारी स्त्रीका इसके प्रति क्या विचार है ?

क्या उत्तर दे नवीनकी समझमें कुछ न आया। इस सम्बन्धमें स्त्रीके साथ कुछ भी बात नहीं हुई; अतएव बातकी गतिको बदल कहने लगा—
“मैं विवाहको विफलता विरोधी समझता हूँ; इसलिये विवाहके पक्षमें मैं बिलकुल नहीं था। अब भी मैं अपनेको विवाहित नहीं समझता।”

गम्भीर हो प्रकाशने कहा—“तब तुम्हारी स्त्रीकी स्थिति क्या होगी ?”
नवीनने हठात् उत्तर दिया, “इसके लिये मैं अपनेका अपराधी नहीं समझता।”

प्रकाशने धीरे धीरे कहा—“यह सच है; किन्तु यह तर्क स्थायी नहीं है।
चहां न कहीं तुम अटक जाओगे। और फिर तुम्हें पीछे घूम जाना पड़ेगा; शायद उस समय इस युक्तिके लिये अनुत्तर करना पड़े।”

यह सुन नवीनको ऐसा लगा मानों अन्तरसे कोई इस बातका समर्थन कर रहा है—यह अनुभव कर अपने इन भावोंको दबानेके उद्देश्यसे अनावश्यक व्यग्रता प्रकट करते हुए कहा—“नहीं, कभी नहीं। मैं हमेशा अपने जीवनका देश सेवामें ही लगाऊँगा।” प्रकाशने हँसते हुए इस विषय को टाल कर पूछा—“प्रच्छा, सनी आश्रमवातियों से

[बारी !

परिचय हो गया है !” अपनी व्यक्तिगत जीवनकी चर्चा सम्पन्न देख नवीनने शान्तिका अनुभव किया, उनके मनको दिवा जोष हो गई। आननों सरलताकी रेखा प्रस्फुटित हुई। उसने कहा—मैं तो आज ही आया हूँ। यों खास किसीसे परिचय नहीं हुआ है।”

आश्रमका थोड़ा सा परिचय कर प्रवाशने कहा—यहाँ शिक्षित एक भी नहीं है। आरम्भमें बहुत छात्र और शिक्षित आदमियोंने इसगे भाग लिया था; लेकिन अब प्रायः सब भाग खड़े हुए। इसका अर्थ यह नहीं कि असहयोग आन्दोलनों कुछ त्रुटि हुई—ऐसी कोई बात नहीं है। बात यह है कि सभी युगमें सभी देशों जब विप्लव हुआ है तो नगर्य और अशिक्षितोंके ही द्वारा। फरामी विप्लवके समय उसके जो नेता थे, उनका नाम सुना गया था विप्लवके समय। और वे समाजके ऊँची सतहके आदमी नहीं थे। नैपोलियन था कर्मका का एक अज्ञात-मुल-शील दरिद्र आदमी। लेकिन उसने पृथ्वीको चमका दिया था। यहाँ देखो श्रृं कृष्ण क्या थे ? उनके जन्मके समय माता पिताको जरा भी हँ ने तक की फुरसत नहीं मिली। निम्न श्रेणीके बीच उनका पालन पोषण हुआ। आगे चलकर त फिर ये औतार कहलाये। फिर अपने ही शिक्षित समझ अशिक्षितोंको अमानना नहीं करनी चाहिये। जो शिक्षित हैं उनसे श्रम नहीं होता; परन्तु समाजसे लाभ उठाते हैं। वे कभी विप्लवी नहीं बन सकते। जो शोषित हैं, अशिक्षित हैं वे अति-खराब हालतमें हैं। उन्हींके लिये विप्लवको आशंका है। विप्लव यमें उन्हींका आगे आना स्वाभाविक है। यह कहो कइो प्रकार का मुख

[तिरसी]

गम्भीर हो गया। ऐसा मालूम होने लगा मानों उनकी आँखोंसे एक प्रकारकी ज्योति निकलने लगे हो। नदीने देखा और ऐसा अनुभव किया—मानों उधर खींच रहा हो। थोड़ी देर दोनों चुप बैठे रहे। फिर प्रकाशने धीरे धीरे कहा—एकधर गुरु गोविन्द सिंहने कहा था—चिड़ियाके हाथ अगर मैं बाध न मरवा सका तो गुरु गोविन्दसिंह—गुरु गोविन्द सिंह ही नहीं। वास्तवमें ये अतिशय ही मुझे संग्राम चलायेंगे। उन्होंने द्वारा विजय हासिल होगी। वे ही इस विजय सुखके अधिकारी हैं। इतना कहकर प्रकाश उठ खड़े हुए, अन्यमनस्क रूपसे कहा—नदीन, रात अधिक हो गई है, जाओ; सो जाओ।

नदीन उठकर चला आया। ऊपरसे नीचे आनेपर एक आदमी उसे एक अनामोनेयमहा लोश, एक चट्टान और दो छोटे छोटे गमछे दे गया। नदीने निश्चित होकर उसकी ओर चला। पीछे उसे मालूम हुआ कि आश्रमों समझे रहा भिन्नता है। और इतनी आदमी सारी जरूरतें पूरी करनी पड़ेंगी। नदीने उनका ले लिया और त्याग तथा कमसे कमों काम चलानेके उद्देश्यसे अपनेको आनन्दित पाया। नदीनको उसमें एक प्रकारकी मधुरताका अनुभव हुआ था।

कष्टकों मझुरोंका प्रादुर्भाव अधिक है और मसहरीकी व्यवस्था तो आश्रममें है ही नहीं। पैसे भी नहीं; अतएव नदीन उस रोजकी रातों को नहीं सका। बिना मसहरी के सोना जीवनमें नदीनके लिये प्रथम था। दूरसे अभ्यस्त थे। उन लोगोंके विश्वास था अगर नाद बढ़िया आ जाय तो फिर मझुर काटेंगे ही नहीं। अतएव सभी प्रेम्हसे साँ गये। बाकी नदीन करवटें

बदलता कभी मुखमें चट, कभी पेट पीठमें पट करता मछरोंको थपड़,
चाँटोंसे भगाता । इस चट पटकी ध्वनिसे एक आध मछर मर भी जाते ।
लेकिन नवीन भी इस क्रियासे बहुत व्याकुल हो उठा था । उसने सोचा--
देशके कोटि वोट आदमी दिना मसहरीके सोते हैं, उन्हींके सेवक फिर
मसहरीकी चिन्ता करें यह उचित नहीं है । ऐसा ख्यालकर नवीन प्रकाश
के कथन पर पागुल करने लगा । “एक रोज भी अगर पंखे आक
जात्रोने तो तुम अनुत्ताप करोगे”,--ऐसा कहनेका अभिप्राय ? क्या वे
सोचते हैं कि नवीन स्त्रीके प्रेममें पड़कर विप्लवसे हट जायेगा ? यह कभी
नहीं हो सकता । प्रकाशको अपनी धारणा बदलनी होगी । इसी चिन्तामें
गोरे लगाते नवीनको नींद आ गई । फिर मछर काटे नहीं ।

— अठारह —

सुख स्वच्छन्द भोग विलारमय जीवनयापन करना ही लोग बड़ा गौरव और बड़प्पनका एकमात्र साधन समझते हैं। उनकी निगाहोंमें वही एक बड़ी चीज है। लेकिन निःस्वार्थ त्याग और फिर उसमें सन्निविष्ट दुःख-निर्वातनके उपभोगकी तुलना क्या कोई खता है? यह कोई क्या अनुभव करता है कि कितना मधुर और किना आत्मप्रसाद इसमें है। नवीन दुःखके राखादनमें ही अपनेको लीन कर चुका है।

आश्रमके अन्य स्वयंसेवकोंके साथ भोली लेकर भित्ता करनेके लिये नवीन को भी भेजा जाता है, सघेरे भीख और रातको शराबकी दुकानोंमें धरना देनेका काम भी इसे करना पड़ता था। भीखके लिये प्रथम जब कन्धेमें भोली डालकर निकलता तो रंकोच बोध होता था; लेकिन जब उसने सोचा कि दरिद्र देशके लिये आनन्दके साथ अर्थ दान करनेका सामर्थ्य नहीं है, आशा भी नहीं है, जो कुछ मिलेगा गरीबोंकी हाँड़ीसे ही मिलेगा, जिसमें कि गरीबोंका हृदय है, विप्लवके प्रति सहानुभूति है उस समय कन्धेमें भोली डालकर उन लोगोंके सामने जाना एक महत् कार्य समझा गया। उसमें नवीनने गर्व अनुभव किया। इसी प्रकार जब मदकी दुकानमें धरना देने गया तो मरकियोंकी बुरी-बुरी गाली सुनकर प्रथम उसके मनमें रोष पैदा हुआ था। लेकिन जब यह मनमें आया कि शराब खाने-

[छियासी]

बाल शायन तो सभी अपने ही भाई हैं। गाली सुनकर अगर उनमें सुधारा जा सका तो भाई कितना कल्याण-साधन होगा। तो फिर उनकी गालियोंमें एक प्रकारका आनन्द आने लगा। यहां तक की शराबकी दुकानोंके पास रहनेवाली विपथगामिनी बहिनोंने भी बुरी सी बुरी गालियां दीं, अपमान किया; लेकिन सब सह्य सहन कर गया। इस कार्यमें उसे जितना आनन्द और आत्मप्रसाद मिला वह जीवनमें कभी भी नहीं मिला था। बड़े ही उत्साहके साथ वह इस काममें लगा रहा। प्रकाश नवीनकी सारी गति विधिको लक्ष्य कर रहे थे। कुछ दिनोंके बाद प्रकाश नवीनको अपने पास ऊपरका कोठरीमें बुला ले गये। नवीन अपनेको काममें इतना लगा चुका था कि जरा भी फालतू काममें समय नहीं खोता था। यहां तक कि एक रोज प्रकाशको भी पार करवाया कि आज बिजायती माल आयेवाला है और रातोंरात उसे उठा लें; अतएव स्टेशनमें पहरा देना है।

प्रकाशने हँसकर कहा---हाँ चलेंगे जल्दी क्या है, जरा ठहरो।

अच्छा ! नवीन तुमको याद है, मैंने कहा था 'तुमसे जरूरी काम है, रास्ता देख रहा था।'

नवीन---हां याद है---हँसते हुए कहा।

प्रकाशने कहा---शायद तुमने समझा होगा कि तुमको उत्साह देनेके लिये मैंने ऐसा तुमसे कहा है। ऐसा नहीं वास्तवमें तुम्हारे साथ मेरे काम हैं। वह कम यह है कि आश्रमका भार अब तुम अपने कंधोंपर लो। यह कह टकटकी लगाकर नवीनकी ओर देखा।

[सच्चासी]

नवीन क्या कहे उसकी समझमें कुछ भी नहीं आया । प्रकाशने फिर कहा--मुझे चारों ओर घूमना पड़ेगा । जागरण लाना होगा । इस विप्लवमें जो कुछ बाहर देखा जाता है उससे मेरे हृदयको तसल्ली नहीं है । मैं अनेक आदमियोंकी तैयारी चाहता हूँ । जिस प्रकार बैटरी अपनी देहमें विद्युत जमा किए रखती है, वहाँसे फिर जो जिधर चाहता है ले जाता है मुझे ऐसे बैटरीकी जरूरत नहीं, पावर हाउसकी जरूरत है । यह जो बाहरी प्रकाश तुम देखते हो; आज है कल वह लोप भी हो सकता । जनता आज पागल हो उठी है फिर कल अत्याचारके प्रभावसे हो चाहे अपने उत्साहकी प्रतिक्रिया सरूप हो, उदासीन हो जायेगी । लेकिन अगर पावर हाउस ठीक रहेगा तो उससे विद्युत निकलेगी और जनताको उत्तेजित करेगी । मेरी इच्छा तुमको एक पावर हाउस बनानेकी है । मुझे विश्वास है कि तुम एक बड़ा पावर हाउस बन सकोगे । इसी प्रकार मुझे चारों ओर देखना होगा ।

नवीन टकटकी लगाये प्रकाशकी ओर देख रहा था । विप्लवके सम्बन्धमें प्रकाशकी जो कल्पना है उसे समझनेकी कोशिश कर रहा था । प्रकाशके मुखपर एक प्रकारकी असाधारण प्रतिभा भलक रही थी । यह नवीनको बांध सा रखे थी । मनमें सोचता अच्छा आदमी है । घर द्वार छोड़कर आशा अभिलाषा, मान-अपमान सब छोड़कर विप्लव पताकाको उड़ाता हुआ निरीह जनताके अन्दर एक अद्भुत जागरण ला रहा है ।

प्रकाशने गम्भीर हो फिर कहा--आजसे तुम्हें हो इस आश्रमके परिचालक । वल, बुद्धि और विवेक खर्च करके काममें लगे और दूसरोंको

भी लगाओ । जनताके भीतर ऐसे भाव पैदा करो कि अरथानाके विरुद्ध सभी उपायका अवलम्बन करे । लेकिन उपाय सभी अहिंसात्मक हों ।

यह कह एक कागजपर लिख दिया --‘कटक आश्रमका भार नवीनके ऊपर रहा । प्रकाश---।’ कागज नवीनकी ओर बढ़ा दिया ।

नवीन अपने शिरपर बड़े भारी बोभेका अनुभव घर प्रथम तो कुछ चौंका, लेकिन बादमें दम्भके साथ उस भारका बहन करनेके लिये तैयार हुआ ।

प्रकाशने कहा, नवीन पावर हाउस है । उसके लिये वे दुख अनुभव करते थे । उस आन्दोलननें उसीके ऊपर अधिक निर्भर करते थे ।

—जन्मोस—

पावर हाउसके कथनसे नवीन बेहद खुश हुआ था। अपने जीवनका सद्य एक ही शब्दों प्रकाशको पाते देख उसके आनन्दकी सीमा न थी। प्रकाशने जिस समय कहा कि तुम एक पावर हाउस बन सकते हो, तो इससे नवीनकी रग रगों एक धिजली सी दौड़ गई थी। अब आश्रमका भार लेकर सभीको उत्साहित करनेके लिये खूब परिश्रम करते हैं। सबों कामों लगाते हैं। नई नई प्रेरणा देनेके लिये खुद काम करते हैं दूसरी चिंता उनके शिरमें नहीं है। केवल यही कल्पना है कि वह भविष्यमें पावर हाउस बन सकेगा। उपस्थित कार्यक्रमके सम्बन्धमें वह सोचने लगा कि किस प्रकार वर्तमान प्रचलित शासनके साथ प्रत्यक्ष संघर्ष कर सकेगा। बहुत उपाय सोचनेके बाद शेषमें निम्न लिखित उपाय मनमें पक्के रहे। दो दिनोंके बाद डिप्टी निर्वाचनका काम होने जा रहा है। सब प्रार्थी जिला मजिस्ट्रेटके साथ मुलाकात करेंगे। प्रायः ४०-५० प्रार्थी उस दिन उपस्थित होंगे। वे लोग भीतर जाने न पायें इसलिये धरना दिया जायेगा। स्वयंसेवक रास्तेमें सो जायेंगे। प्रार्थियोंसे प्रार्थना करेंगे कि अगर उनको सरकारी नौकरीके लिये जाना है तो हमारे ऊपर पैर रखकर जायें। जिनके पास हृदय होगा वे नहीं जायेंगे। ऐसी हालतमें जो चुने भी जायेंगे लज्जित होंगे। हम हाकिम हैं ऐसा गर्व जाता रहेगा। इसके अलावे हाकिमीको लोग छिड़कार करेंगे। उसका फल होगा शासनमें

अवस्था । इस उपायके सम्बन्धमें वह जितना गहिराईके साथ सोचता है उतना ही उत्तम मालूम होता है । मजिस्ट्रेटके आश्रमके सामने जहाँ प्रार्थी अपेक्षा करके बैठे, स्वयंसेवक यहाँ रीयेंगे । पुलिस खींचाता करके स्वयंसेवकोंको पकड़ ले जायेगी । उनके स्थानपर फिर कौन धरना देने जायेगा---आदि सारी बातें एक कागजर नोट कर लिया । और जो दूसरा दन जायेगा वह कहीं बैठेगा ? उसे भी एक विराट रूपसे निश्चय कर लिया । इन सब बातोंकी जब आश्रममें आलोचना की गई तो लोग बहुत उत्साहित हुए । नवीनकी बुद्धि, सा.स और कार्की सभी प्रशंसा करने लगे । एक, दो तीन दस्तोंमें कोन कोन जायेगे यह भी निश्चय कर लिया गया । नवीन वहाँ खुद मौजूद रहेगा और आवश्यकता आ पड़नेपर खुद धरना देगा यह भी पक्का हो गया ।

निर्दिष्ट दिनमें निर्धारित कार्यक्रमके अनुसार वाम शुरू हो गया । मजिस्ट्रेट सा.स अपने कमरेमें बैठे हैं । प्रार्थियोंके लिये एक कमरेमें बैठने और अपेक्षा करनेकी बात थी । बाहर धरके देश द्वारमें स्वयंसेवक आकर सो गये ।

प्रार्थी विदेशी पोशाकमें अपनेको जितना सुसज्जित कर सके, करके आये थे । वे लोग बरामंके पास इधर उधर घूमते थे । रोवते थे किस प्रकार भीतर जादेंगे । मजिस्ट्रेट साहेब दूसरे द्वारसे अपने कमरेमें आ गये । थोड़ी देर बाद नामोंकी पुकार होगी---प्रार्थियोंका मन चञ्चल हो रहा है । स्वयंसेवक चित्कार करते हैं थोड़ेसे रुायोंके लिये न्वाकी करके देशको गुलामीकी जंजीर पहिरा रहे हैं । यह तमाशा देखनेके लिये धीरे धीरे

[इक्यान्वे]

आदमियोंकी संख्या बढ़ गई। तमाम कचहरीमें आदमी ही आदमी नजर आते। भीतरसे मजिस्ट्रेट साहेबका बुलावा आया। एक चपरासी घरके बाहर आकर स्वयंसेवकोंसे बोला—विनोद बाबू हैं ? उस समय प्रार्थियोंके मनकी चञ्चलता देखने लायक थी। अनेक स्वयंसेवकोंके ऊपर नाराज हो दांत पीस रहे थे। विनोद बहुत व्यस्त हो गया। चपरासीने कहा—जा कह दे साहेब, रास्ता बन्द है। जाये कैसे। भीतर गया और आदर मलिन मुखसे बोला साहेबका हुक्म है कि इन लोगोंके ऊपरसे चले आओ।

अपने देशवासियोंकी छातीपर चढ़कर जायें और विदेशी शासनको मजबूत करनेमें सहायक बने, यह भी सभी आदमी देखें। जो नौकरी करने जाते हैं उनके देश प्रेममें किसी प्रकारका सन्देह न रहे। यही गौरव मजिस्ट्रेटका उद्देश्य मालूम होता था।

जो भी हो—मजिस्ट्रेटका हुक्म सुनकर प्रार्थी आपसमें फुसफुलाने लगे। मालूम नहीं क्या आलोचना हुई। लेकिन उपस्थित जनता यह आलोचना और टिप्पणी करने लगी कि साहेब पोशाक-धारी देशधो रसातल पहुंचाने जा रहे हैं। विनोद बरामदेमें चढ़ा, सोना चलो चढ़कर निकल जायें, लेकिन क्या सोचकर वापस आ गया। विनोदने चपरासीसे कहा—साहेबको जाकर कह—इन लोगोंको यहांसे उठा ले जायें। चपरासी चुप रहा, लेकिन उसके मुखसे बता लगता था कि स्वयंसेवकोंके प्रति उसकी सहानुभूति है और प्रार्थियोंके प्रति घृणा। प्रार्थी इनके ऊपरसे जानबूझकर गुजरते हैं कि नहीं सोचते रहे। इतनेमें साहेबने कपटी बजाई। चप-

राणी अन्दर गया और आकर खबर दी—बिनोदका नाम खारिज ।
 अब महेन्द्र बाबूका नम्बर है । बिनोदका मुख काला पड़ गया मानों
 साजोझ बीमार हो । उसकी बहुत दिनोंकी अभिलाषा मट्टीमें मिल गई ।
 वह बहुत दुखी हुआ, सिरपर हाथ रख उठी बराममें बैठ गया । और
 इधर महेन्द्र बाबू धारे धारे बराममें आये । नवीनकी आँखें अनेक समय
 से महेन्द्र पर थी । वह एक समयका अन्तरङ्ग दोस्त जो था । उसने
 सोचा महेन्द्र को समझाऊँ, लेकिन रह गया । सोचा, महेन्द्र जैसे ही आगे
 बढ़ेगा उसके पैर पकड़कर सो जाऊँगा । नवीनकी धारणा थी कि मुझे
 देखो ही महेन्द्र निरस्त हो जायेगा, उसका मन बदल जायेगा और वह
 मेरे साथ आश्रमगजी होगा । जैसे ही महेन्द्र द्वारपर आया कि नवीन द्वारों
 से गया और बोला—महेन्द्र, आज तरु तुम विप्लव विप्लव चिन्ताकर
 हमें इधर ठेलकर अब अलग नहीं हो सको । नवीनके लाल और सतेज
 मुखको महेन्द्रने देखा । एक शिष्टि और धनी युवकका लाखों जनताके
 सामने धूनीमें पड़ा देख महेन्द्र प्रथम जरा विचलित हुआ । लेकिन फिर
 नवीनको देखो ही जाने क्या याद आई क्रोधसे तमतमा उठा । जरा सा
 पीछे हट गया, उसके मनमें न मानूँ मैं कौन पिछला बात जाग उठी ।
 रोषपूर्ण ध्वनिसे बोला—नवीन ! तुमने आविवाहित रहनेकी प्रतिज्ञा की
 थी न ! बखत !!

लेकिन नवीन चिन्ता रहा था—‘शकी माँग महेन्द्र लोट जाओ’ इस
 चिन्तारकी प्रतिध्वनियों जनता चिन्ताती—‘लोट जाओ ।’

नवीनके प्रति क्रोध और ईर्ष्या होनेके कारण महेन्द्रको शेष सिद्धान्त तक

[तिर्यग्]

पहुँचनेमें देर नहीं लगी । हुम निष्कारसे विशाल ब्रिटिश साम्राज्य हिल जायेगा यह ख्याल पागलपनके है । रही देश सेवा, भो जिस किसी अदवस्था में रहकर भी कां जा सकती है । प्रथम जरूरत है अपनी मानी हाजत सुधारनेको । इसके सुधार जानेसे अच्छी देशसेवा की जा सकती है और फिर क्षमता हाथों रहे तो लोगोंके अनेक उपकार किये जा सकते हैं । और फिर इन सबको अगर छाड़ भी दिया जाय तो भी नवीनने तो मेरे साथ अच्छा मलूक नहीं किया है । अत्यन्त कुटिल आदमी है । लोग निंदा वरते हैं, कहेंगे । इससे कुछ भी बनता दिगड़ता नहीं है । न मालूम कितने कुकुर भूँकते हैं; लेकिन हाथी अपना राह चला जाता है । उसपर अगर नजर दे तो वह पागल हो जायेगा ।

इस प्रकारके तर्क वितर्कके बाद महेन्द्रने पक्का निश्चय कर लिया कि वह नवीनको लांघकर चला जायगा । लांघते जा ही रहा था कि नवीनने महेन्द्रका पैर पकड़ लिया, चारों ओरसे तुलु निष्कार आ रही थी -- लौट आओ ! लौट आओ !! कहींकी कुछ न मुन मन्दर पैरक भड़का देकर अन्दर चला गया । जनता 'शद्राही', 'गुलाम' आदि नाना प्रकारकी विशेषण ध्वनिसे स्वागत करने लगी । मन्दर मजिस्ट्रेटके सामने जा दाखिल हुआ ।

कुछ ही देर बाद मदलचल पुलिस आर और स्वयंसेवकों हो पकड़ लिया । उपस्थित जनताको लालीके सहारे दूर तक खड़ा कर घेरा डाल दिया । सिवा चित्तारके स्वयंसेवक और जनता कुछ भी नहीं कर सकी ।

आदमें मालूम हुआ कि मन्दरके विशेष आग्रहपर मजिस्ट्रेटने ऐसा किया था ।

—बीस—

नवीनके ऊपर महेन्द्रका क्रोध क्यों है ? इसका उत्तर ठीक महेन्द्र खुद नहीं दे सकता । पिताके शासनसे कानेज छोड़ा और कुछ दिन साथ साथ रहा, सब डिप्टीके लिये प्रार्थी बना । मजिस्ट्रेटके साथ मिलकर बातें करनेका सलीका सीखा । कटकमें रहने हुए भी वह एक दो बार ग्राम भी गया था । वहाँ उसे पता लग गया था कि प्रतिभाका शादी नवीनके साथ हो गई है । यह बात शिक्षकने भी नहीं कही । वह जो पत्र पत्रिका भेजता था सब बेकार गया । शिक्षककी ५० रुपयेकी सहायता फजूल है । शिक्षकने उसे धोखा दिया है यह सोच उसपर नागज हुआ । लेकिन शिक्षकको इस नागजगीका कारण नहीं मालूम । कारण महेन्द्रका प्रतिभाके प्रति प्रेम है या नहीं, है तो कैसा है आदि विषय शिक्षककी कल्पनाके बाहरकी बात है ।

नवीनने विवाह किया है, और उस प्रतिभाके साथ जिसका कि महेन्द्रने नाम ही नहीं बदला - बल्कि उसके रूप गुणको स्मरण कर खुश होता था । जिसके लिये वह नाना बुद्धि-कौशलका उपयोग कर पाठशालाको व्यवहार करता था । और नवीनने उसे खबर तक भी नहीं दी । जितने कि आजीवन ब्रह्मचारी रहनेकी कसम खाई थी ।

महेन्द्र प्रतिभाको चाहता है, प्रेम करता है यह बात जब नवीनसे उसने कभी नहीं की तो नवीन ही कैसे करे यह बात महेन्द्रको याद भी नहीं आती ।

प्रेम गत र्पाका यह विशेषत्व है कि दूसरेके ऊपर क्रोधका कारण खुद नहीं खोज पाता । वह जिसको प्रेम करता था उसकी शादी दूसरेके साथ हो गई है, यह कारण और तर्क अभी देर तक टिक नहीं सकता । उसके लिये कौन जिम्मेदार है कोन नहीं—इन सब बातोंपर विचार करने की शक्ति र्पाके कारण महेन्द्रमें न थी । इनको नौकरी मिल जाती तो जीविका की चिन्ता मिट जाती और वे अपनी चिरोपिप्त समाज संस्कारकी परिकल्पना आसानी विवाह प्रथा प्रचलित करते विवाह करते । नौकरीके लिये प्रार्थना पत्र लिखते समय इस प्रकारके कितने सुख स्वप्न उसने देखा था । लेकिन वह सारी कल्पना आकाश कुसुमके समान विजीन हो गई । उसने सोचा — प्रतिभाके समान कन्या नीरस नवीन जैसे आदर्शवादी मिले — यही तो समाजका अत्याचार है, अविचार है । अगर प्रतिभा ने मेरे प्रबन्ध पढ़े होंगे तो निश्चय वह मेरी ओर आकर्षित हुई होगी । प्रबन्धमें मैंने कई सूचनाएँ दी थी । समाजकी स्थितिको मद्दे नजर रखकर देखनेसे यह बात सा है कि मेरे प्रति उसके आकर्षणसे बढ़कर उसके प्रति मेरा आकर्षण कीमती है । मैं उसे ओढ़ पाऊँ एक सम्माननीय नारी बना सकता । मैं अपना जीवनके साँचे उसके जीवनको सुन्दर ढङ्गसे गड़ सकता । लेकिन सारी कल्पना धूल में मिल गई । नवान कहता था विवाह नहीं करूँगा । बड़ी बड़ी बातें बनाता था । यही नहीं विवाह किया और फिर अपनी विरादरत्न ही । कितना दौंगी हूँ । कितना कुटिल हूँ ।

[छियानवे]

कालेजमें पढ़ते समय महेन्द्र छात्र-नेता था और नवीन था उसका एक अनु-
चर मात्र । महेन्द्र इस विप्लवमें शामिल नहीं हो सका और नवीन शामिल
हो गया । इसके लिये उसे इतना बड़ा अभिमान है । देशका उद्धार
कर लिया । ऐसी बातें महेन्द्र नवीनसे छोटी ही हैं, यह धारणा करा
रह थी; और ईर्ष्याका एक कारण यह भी तो है । जो भी हो पूर्व बन्धुत्वके
महेन्द्रके पास ईर्ष्याके सिवा कुछ भी नहीं है । उसकी छातीके ऊपर जूता
षहिरे निकल जानेके कारण छिपा प्रतिवाद हृदयमें उठता था लेकिन
सफलताके साथ उसे दबा भी देता था । मनुष्य ऐसा तर्कवादी है कि
हरेक कामके समर्थनके लिये उसे अनेक युक्तियोंका सहारा लेना पड़ता है ।

—इकीस—

उसदिन नवीन और अन्य जो स्वयंसेवक पकड़े गये थे, उनका विचार हो गया। नवीनको एकसाल सश्रम कारावास और अन्य स्वयंसेवकोंको २०-२० वेतकी सजा मिली। नवीन जब जेल हाजतमें पहुंचा तो अपनेको वीर और देशके लिये उसने कुछ किया है ऐसा अनुभव करने लगा। भहेन्द्रके हृदय में एक नैतिक धक्का उसने दिया है, ऐसा सोच उसे बहुत सन्तोष था। मुकदमेके विचारके समय हजारों दर्शक उसके तेज और उत्साह से प्रभावित हुए थे। जिस समय हाकिमने पूछा—‘तुम अपनेको दोषी समझते हो या निर्दोषी ? तब नवीनने गम्भीर हो उत्तरमें कहा—

अगर देशको गुलामीकी जंजीरसे छुड़ाना अपराध है तो मैं एक अपराधी हो सकता हूं। देशप्रेम अगर अपराध है तो अपराधी हूं सबसे अधिक। मैं इससे अपनेको बहुत भाग्यशाली समझता हूं। विचारक महोदय, आप मुझे कड़ी से कड़ी सजा देनेमें दया मत दिखलाइये। मुक्ति पाने पर अपनी सारी शक्ति लगाकर मैं वही करूंगा जो मैंने किया है। इस प्रकार निर्भीक भावेन नवीनका उत्तर सुनकर जितने दर्शक वहाँ मौजूद थे सभीके मनमें एक नया उत्साह और वीरत्व जागरित हो उठा था। उनके दिल दिमागमें नवीनकी वाणी झंकार कर रही थी। सबके हृदयमें पुलकायमान ध्वनि खेलने लगी और निकल पड़ी ‘महात्मा गांधीकी जय’, इस प्रकार चारों ओरसे आनन्दमय निनाद सुनकर नवीनका कलेजा फुल-

[अठानवे]

उठा। परिस्थितिको देख विचारक मनही मन लज्जित नहीं तो संकोच तो जरूर करते थे। उनका यह संकोच क्षमता ज्ञानके साथ संघर्ष करने लगा। इस संघर्षसे मनमें नाना प्रकारकी क्रिया-प्रक्रियाएँ आरम्भ हुईं। उपस्थित दर्शक जनताको कचहरीसे निकल जानेका हुक्म मिला। इस हुक्मके फल स्वरूप जनता उत्तेजित हुई। दूने उत्साहसे जोरसे उन्मादना युक्त 'महात्मा गांधीकी जय' निनाद कर चली गई। १५ मिनटके बाद विचारकने अपना फैसला दे दिया। विदेशी शासनके प्रति और उसके न्यायके प्रति नवीनकी तथा स्वयंसेवकोंकी आनच्छा होनेके कारण—न्याय ठीक हुआ है कि नहीं, यह देखने और विचारनेकी जग भी इच्छा न थी। अतः गवाही की जरूरत भी न थी। अन्यथा यह तो जरूर आपत्ति उठती कि सरकारी वकील जो अपने मुखसे कहता है वही सरकारी साक्षी भी कहते हैं। हाकिमने भी खुद ऐसी साखी देनेके लिये प्रोत्साहित किया था। अपनी राय लिखने समय पुलिसके साथ परामर्श कर लिया गया था। बात यों है कि वह न्याय बच्चोंके खेलके जैसा होता था। मध्ययुगमें यूरोपमें 'जोन-डि-आर्क' इत्यादिका जिस प्रकार विचार किया गया था उससे भारतके देश प्रेमिकाके प्रति अंग्रेजीशासनके न्यायादिकी तुलना आसानीसे की जा सकती है।

सजा पा नवीनको कटक जेल ले जाया गया। जेल फाटक के सामने खड़े हो नवीनने एकवार बाहरकी दुनियासे विदा लेनेके लिये चारो ओर गौरसे देखा। अपने बन्धुओंके साथका वियोग जिस प्रकार अखरता है, नवीनने मनमें उसी प्रकार अनुभव किया। सड़कमें कितने आते और

[निम्नानवे]

जाते हैं—घोड़ागाड़ी आदि । सामने एक साइकल मरम्मतकी दुकान है ।
 वहाँ एक आदमी साइकलमें पम्प देता है । एक छिन्न मलिन बसन भिखारी
 दुकानदारके सामने हाथ पसारकर अति दीनभावसे मांग रहा है ।
 दानमें अनेक तिरस्कार पा चुकने पर भी अपनी भाग्य-परीक्षासे वह हट
 नहीं रहा है । इसी समय प्रकाशके नायकत्वमें एक विराट जुलूस निकला है
 और उसी रास्ते गुजर रहा है, जिसमें नारियोंकी संख्या अधिक है ।
 “महात्मा की जय” के साथ “नवीनकी जय” भी जोड़ दी गई है ।
 वीर सैनिककी भाँति प्रकाश आगे आगे चल रहे हैं । उनकी आँखें
 अङ्गार सी बरस रही हैं । तमाम शरीरमें एक अद्भुत तेज भाषमान हो
 रहा है । उनके पदकी गतिमें विचित्र शौर्य है । यह दृश्य देख नवीन एक
 मिनट तक आपा सा खो चुका था । दूरसे ही इन सबसे विदाय लेनेमें
 नवीनका दिल करुणापूर्ण हो गया । एक सालके लिये सबसे अलग हो
 गये—दीर्घ निस्वाससे यही निकला । जेलके भीतर जाते समय फिर एक
 बार बाहरको देखा और पीछे जेल फाटकका ताला, खुलनेका शब्द
 सुना । जल्दी फाटक खुला मानों कोई असुर जीवन्त मानवोंको मुखमें
 डालकर निगल रहा हो । नवीनने ऐसा ही अनुभव किया । साथ साथ
 बाहरकी दुनियासे अलग हो गया ।

—बाईस—

जेलखानेमें यह नियम है कि कैदी जब नये नये आते हैं तब उन्हें कुछ दिन सबसे अलग रखा जाता है। इस नियमके अनुसार नवीन और उसके समान नये आये हुए और ४० कैदी अलग रखे गये। ये सभी एक साथ थे। शामके समय जब द्वारमें ताला पड़ गया तब नवीनकी चिन्ता कारा जीवनकी ओर ढली। एक आधी जाँघ तक का जाँघिया, कमर तक झुलता बे-बाँहका कुरता, सायद विलकुल सफेद हो जानेपर कैदीके जीवनमें कुछ प्रभाव पड़ेगा, इसलिये जेलके सभी कपड़ोंमें चार चार अंगूल छोड़कर काले सूतेकी पक्तियाँ बिनी हुई हैं। तिकोने काठकी एक तख्तीपर कैदीका नम्बर है, जो लोहेके तारसे बन्धकर पीठकी ओर लटक रही है। नवीन अपनेको नये वेशमें देखकर जरा शंकित हुआ। उसे थोड़ी देरके लिये अपने ऊपर ही दया आई, मनमें अवसाद आया। लेकिन यह सब एक क्षणके लिये। उसका अन्तःकरण फिर गर्ज उठा—

“यही तो है देश प्रेमका पुरस्कार, यही तो है तुम्हारी तपस्या, जिसके फल-स्वरूप देश गुलामीसे मुक्त होगा। भारतमाता सुखी होगी।” खानेके लिये, पानी पीनेके लिये तथा दैनन्दिन सारे कामके लिये लोहेके दो तसले दिये गये हैं; एक बड़ा और एक छोटा। साथमें एक चद्दर, एक गज लम्बा और एक हाथ चौड़ेका एक गमछा मिला है। बिछानेके लिये दो कम्बल हैं। एक उच्च स्थानपर लटकती हुई लालटेन है। यह तमाशा

देखकर नवीन और उसके साथी मौन हैं । कोई किसीके साथ बोलता नहीं है । इस नई दुनियामें आकर सभी मेड़पर रखी मछली जैसा अनुभव करते हैं । कुछ काल बाद दूसरे कैदी एक एक करके आ नवीनके पास घेरकर बैठ गये । उनके मनमें उत्कण्ठित प्रश्न है कि कबतक अंग्रेज जायेंगे और गांधी राजा होंगे और सभी कैदी जेलमुक्त होंगे । सभीने नवीनके मुखसे सुना स्वराज जरूर मिलेगा ! यह आनन्द मय समाचार सबको शांतिदायक मालूम दिया । सभीने सोचा—अपनी अपनी बातें इस स्वराज्य बाबूको मालूम करा रखनेसे मुक्तिमें सुविधा होगी । एक कैदी अवकारी विभागकी पुलिस कर्मचारियोंकी आँखोंमें किस प्रकार झूल झोंककर चार मास तक शराब बनाकर बेचता रहा । जब पकड़ने गये तो पुलिसवालोंको मारा । इसलिये उसे दो सालकी जेलयात्रा मिली है । एक और कैदी जाजपुरमें डाका डालकर पुलिसवालोंको दो सालतक चकमा देता रहा । बादमें कटकमें किस प्रकार पकड़ा गया । उसका वर्णन करने लगा । तृतीय कैदी गरीब आदमी है । उसके पिताके श्राद्धमें एक सौ रुपये खर्च करनेके लिये जाति के आदमियोंने जोर किया; लेकिन दावी आदमीको मंजूर नहीं हुई । फलस्वरूप एक रातको किसीने एक पोटली धान उसके घरमें रखकर पुलिसको खबर दे दी कि अमुक धान चुराकर ले गया है । पुलिसकी साखीमें किसीने उसके पक्षमें साखी नहीं दी । चोरी प्रमाणित हो गई । उसे छः मासकी जेल सजा मिली है ।

अपनी अपनी राम कहानी सब कैदी आ आकर सुनाते । नवीन सुनकर विस्मित हुआ और राय दी कि दो शराब बिक्री करनेवाले और एक

[एकसौ दो]

डकायत को छोड़ देनेसे बाकी सभीके सभी निर्दोष हैं और ग्रामवासी हैं । प्रथमके दोनों गर्व अनुभव करते थे कि हम पुलिससे लड़े हैं और इसलिये नवीनसे दावी करते थे कि हम भी सहानुभूतिके भागीदार हैं । नवीनको कचहरीके प्रति घृणा थी । अतएव उसे विश्वास था कि नाना तिगडमसे बिचारे निर्दोष गरीबोंको फँसाकर जेल भेजते समय विचारका नाटक करना ही एकमात्र पुलिस तथा कचहरीका काम है । अतएव नवीनने सबको समझाकर कहा—स्वराज्य हो जानेपर किसीको बिना दोषके सजा नहीं मिल सकती । और न ग्रामके लोगोंकी खुशफात, मामलातके जरिये झूठ बोलकर किसीको जेल ही भेज सकती । किन्तु गजेन्द्र नामक एक चोरीका असामी नवीनकी कोरी सान्त्वना से ही खुश होनेवाला नहीं था । पुलिस हमेशा उसके पीछे पड़ी रहती है और तीन बार उसे चोरीके मामलेमें फँसाकर जेलकी सजा दिलवाई है । फिर वह भी चाहता है मुक्त होना और नवीनके समान काम करके स्वराज्यके भागीदार होना । नवीनने उसकी पीठपर स्नेहके हाथ फेरे—पूछा, कितनी सजा मिली है ? रिहा कब होंगे ? आदि बातें पूछते उसकी ओर आकर्षित हुए । इस व्यवहारसे सभी ईर्ष्या करते । कहते वह एक दागी बड़ा चोर है, जरा मौका पाता है कि लेकर नौ दो ग्यारह होता है—आदि नाना प्रचलित कथा कहानी लोग कहते । धीरे धीरे एक दूसरे पर गाली गलौज शुरू हो गया । ऐसी हालत हो गई कि नवीनके लिये सुनना मुश्किल हो गया । कोई उसकी बातें अब नहीं सुनता । ऐसी आशङ्का हुई कि उसपर भी गालीके बौछार होनेवाली है । वह चुपचाप अपने कम्बल पर लेटे रहा । न जाने कब नींद आ गई ।

—तेईस—

निःशब्द रजनी—शरत ऋतुकी रातका शीतल शेष भाग—जिसमें सभी जगे हैं। वयःप्राप्त अंगड़ाई सी लेती निन्दिया की कोमल गोदमें सारा संसार मौन है। बाहर दुनियाकी खबर की, जेलकी ऊँची दीवारोंको फाँदकर आनेकी शक्ति नहीं है। जेलके बाहर दीवारके पीछे २-४ कुत्ते बीच-बीचमें पुक-पुक-भों-भों करते हैं। सभी नांदमें हैं। केवल चली परिपाटी के अनुसार नाना आहतोंके भवनद्वारपर सुनाई देता—एक, दो, तीन, चार, पाँच, छः, सात—हज़ूर सब ठीक है। जेलकी ऊँची ऊँची दीवार, लोहेके बड़े बड़े फाटक और मोटे मोटे ताले जड़े रहने पर भी भाग जानेका डर है। यह भय शून्य नहीं है—अगर कोई भाग गया तो ! इसलिये बन्दियोंमेंसे मुखियोंको नियुक्त किया गया है। वे रातको पालीसे अपने सहबन्दियोंकी देखरेख करेंगे। भीतर जगनेवाला रक्त-प्रहरी भीतर की सारी खबरें जेलखानेके अधिकारियोंको देते रहेंगे कि सब ठीक है। इसका अर्थ है कोई भागा नहीं, भागनेका उपाय तक भी नहीं किया है। प्रत्येक कमरेके सामने परेठ-सा करते खुट खुटकी आवाज पुलिसके जूतोंसे आ रही थी। बाकी सभी निद्रादेवीकी गोदमें किलोल कर रहे थे। कौन क्या स्वप्न देखता है, किसको मालूम है। लेकिन यह तो ठीक है कि लोहे भरोखेके सामने घुटनोंके बल नवीन बैठा बाहरकी बहार देख रहा था। बाहर बहुत दूर कारागारकी उच्च प्राचीर—उसके

बीचमें एक पीपलका पुराना पेड़ है। पीपलका पेड़ अपनी शाखा फैलाकर सुन्दर शुभ्र चान्दनीकी ज्योत्स्ना का उपभोग करता है। उसका पूर्ण प्रयत्न है—चान्दनीकी शोभाके उपभोगसे पड़ोसीको वंचित रखना। लेकिन उसकी सम्पूर्ण चेष्टा सफल नहीं हो पाती। वृक्षके बहुत फैलाने पर भी उसके फैलावकी उपेक्षाकर चाँदनी मानों मानवके उपभोगके लिये लुक-छिपकर सामने आ खड़ी हो जाती है। परन्तु कारागारमें उसके हुल्लके भोगता हूँ कितने ? उस रोज तो केवल नवीन ही एक मात्र रूपका ग्राहक था। उसके हाथोंमें कड़ी और पैरोंमें बेड़ियाँ हैं। उसका अपराध है कि जितना धान उसे कुटनेके लिये दिया गया था उसने नहीं कुटा। क्या इसलिये चान्दनी उसका उपहास करती है कि हाथ पैरके रहते वह पंगु है या खिड़कीके द्वारा आकर चाँदनी क्षिण प्रकाशसे अपना अभिवादन जता रही है ! शरीर पर अपना अधिकार जता रही है। नाना चिन्ताके कारण नवीनका मन करुण रस पूर्ण है। वह सोचता है—प्रकृति सुन्दर है। सारा जगत सुन्दर है, सभी अपने सौंदर्य दान करनेके लिये आतुर हैं; लेकिन मनुष्य उसका ग्राहक नहीं बन पाता। वह परस्पर एक दूसरेके प्रति अत्याचार करनेके लिये तैयार है। क्या न्याय दावी है ?—सातहजार मीलके दूरके आदमी इतने बड़े देशके जन समूहको अन्नके लिये मोहताज, वस्त्रके लिये कंगाल, कर उनके कंकालपर श्मसान के प्रेतके समान अपना शासन चलायेगे ? भला क्या अपराध है कि कारागारमें आज उसके हाथ-पांव बन्धे हैं ? दुनियामें बल ही क्या सबकुछ है ? तब तो प्रकृतिके इस विराट सौंदर्यका कुछ भी मूल्य नहीं। तो क्या इतना बड़ा आयोजन केवल व्यर्थता के लिये है ? इतनी बड़ी

कल्पना—नहीं नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, एक न एक दिन आदमी अपना भ्रम समझेगा और पछताते हुए अन्धकारसे ज्योत्स्नाकी शुभ्रताकी ओर गति करेगा ।

यह कल्पना चल रही थी कि नवीनका एक सहवन्दी बर्रा उठा—मारो उसे, मारो मारो । नवीन अचकचा कर उसकी ओर देखा कि वह करवट बदलकर फिर सो गया है । स्वप्नमें भी मार-मार-मार ही गूँजता है । क्या इनमें से कोई प्रेम या परिणयका स्वप्न नहीं देखते ! इस विचारके साथ साथ देखा कि जो ज्योत्स्ना शरीरको सहला रही थी अब उठकर खिड़कीके पास जा खड़ी है । नवीन उठा । बोला—केवल मैं ही तेरा आहूत था । अन्यथा तू तो सबके उपेक्षित थी । मैं ही केवल तेरी व्यर्थता दूर किये था, और तूने मेरा ही परित्याग किया ! इस छलना और प्रवञ्चनाके कारण तुझे सभी छोड़ते हैं । मैं ही ऐसा भोंदू था कि तेरा—“उपभोग कर, उपभोग कर” का क्रन्दन सुनकर बैठा था उनींद में ।

खिड़कीकी ओरसे देखा—पीपलके पेड़की ओटसे निकलकर चाँद अब दिखाई देने लगा है । वह चन्द्रमाको देखकर मन ही मन हँसा और ज्योत्स्नासे बोला—“माननी, मुझसे अभिमान करती है ? अच्छा, मैं अपना स्थान कभी नहीं छोड़ूँगा, देखता हूँ फिर आती है कि नहीं । कल तो तू जरूर आयेगी । तेरा पक्का इरादा मुझे मालूम है ; इसीलिये वो तेरा ऐसा अनादार है ।

[एकघोड़ः]

इसी समय पूर्वकी ओर घोड़ागाड़ीके चलनेका शब्द सुना गया । रेल स्टेशनसे गाड़ियां आ रही हैं । कितने आदमी अपने अपने काम में कटक आये होंगे । किसीका मुकदमा होगा, कोई सौदा करनेके लिये आया होगा । कोई शहर देखनेके लिये आया होगा, शायद कोई आश्रममें भी आता होगा । यह रेलगाड़ी रोज कितने आदमियों को ढोती है । नाना देशोंसे लाखों आते जाते हैं । दुनिया विजलीके समान चारो ओर दौड़ती है । मैं ही न हाथ पांव बन्धे यहाँ पड़ा हूँ !

इस चिन्तासे नवीन अधीर हो उठा । बाहर जानेकी ऐसी उत्कट उम्र इच्छा हुई कि कारागारको एक भयानक असहनीय यंत्रणा जैसे अनुभव किया । कितने दिनसे बन्ध पड़ा है । कब ये साल पूरा होगा ? हिसाब करके देखा तो अभी सिर्फ दो मास सतरह दिन ही हुए हैं । और नौ मास तेरह दिन बाकी हैं । तीन भागसे एक भाग भी तो नहीं गया । इस चिन्तासे नवीनका मन बहुत व्यथित हुआ । फिर मनको समझा कर कहा—अरे कलके समान ये नौ मास भी चले जायेंगे । उसके बाद वह वरी ! फिर जिधर इच्छा होगी उधर ही जायगा । जो मनमें आयेगा, वही करेगा, बाहर से इस कारागारकी ऊँची भीतको देखकर उपहास करेगा कि अरे तेरी भयङ्कर आकृति भी हृदय को हिला नहीं सकी ।

—चौबीस—

जिस दिनसे जान्हवी देवीने कहा—‘बहू, तू तो अपने मुहकेसे बहुत सी पुस्तकें लाई है मुझे भी पढ़कर सुना, मैं तो पढ़ना जानती नहीं, तेरे मुखसे कुछ धर्म चर्चा ही सुनूँ। उस दिनसे प्रतिभा पढ़नेकी ओर उत्साहित हुई। जब कभी उपन्यास और आधुनिक कविता पढ़कर प्रतिभा सुनाती तो जान्हवी मुख फेर लेती। कहती—अरे, यह तो झूठी बात है। झूठी बातें क्यों पढ़ती हो बहू मेरी। इसमें राधाकृष्ण, सीताहरण, सावित्री सत्यवानकी कथा कहाँ ? उसके बाद पुरान सुनकर जान्हवी देवी अपनेको अहोभाग्यशाली समझने लगी। सावित्रीकी कथाके बाद रामायणकी कथा शुरू हुई। रामायणमें राम-वनवास की कथा सुनकर जान्हवी देवीकी आँखोंसे पानी बह निकला। रामायणमें राम और कौशल्याकी बातचीतका प्रसंग जिस प्रकार ओढ़िआ रामायणमें वर्णित है कौशल्या के दुःखके समान ही जान्हवी देवीने नवीनके चलेजानेसे दुःख अनुभव किया। रामायणके कथा आरम्भ होते ही नवीनकी याद उसके जीगरको मरोड़ने लगती है। कब मेरा पुत्र वनवाससे लौटेगा ? कब मैं उसका भी मुख देखूंगी !

नवीन कहाँ, क्या करता है, इसकी गति विधि जाननेके लिये पहले जान्हवीदेवी रामहरि बाबूके पीछे पड़ी थी, लेकिन जब उन्होंने नाराज

होकर कहा—‘मैं नहीं जानता वह कहाँ गया है। जायगा कहाँ ? वहाँ कटकमें गान्धीवालोंके गोठ में होगा। जबतक वहाँ धक्का नहीं खायगा, बोटेगा ?

जान्हवी देवी तबसे नवीनकी बात रामहरिसे नहीं पूछती, किन्तु समाचार पत्रके जरिये सारी बातें जानी जा सकती हैं। यह सूचना प्रतिभाने सासको दी। कारण उसके गाँवके शिक्षकको समाचार पत्रसे देशकी सारी खबरे मिली करती थीं, यह उसे मालूम था। अन्तमें उसी गाँवके विद्यालयको खबर भेजकर खबरकागज मँगाया गया। सात दिनमें एक दिन वहाँ कागज जाता है। प्रतिभा पढ़ती और जान्हवी देवी सुनती थी। अनेक दिन तक जान्हवीदेवीको खबर सुननेमें मजा नहीं आता था। प्रतिभा समाचार पढ़ती और जान्हवी बैठे बैठे श्रौंघाती थी। एक रोज प्रतिभाके निगाहोंमें आया नवीनके कटकमें स्वराज्याश्रमका भार लिया है। इससे तमाम शहरमें एक नया उत्साह खेलने लगा है। इसमें नवीनका संचिप्त परिचय भी है—वह एक जमींदारका एकलौता लड़का है। बी० ए० पास करनेपर भी देशसेवामें व्रती होकर भिक्षात्रसे गुजारा करते हुए अपने जीवनको देशकी सेवामें ढाल दिया है। यह सम्बाद पढ़कर प्रतिभा सुना नहीं सकी। अनेक समय तक नीरव हो उसी सम्बादको बार बार पढ़ती है। प्रतिभा पढ़ती है तो काम चलता है समझ जान्हवी देवी श्रौंघाती है। लेकिन प्रतिभाको चुप देखकर बोली—पढ़ती क्यों नहीं ? यह सुन प्रतिभाने उस सम्बादकी ओर अंगुलीसे इशारा किया। अब जान्हवीको यह समझना बाकी न रहा, सोचा नवीनकी कुछ बात है।

[एकसौ नौ]

लेकिन वे खुद तो पढ़ नहीं पाती। बहूको पुत्रकी बातें पढ़नेके लिये कहे तो कैसे ? इस प्रकारकी उधेड़बुनमें कुछ समय बैठी रही, फिर बोली—पढ़ो, मैं तो पढ़ना नहीं जानती।

प्रतिभा नवीनका नाम छोड़कर सब पढ़ गई। जान्हवी देवी दीर्घ निश्वास फेंककर कुछकाल चुप बैठी रही। थोड़ी देर बाद आँखोंसे भरना सा भरने लगा। लड़का क्या खाता होगा, कहाँ रहता होगा, वह क्या हम सबोंको भूल गया है ? इत्यादि सोचकर वैकल सी बन गुणगान करने लगी। प्रतिभा अपनेको सासके सामने सम्भालनेके लिये बड़ी कोशिश की लेकिन उसकी भी तरैयाँ भर आईं। जब उसने देखा कि आँखोंमें पानी उमड़ आया, बाँध टूटनेवाला है, जल्दी उठकर अपने कमरेमें चली गई। और खूब प्रेमके साथ कुछ काल रोई। सोचा—मुझसे रुठकर क्या वे वैरागी बन गये ?

देशप्रेम और देशके लिये त्याग आदिका विषय प्रतिभाकी चिन्ताके बाहर की बात थी। आनन्दसे रहना, संसारमें कीर्त्ति अर्जन करना तो प्रतिभाके समझमें आता था। यह सब महेंद्रबाबूके लेखोंको पढ़कर जानती थी। वही भ्रकार अभी तक है। लेकिन जब उसे सासका अनूठा प्रेम मिला तो वह अपने जीवनको उसके अनुसार बना लेनेके लिये तैयार हो गई। इसमें उसे आनन्द था। लेकिन धीरे धीरे मालूम होने लगा—मानों मरुभूमिसे निकलकर शीतल स्रोतस्विनी के तटपर आ गई है। परन्तु नवीन का व्यवहार उसके दिलमें ठेस सा लगा दिया था। उसकी समझमें ही न आता था कि कोन सी प्रेरणा नवीनको घरसे खींच ले गई। जब कोई कूल किनारा नहीं मिलता तो सोचती है—शायद मैं ही हूँ घर त्यागका कारण। वह अपनेको धिक्कारती, लेकिन साथ ही साथ मनकी कठोरता भी बढ़ी चली जा रही थी।

—पचीस—

महेंद्रबाबूको डिप्टी मजिस्ट्रेटकी नौकरी मिल गई है। लेकिन देशके काममें योग न देनेके कारण उनको लज्जा है। इसे दूर करनेके लिये अब वे साहित्य चर्चामें मनको लगा रहे हैं। उनको मन और मनको वे समझाये हैं। भीख मांगकर खाना और आश्रममें वास करना ही क्या देशसेवा है ? और क्या दूसरे दूसरे कार्य नहीं हैं ? इसी ओड़िया साहित्य में बहुत काम है। बङ्गालके बङ्किमचन्द्र एक डिप्टी थे। वे अपने काममें रहते हुए भी बङ्गला साहित्यको उत्तम वस्तु दान कर गये हैं। निष्ठाके साथ काम करनेसे साहित्यकी केवल वृद्धि होगी ऐसी बात नहीं है। कीर्ति भी मिलेगी।

जब कभी नवीनका नाम समाचार पत्रमें निकलता, कार्यक्रम निकलता, भाषणकी सूचना होती—आदि बातें सुनकर महेंद्र नवीनकी कीर्तिसे आग बबुला हो जाता। अनेक दिन तक वे अपनेको संकुचित समझने लगे।

वह सोचता नवीन मेरे साथ कालेजमें पढ़ता था। वह आज एक नेता बन गया है। मैं क्या नौकर-गुलाम हूँ। साहित्यकी उन्नतिके लिये अगर मैं उत्तम साहित्यिक बन जाऊँ तो फिर सुन्दर कीर्ति पा सकता हूँ। संसार विचित्र है। आज लोग जिसे राजनिति क्षेत्रम शिरपर उठाये घूमते हैं, जिसके नामको छापकर सम्वादपत्र अपनेको धन्य समझते

[एकसौ ग्यारह]

हैं—कल वही निन्दित हो सकता है । कभी जाकर लोप हो सकता है । मधुबाबू और सुरेन्द्रनाथ बनर्जी से बढ़कर संसारमें कोई नाम नहीं पाया था । बादमें जिनलोगोंने उन्हें शिर पर उठाया था उन्होंने उनको फेंक दिया । उनको निन्दित कर दिया । साथ छोड़ दिये—किन्तु साहित्यिकोंकी हालत कभी भी कम नहीं हो सकती ।

इस युक्तिने महेन्द्रके मनको खूब उत्साहित किया । बड़े ही श्रमसे उत्कल साहित्यमें लेख समालोचनादि लिखना शुरू किया । कविता उपन्यास आदि भी लिखना शुरू कर दिया । लेकिन एक भी बात मनको छूती नहीं थी । सोच नहीं पाता था कि जिस संसारमें वह आया है उसको किस भाषामें क्या दान करे । भाषा है साहित्यका कलेवर और उसकी आत्मा है भाव । बिना भावके भाषा मूर्देके समान अस्पृश्य और आखिरमें श्मशानमें उसका डेरा होता है ।

महेन्द्रबाबूको बाल्यकालसे ही लिखनेका अभ्यास था । उनका भाषापर दखल भी था । इसलिये उन्होंने साहित्य पथको आसान समझा । लेकिन उन्होंने जो कविकी बात सोची है वह तो भावके ऊपर प्रतिष्ठित है—यह उनके मनमें कभी आया ही नहीं । दुनिया जिसको अनेक सालके बाद सोचेगी अगर साहित्यिक, कवि उसे जनसाधारणके सामने उपस्थित कर दे अथवा चिरकालसे मनुष्यके अन्तरतम प्रदेशोंमें जो भाव निहित हैं उन भावोंको मांजकर मूर्तिमान करके रख सके तो हमेशा आदरणीय रहेंगे । लेकिन इन दोनोंकी ओर महेन्द्रकी चिन्ता नहीं है ।

महेंद्रने लेख लिखनेके पहले सोचा कि जिन लोगोंने यह असहयोग आन्दोलन किया है, उनका उपहास करूँगा, उनकी जितनी विद्या-बुद्धि थी सब लगाकर 'असहयोग' शीर्षक में एक विशाल प्रबन्ध लिखा। वह 'उत्कल साहित्य' में तीन मास तक लगातार प्रकाशित होता रहा। उस लेखमें असहयोगसे क्या क्या हानि है और ये असहयोगीबृन्द कैसे पथभ्रष्ट हो रहे हैं तथा देशका क्या-क्या अनिष्ट कर रहे हैं—समझाकर लिखा था।

ये सभी लेख प्रतिभाने भी पढ़े थे। वह केवल खबर कागज पढ़कर सन्तुष्ट नहीं हुई, पिछले मासिक पत्र भी मँगाया था। एकबार 'दाढ्यता-भक्ति' नामक पुस्तककी एक छोटी कहानी 'रघुअरक्षित, बहुत सुन्दर ढङ्गसे प्रकाशित हुई थी। जान्हवी देवीने सुन रखा था कि 'दाढ्यता-भक्ति' बहुत अच्छी किताब है। मैकेमें उसने देखा था—मा, उसे प्रेमसे सुनाती थी। बहू जो पुस्तके मँगाती है, उसमें 'दाढ्यता भक्ति' है, यह सुनकर बड़ी खुश हुई। आदिसे अन्त तक सब सुना। खुद जगन्नाथ अरक्षितको सहायता करते हैं—यह कथा सुन प्रेम विभोर हो गई। और भगवानको नमस्कार किया। दोनों हाथ उठाकर दुहाई माँगी। सास जिस विषयको पसन्द करती—प्रतिभा उसीको सुनाती। बाकी मौका पा वह खुद पढ़लेती। 'असहयोग' प्रबन्धको उसने खूब मन लगाकर पढ़ा। इसलिये और कि उसको महेंद्रने लिखा है। महेंद्रबाबूने उसके जीवनका अन्धकार दूर कर उसे आलोक जो दिया है। अन्यथा वह मूर्ख ही रह जाती।

विवाहके सम्बन्धमें उन्होंने जो लेख लिखा था प्रतिभाको याद है या नहीं—कहना कठिन है। अगर याद होगा तो वह खुद समझती होगी। हिन्दु युवतीको लेकर सासके सम्बन्धमें उन्होंने जो लिखा था वह उसके लिये बिल्कुल झूठ साबित हो गया है। पर महेन्द्रबाबू एक विचक्षण ज्ञानी व्यक्ति हैं। वे हमेशा मासिक पत्रमें लिखते हैं। ऐसा नवीन तो कभी लिखते नहीं। अतएव प्रतिभाके लिये है वह लेख अति मूल्यवान्। इसलिये उसकी धारणा हुई कि नवीन घर छोड़कर गये हैं; लेकिन वास्तविक किसी उत्तम कार्यके लिये नहीं गये हैं। घरका सुख छोड़कर निम्न श्रेणीके लोगोंके बीच नीच मनोभाव लेकर क्यों पड़े रहेंगे? अखबारमें नवीन की और असहयोग आन्दोलनकी जो प्रशंसा निकला करती है, वह कुछ भी नहीं है। प्रतिभाकी यह धारणा हो गई कि महेन्द्रबाबूने जो कुछ लिखा है बिल्कुल ही सही है।

प्रतिभाने समाचार पत्रमें पढ़ा था कि महेन्द्रबाबू नवीन नामक एक आदमी के ऊपरसे अन्दरमें चलेगये, जिसे सुन सास मरा, कमउमरिया आदि शब्दोच्चारण कर गाली देती थी। प्रतिभाको आज मालूम हो गया कि वह यही महेन्द्रबाबू हैं। एकदम तुच्छ न समझते तो एक आदमीके ऊपरसे जाते कैसे? यह कभी नहीं हो सकता।

इन सब चिन्ताओंके मनमें आते ही नवीनके प्रति प्रतिभाके मनमें घृणा भाव जनमता था। लेकिन मनमें कोई इस प्रकारकी चिन्ताके आगमनको प्रोत्साहन नहीं देती उल्टे बाधा देती थी। मैं उनको भला कैसे घृणा

कर सकती हूँ। वे तो मेरे आजीवन साथी जो हैं।' ऐसे भाव किस कोनेसे पैदा होते—यही चिंता का विषय है। अगर समाजमें तलाक (त्यागपत्र) देनेकी व्यवस्था होती तो प्रतिभा पहली महिला होती त्यागपत्र दाखिल करने वाली; लेकिन यह तो कल्पनाके कोसों दूरकी बात है। फिर खुद अपने विवाहकी निन्दा भी नहीं कर सकती। वह जिस हालतमें है, उसमें ही वह अपनेको भाग्यवान समझती है।

—छब्बीस—

समाचार पत्रमें नवीनको एक सालकी सख्त कैद, बड़े बड़े अक्षरोंमें निकला था। लेकिन घरमें तो बज्रपात सा हुआ। जेल क्या है ? कैसा है ? वहाँ अन्दर क्या होता है ? आदि विषयोंकी ओर प्रतिभा और जान्हवी देवी की धारणा कुछ भी नहीं थी। लेकिन इतनी ठीक थी कि वह एक भयंकर स्थान है। वहाँ चोर डाकुओंका घुसाकर खूब मार दी जाती है और करनेके लिये कटोरसे कटोर काम दिया जाता है। जान्हवी-देवी अर्द्ध-मूर्च्छित सी हो गई थी। अगर उनकी आँखोंसे काफी आसूँ न निकल जाते तो अचेत हो जमीन पर गिर पड़ती। उस दिन चूल्हा नहीं जला। सभी चिन्ता मग्न। नवीन एक साल तक जेलमें रहेगा, फिर उसका छुःकारा होगा कि नहीं, यह सन्देह जान्हवी देवीको करोये डालता था। रोने चिल्लानेके बाद मनमें जग शांति मिली। घरके बाहर चली गई। अन्दरसे रोनेकी आवाज रामहरिके कानमें पड़ रही थी। घरमें समाचार पत्र, मासिक पत्र पढ़े जाते थे; लेकिन रामहर बाबूकी इच्छा इनके प्रति न थी। वे सोचते—अगर ये सब न होते तो बड़ी शांतिमें रहता। ऐसा तो उनके मनके भाव थे। लेकिन जान्हवी देवी का प्रेम सभी कामोंसे उनको फरा रहा था। वे एक सम्माननीय व्यक्ति हैं। बाहर-आने घरमें बैठे बैठे रामहर बाबूने सुना—नवीनको एक सालकी जेल हुई है।

रामहरिबाबू उस अञ्चलके एक सम्माननीय व्यक्ति हैं। २०-२५ गांवके आदमी उनके सामने एक शब्द भी उच्चारण करनेके लिये साहस नहीं करते थे। अनेक दिनकी बात है। एक बार एक आदमीने उनका अपमान किया था। आप उसके पीछे पड़ गये। सैकड़ों रुपये खर्चकर उसे जेल भिजवाया। लेकिन आज उसीका पुत्र जेलमें है लोग भला क्या कहते होंगे। शिर ऊँचा करके वह रास्तेमें चल सकेगा तो ! ऐसी आशंका उनके मनमें उठने लगी। सरकारके विरोधमें पुत्र जेल गया है। इस घटनासे क्या जमींदारीके ऊपर आँच आयेगी ? ऐसा शक उनको भयभीत कर रहा था। इसी समय जान्हवी देवी द्वाराके आड़में आकर रोने लगी। रामहरिबाबूने अपने मनके भावबो छिपाकर सान्त्वना देते कहा—ऐसा अधीर क्यों होती हो ? जो तो होना था हो गया। भाग्यमें जो लिखा होगा—होगा। मां-बापका कर्त्तव्य है जन्म देना। पढ़ाया, लिखाया; लेकिन कर्म तो उनके हाथका लिखा हुआ नहीं है। भगवान सहायक हैं। जाओ, चुप होकर घरमें बैठो। जान्हवी देवीकी हिचकियाँ बन्धी होनेकी वजहसे बात नहीं कर पा रही थी। फिर भी रोते हुए कहा—तुम जाकर लोगोंसे पूछते क्यों नहीं ? खलास तो हो सकेगा। भले ही कितने रुपये खर्च क्यों न हो !

रामहरि रुपये खर्चकी बात सुनकर विचलित हुए। वाधा देते बोले—यह सरकारके घरकी बात है। वहाँ भला रुपये पैसेका क्या काम ? क्या मैंने यह सोचा नहीं ! इससे कुछ भी नहीं होनेका। भाग्यमें जो होगा, वही होगा। जान्हवी देवी अपने स्वामीका स्वभाव जानती थी। वह समझ गई—रामहरि रुपये खर्च करनेको तैयार नहीं हैं। रोना अपने आप

बन्द हो गया। वे विरक्त हो बोलीं—समझते तो सब हो, समझते मला क्या हो !’ रुपये जमा करनेके सिवा तुमको और आता क्या है ? एकमात्र लड़का, वह आज किस हाल में है ! यह कह जान्हवी देवी फिर रोने लगी। रामहरिका धैर्य जाता रहा। बोले—अच्छा, तुम चुप रहो, तुम जैसा कहती हो, कर देखें। मैं आज ही जाजपुर जाता हूँ। वकीलसे परामर्श करके जो कुछ होगा, करूँगा। मैं रुपये खर्चके लिये नहीं डरता। पुत्रके लिये मैं सब कुछ लुटा सकता हूँ; परन्तु भाग्य बली होता है। मनुष्य सब सोचता है, करता है लेकिन फिर देव तो है !

जान्हवी देवीने धीरे धीरे पूछा—कब जाओगे ?

रामहरि बाबू जरा-सा व्यस्त हो बोले—आज ही रातको।

म्याना तैयार हो गया। रातको रामहरि जाजपुर पहुँचे। जाजपुरमें अक्षय बाबू आइनके बड़े विश्व समझे जाते थे। रामहरिने उनसे सबेरे ही मुलाकात की। नमस्कारके बाद रामहरिने कहा—क्या करूँ। मेरा तो भाग्य ही खराब है। मेरे ऐसे ग्रह पड़े हैं कि क्या कहूँ ! जमींदारीकी वसूली भी अच्छी नहीं। आप लोगोंकी बात मानकर पुत्रको पढ़ाया लिखाया। वह अब जेलमें।

अक्षयबाबू प्रसन्न हो वाधा देते बोले—हाँ, हाँ, नवीनको तो आप पढ़ाना ही नहीं चाहते थे। मैंने जिद करके उसे पढ़ानेके लिये कहा था। देखा आपने,— आज वह कितना बड़ा आदमी बना है।

[एकसौ अठारह]

गरय-मान्य व्यक्ति जेल जाना पसन्द करेंगे यह रामहरिकी कल्पनाके बाहरकी बात थी। उसने सोचा—अक्षयबाबूको नवीनके जेल जानेकी खबर नहीं है। इसलिये वे कहने जा रहे थे कि अक्षयबाबूने पहले कह दिया—कल समाचार पत्रमें पढ़ा कि नवीनको एक सालकी जेल हुई है।

अक्षय बाबूने कहा—रामहरि बाबू, आप गाँवमें जमींदार हैं, मान्य हैं; लेकिन नवीन आज तमाम देशमें पूजा जा रहा है। उसकी ख्याति तमाम देशमें फैल गई है। मेरी तो कभी कभी इच्छा होती है कि नौकरी छोड़कर इस सरकारके विरुद्ध हो जाऊँ। पर क्या करूँ ! इतना बड़ा परिवार। बिना रोजगार किये काम भी नहीं चलता। आपके क्या नहीं हैं। नवीनने वास्तवमें ठीक काम किया है। रामहरिने अपनेको समुद्रके बीचमें-सा अनुभव किया। अक्षयबाबूके मुखसे नवीनकी प्रशंसा सुनी; लेकिन उससे उन्हें आनन्द नहीं मिला। जेल जानेको वे अच्छा कार्य नहीं समझते। लेकिन आजीवन परामर्श दाता अक्षयबाबूके मतका अनादर भी वे नहीं कर पाते। वे क्या सोचेंगे। धीरे धीरे नीचेकी ओर ताकते पूछा—जमींदारी पर कोई आँच तो नहीं आयेगी ?

अक्षयबाबूने मुस्कुराकर कहा—नहीं। वह आइन ही बदल गई है। प्रथम १२४ धारामें सारी सम्पत्ति पर अधिकारकी बात थी; लेकिन आजकल वह बदल गई है।

रामहरि बाबूके मुख-मण्डलपर परिवर्तनके लक्षण दिखलाई देने लगे। कुम्हिलाई लता शीतल पवन पाने पर जिस प्रकार प्रफुल्लित दीखती है

रामहरिबाबू का मुखमण्डल वैसा ही नजर आया। उन्होंने अक्षयबाबू से जिद किया कि वे आइनकी किताब भली-भाँति देखें।

अक्षयबाबू ने उनकी बात मानकर आलमारी से आइनकी पुस्तक निकाली। बड़ी देर तक गौर से देखा; बोले—न! नहीं है। वह आइन बदल गई है। जमींदारी के ऊपर कुछ भी आँच न लगेगी।

अक्षयबाबू ने कहा—१९०५ साल में बङ्गाल में जैसा आन्दोलन हुआ था वैसा ही यह आन्दोलन है। नये आकार से चलता है। कितने बड़े बड़े आदमी जेल गये। फाँसी पाये। ओ हो! उस समय क्या क्या काँड़ हो गये। हम सब उस समय स्कूल में पढ़ते थे। मुझ पर शक करके २० बेत लगे थे, लेकिन वह बात आज नहीं है। यह अहिंसा आन्दोलन गांधी की खोमड़ी की उपज है। इसमें फाँसी नहीं। जो है जेल। कितने बड़े बड़े व्यक्तियों को जेल की सजा हुई। चित्तरंजन दास कलकत्ते में एक बड़े बारिस्टर थे। ५० हजार रुपये उनकी आये थी। वे आज जेल में हैं। मोतीलाल नेहरू, लाला लजपत राय, जिनके यहाँ बड़े बड़े राजा महाराजा आश्रय प्रार्थी होते थे—वे आज जेल में हैं। ऐसा कह आराम-कुर्सी पर ओढ़क कर चिन्ता करने लगे। ऐसा मालूम होता था मानों चिन्ता में विप्लव के साथ गति कर रहे हों। कुछ काल बाद ऐसा लगा मानों चिन्ता को विदा कर चुके हैं। कुर्सी को सामने खींचकर पुस्तकों को ठीक करते हुए बोले—जो हो रामहरि बाबू, आपका लड़का उत्कलका नाम रख लिया है। और सब ठीक तो है? कब तक यहाँ हैं? रामहरि बाबू जाने की तैयारी में थे। उठते हुए कहा—नहीं, आज ही चला जाऊँगा।

अक्षयबाबू का वकील मन जिस चिन्ता की खोह में बैठा देशप्रेम की छाया का अवलोकन करता था, बन्द हो गया। वर्तमान फिर वह वकील मन अपने काम में जुट गया। चाहे बड़े वकील ही क्यों न हो अगर मनसे अपने व्यवसाय की ओर न लगेंगे तो छोटे बन जायेंगे। हँसते हुए बोले—क्यों रामहरिबाबू, आजकल आपकी ओरसे मामले मुकदमे नहीं आते ? जो आता भी है दूसरों के पास चला जाता है।

अक्षयबाबू के प्रश्न का उत्तर क्या दे— सोच रहे थे कि उन्हें अन्य मुवकिलों के साथ बातचीत करते देख रामहरिबाबू अपना रास्ता लिया।

—सत्ताईस—

आजपुरसे लौटनेके बाद रामहरिका मेघाच्छन्न हृदय साफ हो गया था । अब नवीनके जेल जानेसे अपनेको अपमानित नहीं समझते, जमींदारी बानेका डर था । लेकिन अब तो उसपर भी आँच नहीं आयेगी अब यह चिन्ता भी गई । रामहरिके मनमें विरक्ति आई, क्यों पहले ही वकीलसे नहीं पूछ लिया ! अगर ऐसा होता तो वह मेरी आज्ञा पाकर जाता तब कितनी खुशीकी बात होती । घरमें अशांति कलह क्यों होती । ऐसा होनेपर कटकमें कुछ ही क्यों न करता, बीच-बीचमें घर में तो आया करता । ऐसी नाना चिन्ता मनमें सुलग रही थी; लेकिन मुखमण्डलमें अब विषादकी रेखा नहीं थी ।

अक्षयबाबूसे जो कुछ सुना था रामहरिने जान्हवी देवीके सामने उसे बढ़ा-चढ़ाकर कहा—लड़का जेल गया है तो उससे क्या हानि है ? कितने बड़े बड़े आदमी जेल गये हैं । क्या वह चोरी करके जेल गया है ? भगवानकी कृपासे महात्मा गांधीजी की जीत होगी तो फिर देखना नवीनके द्वारा क्या होता है । चारों तरफ नवीनका नाम हो गया—सभी उसकी प्रशंसा करते हैं । २० वर्षसे जमींदारी करते हुए मुझे इतना नाम नहीं मिला है । इन कितने दिनोंके अन्दर नवीनने मुझसे दश-गुना नाम कमाया है । रोना पीटना बन्द करके देखो—क्या होता है । भगवान हमारा अहित कभी नहीं करेंगे ।

[एकसौ बाईस]

नाना प्रकारकी सान्त्वना दे रामहरिने जान्हवी देवीको शान्त किया;
किन्तु माँ का मन आसानी से नहीं समझता था ।

इधर प्रतिभा नाना प्रकारकी बातें सोच मनकी गतिको फेर चुकी थी ।
लेकिन अब जिस प्रकार झड़ तूफान में पुराने पेड़ लुढ़क जाते हैं
उसी प्रकार उसके मनमें नवीनके प्रति जो अभिमान था धो गया ।
उसने मैकेमें रहते जेलकी खबरे अपनी सहचरीसे सुनी थीं —कि चोरी
से धान काटकर एक आदमीको ५ मासकी जेल हुई थी । वह जेलमें
कोल्हू चलाया करता था । धान कूटता, चक्की चलाता था । मार
खा-खाकर उसकी पीठमें लाल-लाल दाग पड़ गये थे । वह घटना
उसको याद आ गई । और फिर उसने सोचा —उसी जेलमें नवीन भी
है । उसके शिरमें चक्कर आ गया । नवीनने हाकिमके सामने कोर्टमें
जो बयान दिया था, समाचार पत्रमें उसने देखा है । वह भी हृदयको
स्पर्श कर गया । वे तो चोरकी तरह पकड़-बंधकर जेल नहीं गये ।
वे जेलकी दीवारको फाँद कर, ताला तोड़कर घुसे हैं; क्यों ? और भी
देशके बड़े बड़े आदमी जेल गये हैं । यह मैंने समाचार पत्रोंमें पढ़ा
है । ये सब क्या विपथ-गामी हैं, क्या सबके घरमें अशान्ति है ? अवश्य
उन सबने एक बड़े महत्वको लेकर यह पथ पकड़ा है । अगर यही
है तो फिर महेंद्रबाबू इतने बड़े आदमी होकर क्यों इसका विरोध
करते हैं । उस दिन समाचार पत्रमें जो झूठी आलोचना की गई थी, क्या
ठीक है ? लेकिन प्रतिभाका मन इसे स्वीकार करनेको तैयार न था ।
हृदयके आवेगसे दिमाग काम नहीं कर पा रहा था । सभी विषय
सोचकर किसी एक सिद्धांत पर आनेका अवसर भावोच्छ्वास नहीं

[एकसौ तेईस]

दे रहा था। सोचती—मेरे स्वामी जेलमें कितनी तकलीफ भोगते होंगे ! पैरमें बेड़ियाँ होंगी। बैलकी तरह सिपाही पीछेसे मारते हुए हाँककर कोल्हूमें चलाते होंगे। हाथ पैर सब फट गये होंगे। वे मन मारकर आँखें मूँदकर सब सहजाते होंगे। ऐसा कितने सहेंगे। एक वर्ष ! ३६५ दिन !!

आगे प्रतिभाकी चिन्ता काम न कर सकी। मुखके बल बिछौने पर लेट रही। नवीनके घर आनेमें अनिश्चित देखकर उसके मनमें नाना चिन्ताएँ उठतीं। कभी कभी मन कहता—नहीं, जरूर आयेंगे। उसकी वेदना बढ़ती। नहीं, आये'गे, यह ठीक था। लौटेंगे किन्तु एक दर्पके बाद, यह मियाद असहनीय थी। इस चिन्तासे प्रतिभाके प्राण सूख जाते। जीवन बेकार सा भान होता। पढ़नेमें मन न लगता। दिन भर गूम-सूम बैठी रहती। अनेक समय तो बिछौने पर ही रहती है। बीच बीचमें व्याकुल हो अश्रु विसर्जन करती है।

२-३ दिन खुद व्यस्त रहनेके कारण जान्हवी देवी पुत्र-वधूके दुःखको नहीं देख सकी। किन्तु जब वह खुद संभली तो बहूकी व्याकुलता को समझने में देर न लगी। उसके मनके एक छिपे गुफेसे आनन्दकी छाया भाँकने-सी लगी—बहू पुत्रके लिये व्याकुल हो रही है ! उसने देखा जैसे-जैसे दिन जाता है बहूकी दशा खराब हो रही है। एक रोज उसने देखा—बहूने सोनेकी चूड़ियाँ उतार कर घरमें रख दी है। और उनके स्थानपर काँचकी चूड़ियाँ पहिरे हैं। साथ साथ उसने देखा देश भूषणमें जो सरसता थी वह अब नहीं है। बहू अति सूखी नजर आती है।

[एकसौ चौबीस]

जान्हवी देवी यह दशा न देख सकी । सान्त्वना देते बोली—जेल जानेमें कुछ भय नहीं है । बड़े बड़े आदमी जेल गये हैं । गांधी एक महात्मा हैं । उन्हींकी बातोंपर पृथिवी उलट पुलट रही है । कल की भाँति वर्ष भी चला जायगा । मेरा नवीन देशका राजा होकर लौटेगा ।

ऐसी नाना बातें कहकर प्रतिभाको आश्वासना देती । लेकिन उसे दुःख होता कि उसका उद्यम सफल नहीं हो रहा है ।

—अठाईस—

तेल लगाकर रामहरि स्नान करने जा रहे थे। इसी समय प्रकाशने आकर कहा—नमस्कार ! तेल लगाते समय नमस्कार करना शास्त्र-निषिद्ध बात है, अतः रामहरिने कुछ विरक्ति प्रकट की। लेकिन बादमें जब प्रकाशके मुखकी ओर अच्छी तरहसे देखा तब मालूम हुआ कि यह गांधी दलका कोई बड़ा आदमी है। उनके साथ कैसा व्यवहार करना होगा—आसानीसे किस प्रकार विदाय देनी होगी, आदि बातोंपर रामहरिका मस्तिष्क काम करने लगा। प्रकाशको सम्मानके साथ आसन देकर पूछा—‘कहाँ से आ रहे हैं ?’ प्रकाशने गम्भीर-भावसे कहा—‘मैं आश्रमसे आया हूँ। यहाँ कुछ दिन रहूँगा।’

जल्दी विदाय देनेकी बात कहीं उसे मालूम न हो जाय इसलिये सावधान होकर रामहरि ने कहा—‘बहुत अच्छी बात है, रहिये। यह तो आपका घर। मेरे अहो भाग्य है कि आप मेरे घर पधारे हैं। आपने तो नवीनको देखा होगा, आश्रममें कैसा है ?’

प्रकाशने हँसकर कहा—कटक जेलमें है और मजेमें।

सम्बी साँस छोड़कर रामहरि बाबू दुःखका बहाना देखाते बोले—‘इस अञ्चलके आदमियोंने तो उसकी बातें न सुनीं अतः लाचार होकर यह कटक चला गया।’

आगेकी बातोंका सिलसिला जारी रखनेका कोई मसाला न पाकर रामहरि जल्दी नहानेके लिये चले गये । प्रकाशके रहने आदिका इन्तजाम नौकरको बुलाकर करादिया ।

महाशय, जाइये हाथ पैर धोइये । मैं नित्यकर्म कर लेता हूँ । यह कह रामहरि चले गये । प्रकाश हाथ-पैर धोने लगा ।

प्रकाश रामहरिके साथ बातचीत करने थे कि इसी समय एक नौकरने जाकर जान्हवी देवीसे कहा—नवीन बाबूके पाससे एक सज्जन आये हैं । जान्हवी-देवीने किवाड़की ओटसे मुख बड़ा प्रकाशको देखा—सुना, नवीन अच्छा है । किन्तु उसके सम्बन्धमें और भी सुननेकी इच्छा है । रामहरि सब बातें क्यों नहीं पूछते ? उनपर ऐसी विरक्त होता । उनके मनमें उद्वेगकी ऐसी लहरे उठतीं कि वह खुद क्यों बातें नहीं कर लेती । तो क्या यह अच्छा होगा ? रामहरिने जब यह कहा कि 'इस अञ्चलके लोगोंने नवीनकी बातें नहीं मानीं । इसलिये वह कटक चला गया है । अच्छा ही हुआ है ।' यह सुनकर जान्हवी देवी की देहमें आग सी लग गई । नवीनकी बात अगर इधरके लोग नहीं सुनेंगे तो फिर सुनेंगे कहाँके ? कौन सुनेगा ? किसकी बात सुनेंगे । वह कटकमें जो करता है अगर यहाँ करता तो क्या न होता ? कैसी बातें ये करते हैं ! अधिक सुननेकी इच्छा न हुई । भनभनाती घरके भीतर चली गई । प्रतिभा भी खिड़की से प्रकाशकी ओर ताकती हुई सभी बातें सुनती थी । रामहरिने नवीनके घर छोड़नेका जो कारण दर्शाया उससे प्रतिभाको सन्तोष हुआ । साथ ही साथ उसने सोचा—अनुकूल वातावरण होनेपर कटकमें

[एकसौ सत्ताईस]

नवीन जो करते हैं यहाँ भी कर सकते हैं। कटकमें ऐसा क्या काम करते हैं जो घरमें करनेकी सुविधा नहीं होगी। अधिक बातें सुननेमें नहीं आईं। इससे प्रतिभा का मन खराब हो गया। मनमें आया प्रकाशके साथ बातचीत करके खुद सारी बातें पूछती ! लेकिन इच्छाके प्रादुर्भाव होते ही उसपर पर्दा पड़ गया

रामहरि स्नान, पूजा और जलपान खतम करके निकले ही थे कि प्रकाश फिर उनके पास आये। रामहरि बाबूने जो आन्दोलन चलता है उसकी खबर भी वे रखते हैं—प्रकाशको यह मालूम करानेके लिये अन्त्यबाबूके पाससे जितना सुना था कहकर स्थानीय लोगोंके मनोभावकी निन्दा की। प्रकाश उसपर कम ध्यान दे रहे थे। अन्यमनस्क बैठे थे। कुछ काल बाद धीरे धीरे बोले—‘क्या मैं नवीनकी पर्दाके साथ मिल सकता हूँ ?’ यह प्रश्न रामहरिको असंगत, अप्रासंगिक और असम्भव सा लगा। कुछ सोच न पाया कि क्या उत्तर दें। हठात् बोले—वह तो इतनी पढ़ी-लिखी नहीं। नई है, दुनियाकी खबर उसे मालूम भी नहीं। रामहरिने सोचा प्रकाश इसके बाद कोई उत्तर न देंगे; लेकिन प्रकाशने इसते हुए कहा—उससे कुछ भी नहीं बिगड़ता। मेरे मतसे नवीन जिस पथका पथिक है उसकी स्त्रीको उसी पथका पथिक होना चाहिये। पढ़े अनपढ़े स्त्री हो या पुरुष, जो इच्छा करेंगे वही इस पथके पथिक हो सकते हैं।

रामहरि बड़े असमंजसमें पड़े। उपस्थित बुद्धि खर्च करके फिर कहा—मेरी कुछ भी आपत्ति नहीं, लेकिन उसकी सासकी राय लेना जरूरी है।

[एकसौ अठाईस]

कारण वह जरा पुराने ख्यालातकी औरत है। मानेगी कि नहीं मालूम नहीं।

प्रकाश उत्साहित हो बोले—पूछ लीजिये। मैं तो उनके पुत्रके समान हूँ। नवीनकी स्त्री मेरी बहिन के समान है। मैं दोनोंके साथ बातचीत करूँगा। आप जाइये, पूछिये।

रामहरिके पास और कोई उपाय बहानाके लिये नहीं रहा। अनिच्छाके बावजूद भी भीतर गये।

बरामदेकी बातचीत भीतर सूनी जाती है। जान्हवी देवी और प्रतिभा सबेरे जहाँ खड़ी होकर बार्तालाप सुनती थी प्रकाशका शब्द सुनकर अपने अपने स्थान पर जा खड़ी हुईं।

रामहरिको अन्दर आते देख प्रतिभाने द्वारसे अपना सिर घुमा लिया। किन्तु जान्हवी देवी धीर स्थिर, अपने स्थानपर खड़ी है। घर जाते ही जान्हवी देवीसे मुलाकात हुई। लेकिन रामहरि बाबू अन्दर चले गये। जान्हवी देवी भी पीछे पीछे चली गई। बरामदेमें धीरेसे बैठकर बोले—‘बोल, अब क्या कहती है? सब तो सुना है। न जाने कौन कहाँ से आकर बहूके साथ मुलाकात करनेके लिये कहता है।’ रामहरिने मनमें सोचा था, ऐसी बातें सुनकर जान्हवी देवी बहूके साथ मुलाकात करनेके लिये मना कर देगी। मेरी बात भी रह जायगी। सासकी बात जाकर प्रकाशसे कह देगा। लेकिन जान्हवी देवी चुप चाप कुछ देर तक सोवती रही, पुत्रकी सारी खबर पूछनेकी प्रबल इच्छा थी, लेकिन पर-

[एकसौ उन्तीस]

पुरुषके साथ बात किस प्रकार करे । उधर प्रतिभाके मनमें न जाने क्या समाया है । वह चाहती है बातचीत करना । परन्तु बातचीत की जाय तो किस प्रकार ? क्या बातचीत करेगी ! वह तो ऐसी शिक्षित भी नहीं है । कैसे पहले पूछेगी । इस प्रकारके नाना प्रश्न उसके मनमें उमड़ रहे थे । रामहरि भी अपनी बुद्धिको चाबुक सा मार जोरसे कदम बढ़ानेके लिये इशारा कर रहे थे । बातको किसी प्रकार टाल देनेके लिये उनको कोई बहाना भी नहीं सूझता था । कुछ काल तक तीनों नीरव रहे । फिर जान्हवी देवीने धीरे धीरे कहा—अगर बातचीत करनेकी इच्छा है, करें । मैं और बहू कपाटके पास द्वारपर बैठेंगी ।

रामहरि मन ही मन अति विरक्त हुए । मुंह फुलाकर अपना असन्तोष प्रकाश करते बाहर चले गये । प्रकाशके पास जाते ही मुख-भङ्गिमाको सम्भालकर बोले—वे तो राजी नहीं हो रही थीं, मुश्किलसे राजी कराया आप इस द्वारके पास आइये, वे दोनों भीतर वहीं द्वारके पास बैठेंगी, बातचीत करेंगी ।

—उत्तीस—

कुछ काल सङ्कोचके साथ धीरे धीरे बातचीत होती रही । फिर संकोच भी हट गया । जान्हवी देवीके मुखसे प्रश्नोंकी झड़ी लग गई—साथमें कपड़े लत्ते तो नहीं लिया है, चलता किस प्रकार है ? क्या खाता है ? सबेरे कलेवा क्या करता है ? साग सब्जी क्या क्या बनती है ? कपड़े धोनेके लिये चाकर हैं तो ? आदि आदि नाना प्रश्न जादूकी पेटारीसे जैसे बेमौसमी आम निकलते हैं निकलने लगे । प्रकाश उन सभी प्रश्नोंक एक ओर सरका कर ऐसे प्रेमसे बातें करने लगा । इसके फल स्वरूप जान्हवी देवीका मातृ-हृदय पिघल गया और धीरे धीरे प्रकाशकी ओर खिंची । प्रतिभाके साथ बातचीत करनेका मौका नहीं मिला । एक दूसरेकी आकृति देखनेका सौभाग्य नहीं मिल रहा था । शेषमें प्रकाशने कहा—माँ, मैं तुम्हारा लड़का हूँ । नवीन जैसा है मैं भी वैसा हूँ । हम दोनों दोस्त हैं । माँ और पुत्र क्या इसी प्रकार बातें करते हैं । माँ ! मैं तो यहां आया रहनेके लिये, नवीनके जेलसे आने तक मैं यहीं रहूंगा । मैं तो घरके बच्चेकी तरह रहूंगा—ऐसा सोचकर आया हूँ । जान्हवी देवीके मनमें अब आशाका सञ्चार हुआ कि नवीन जेलसे आयेगा । उन्होंने व्यग्र हो पूछा—जेलसे मुक्त हो सीधे घर आयेगा तो ।

प्रकाशने दृढ़ताके साथ कहा—निश्चय आयेगा । मैं उसे लेकर आऊंगा ।

[एकसौ एकतीस]

बादमें हम दोनों एक साथ रह सकेंगे कि नहीं—कह नहीं सकता । लेकिन वह घर निश्चय आयेगा ।

जान्हवीने दीर्घ निश्वास छोड़ते कहा—भगवान उसे लायेंगे तो ! उनकी आँखोंसे अश्रु धारा बह चली ।

इसी समय प्रकाश उठकर जान्हवी देवीके निकट जा बैठा । और पहले की भाँति बातें शुरू की । जान्हवी देवीका पर्दा हट गया, उसे मालूम भी नहीं दिया । निःसंकोच बातचीत कर रही थी । जान्हवीने कहा—बिना किसीको कुछ कहे रातको उठकर चला गया । ऐसा कहनेसे उसके हृदयका आवेग शांत सा हो रहा था । प्रकाशकी सहानुभूति उनको और भी उत्साहित कर रही थी ।

बातचीतके उपरांत प्रेम पूर्वक पूछा—बेटा ! तुम्हारा घर कहां है ? प्रकाशने हँसकर कहा—मां ! मेरे घर नहीं । जहां रहता हूँ वहीं मेरा घर है । मेरे न घर है न द्वार, मां वाप भी नहीं । वन्धुवान्धव भी नहीं हैं, कोई नहीं । इसलिये तो मैं तुमको मां ! कहता हूँ ।

जान्हवी देवी स्नेह जताते बोलीं—बेटा ! तुम यहीं रहो । नवीनके आ जानेपर जहाँ फिर तेरी इच्छा होगी जाना । वह जिस दिन जेलसे छूटे तू सीधे यहाँ ले आना ।

इसके बाद प्रकाश अपने नित्यकर्मके लिये उठा । पीछे सारी बातें होंगी, ऐसी आशा भी दे गया ।

[एकसौ बत्तीस]

जान्हवी देवीके साथ बातचीत करते समय प्रतिभा बड़े गौरसे प्रकाशकी ओर देख रही थी। बीच बीचमें बातचीतके प्रति उसका मन अवश्य जाता था। लेकिन अनेक समय तक वह अन्यमनस्क रहती। उसका मन क्या काम करता है उसे खुद ही नहीं मालूम था। जब उसने सुना नवीन जेलसे मुक्त होकर आयेंगे तो उसके शरीरके रोम रोममें एक सिहरन सी खेल गई। अनेक प्रकारके वेश यानी कामना प्रतिभाको अपना नृत्य दिखलाकर चली गई। 'आनेपर मुझसे बातें करेंगे तो ? ऐसे कौनसे मेरे व्यवहारपर वह पूछनेके लिये बाध्य होंगे ? अगर मुझसे बातें न करें तो यह जीवन ही व्यर्थ है।' प्रतिभाकी चिंता और उधर बढ़ रही थी। दीर्घ निःश्वास गेर अपने हृदयके आवेगको ऐसे ही दबाये रही।

रामहरि भी दूरसे इनकी बातें सुन रहे थे। उसने जब यह सुना कि नवीनके आने तक वह यहां रहेगा तो वे एक प्रकार असमंजसमें पड़ गये। उनको ऐसा लगता मानो प्रकाशके रहनेसे नवीनके मनमें और एक शकको बैठाना है।

—तीस—

रामहरि दोपहर और रातको भोजन करते समय बड़े प्रेमसे स्त्रीके साथ बातचाते । नाना विषय खुलासा अपनी स्त्रीसे आलोचना करते । उनकी निगाहमें यही था स्वामी और स्त्रीमें परस्पर बात करनेका ठीक समय । दूसरे समय रामहरिको फुरसत नहीं रहती और फिर केवल स्त्रीके साथ बात करनेके लिये । अन्दर आना उनके समझमें असंगत था । लेकिन इधर कितने दिनोंसे रामहरि भात खाते समय कुछ भी नहीं बोलते । नीचे मुख किये गम्भीर हो खाकर लौट आते हैं । इस परिवर्तनको जान्हवी-लक्ष्य न कर सकी । कारण, प्रकाशके संसर्गमें आनेके दिनसे उनके दिमाग में इतना विषय घूमता है कि मन उसी भूल-भुलैयामें पड़ा रहता है । स्वामीके मनोभाव लक्ष्य करनेकी फुरसत ही नहीं रहती ।

पानी जिस प्रकार गरम होते समय कुछकाल गम्भीर रहता है बादमें खदकने लगता है उसी प्रकार एक दिन रामहरि भोजनके समय गला साफ करके कहने लगे—“आजसे एक मास होता है, मैंने मुख नहीं खोला है । देखता था पानी बहकर जाता किधरको है । किन्तु वर्त्तमान विना मुख खोले काम नहीं चलता है ।”

इतना कहकर उत्तरकी अपेक्षामें चुप हो गये । उनका ख्याल था कि उनकी बातें सुननेके लिये कहीं न कहीं आड़में जान्हवी देवी खड़ी होंगी ।

इसलिये बिना सम्बोधनके बात शुरू हो गई । लेकिन वहाँ तो कोई था ही नहीं उत्तर दे कौन । किसी प्रकारका उत्तर न पाकर रसोइयेसे उत्तेजित हो, पूछा—मालकिन कहाँ गई हैं रे ?

रसोइयेने डरते हुए कहा—चौकेमें हैं ।

रामहरिने कहा—क्या करती हैं ?

रसोइयेने कहा—वे बाबू खाते हैं । इसलिये वहीं बैठी बतिआती हैं ।

मारे क्रोध के रामहरिका मुख तमतमा उठा । अपनेको सम्भाल न सके गर्जन करके बोले—क्या हुआ वह रसोइके चौके में खाता है । यह क्या धर्मशाला है ? सब सत्यानाश किया, धर्म गया, कर्म गया, आदि आदि ।

रसोइयेने दौड़कर जान्हवी देवीको खबर दी । वे भी घबड़ाई हुई दौड़ीं । खम्भेके ओठमें हो बोली—क्यों ववेला मचाते हो जी, हुआ क्या है ।

रामहरि उत्तेजित रूपसे बोले—और क्या होता ? जाति गई । पाँत गई । धर्म गया और अब आखिरमें जमींदारी भी जानेवाली है । अब और क्या बाकी है ? शास्त्र कहता है “अज्ञात कुलशीलको बरामदे में भी नहीं बैठाना चाहिये । कहाँ बरामदा कहाँ घर । फिर वह तो दिन और रात घरमें ही घुसा रहता है । न जाने क्या दिन रात फुसफुसाते रहता है । किसी दिन घरकी औरतें पर पुरुषके साथ ऐसा बातचीत करती थीं ? क्या ऐसी राजनीति-गुत्थियों सुलभाई जा रही हैं । वह तो यहाँ से जाकर भंगियोंकी वस्ती में घूमता है । एक भंगीके लड़केको

लाकर कुएँसे पानी निकालने के लिये कहा—मैंने मना किया तो बन्द हुआ। उधर दलके दल आदमी उसके पास आते हैं। न जाने क्या मंत्र देता है। एक रोज एक प्रजाने मेरे सामने पैरोंके नीचे गिरकर लम्बा, साष्टांग प्रणाम किया। इसने उससे कहा—क्यों पैरके नीचे गिरते हो ? किसीके सामने सिर नहीं नत करना चाहिये। जैसे तुम एक आदमी हो दूसरे भी उसी तरहके आदमी हैं। तुम्हारा सिर क्यों दूसरेके सामने झुक जाता है ?

इससे कोई किसीको नहीं मानेगा। हमारे इलाके में भी एक संगठन हो रहा है। ऐसी खबर मुझे लगी है। मैं किसीसे कहूँ तो क्या ? मेरे घरके ही तो उसे बुलाकर प्रेमसे आदर के साथ खिलाते पिलाते हैं। कितनी पीढ़ियोंका यह घर है। कोई बाहरका आदमी उस घरमें नहीं खाया है। बतला तो ! यह वही पुराना घर रह गया है न ?

जान्हवी देवीने जोर देकर कहा—ये सब क्या उलटी सीधी बकते जाते हो ? रसोईके पास खानेसे क्या रसोईमें छूत लग गई ? मुझसे क्यों कहते हो ? उसीसे क्यों नहीं पूछते कि वह अछूतोंके साथ क्यों मिलता है ? हमारे इलाकेमें क्यों अशांति फैलाता है ?

जान्हवी देवी जानती थी कि रामहरि प्रकाशके सामने कुछ भी नहीं कह सकते। उसके सामने तो सब हाँ मारते हैं।

रामहरिने पराजितसे अनुभव किये और फिर एक रास्ता पकड़ा। मुझे जो कुछ कहना होगा कहूँगा। पर तुम एक हरिजन रसोइया रखो,

[एकसौ छत्तीस]

मन्दिरसे ठाकूरको फेंक दो । उसके बाद मैं सब जमींदारी प्रजाके नाम लिख दूंगा—वस, और क्या ?

इसी बीच उनकी नाराजी सीमा लांघ चुकी थी भोजनकी थाली छोड़ जल्दी जल्दी हाथ धोने बाहर आ गये । परोसी थाली से उठजाना और इस प्रकार स्वामीको क्रोधित देख जान्हवी देवी नीरव जहाँकी वहाँ खड़ी रही । कुछ भी बोल न सकी ।

—एकतीस—

धैर्यकी भी एक सीमा होती है। अगर सीमा पार हो जाय तो फिर खुदको भी सम्भालना कठिन हो उठता है। रामहरिके लिये भी वास्तवमें असहनीय हो उठा था। खजाना वसूलका समय है। अनेक प्रजा खजाना देती भी हैं। जो नहीं दिया है, प्यादाको देखकर लुकता है और अगर पकड़ा जाता है उसका कर्त्तव्य है—पुरानी रीतिके अनुसार नाना गाली सुननेके बावजूद भी पैरोंके नीचे पड़कर सभी बातें सुन लेना। लेकिन आज एक प्रजा लम्बा हो पैरोंके नीचे पड़ना तो दूर रहा, लम्बा सीधा खड़ा हो कहता है—“घरमें खानेके लिये तो दाना नहीं, खजाना लाकर दूँ कहाँ से? समूचा साहस दम्भ समेटकर ऐसा उसने कहा—लेकिन मुखसे तो अभाव की सूखी रेखा तक भी नहीं दीखती थी। उस मलिन मुखसे दम्भकी चिन्ह भी नहीं मिलेगी। आजतक रामहरिके सामने खड़े होकर ऐसा कहने का साहस किसीने नहीं किया था। तेरी ऐसी हिम्मत अरे कौन है ! लगाओ चाबुक ! हाँ लगे।

इतना सुनते ही एक प्यादा कहीं से आकर जिस प्रकार भूखा बाघ शिकार पर कूद पड़ता है उसी प्रकार उस प्रजापर लगा वरसाने थप्पड़, मुक्के जड़ने लगा। वह आदमी जोरसे चित्कार करने लगा—हाह मर गया मार डाला। यह चित्कार सुनकर प्रकाशने बाहर आ आदमीको देखा और पास खड़ा हो गया, वह आदमी प्रकाशको नहीं पहचानता। लेकिन

उसपर आखे पड़ते ही उसे मानो नया बल मिल गया हो, ऐसा अनुभव किया। चित्कार बन्द कर के बोला—आज मुझमें ताकत नहीं कि मैं उलटे मार दे सकूँ। मैं हमेशा दुर्बल नहीं रहूँगा। मेरे न रहने पर भी मेरे साथी, पुत्र नानी जरूर एक न एक दिन बदला लेंगे ही।

“फिर बढ़ बढ़कर बातें करता है।” कह प्यादा फिर मारने लगा। वह आदमी बेचारा बार बार प्रकाशकी ओर देखता है। रामहरिने लक्ष्य किया—यह प्रकाशकी शिक्षाके प्रभावमें पड़कर ऐसा कहता है। ये भाव उनमें थे कि आग बबूला हो गर्जन कर रामहरिने कहा—कौन तेरे पिता पीछे खड़े होते हैं देखूँगा। न जाने कहाँ के भीखमंगे आकर भड़काते हैं। देखूँगा कौन खड़ा होता है। कौन हिमायत करता है। चार सालका खजाना बाकी है। उसपर बढ़ बढ़कर बातें करता है। देखूँगा पर शिक्षा बुद्धि तुझमें कितनी है।

मालिककी बात सुनकर प्यादा दुगुने उत्साहसे मार लगानेमें व्यस्त है। बीच बीच में वह आदमी कहता है—मार कितना मारता है। इतना ही सुना गया, इधर प्यादाको मार, उधर जमींदार साहबका गर्जन, इस चिल्लाहटमें कुछ भी नहीं सुना गया। आदमी मूर्छित हो नीचे गिर गया। छुटा दिखाता है—यह कह प्यादा दाँत पीसकर उस आदमीको उठाने लगा, लेकिन वह नहीं उठता।

रामहरिने एकबार उस आदमीकी ओर और एकबार प्रकाशकी ओर देखकर बोला—जाइये जी ! आप यहाँ क्या करते हैं। यहाँ जमींदारीका काम होता है। आप यहाँ खड़े होकर क्या देखते हैं ?

[एकसौ उनचालीस]

प्रकाशने हँसकर कहा—मैं खड़े खड़े देखता हूँ कि मानवकी प्राणवायु कितनी जल्दी अपना रास्ता ले लेती है ।

रामहरि उत्तेजित होकर बोले—आप यहाँ से जाइये । हमारा यह अञ्चल बहुत नेक था । आपने आकर खराब कर दिया है । भल मनसा-हत मालूम हो गई । आप यहाँ से जाइये ।

प्रकाशने नीरव पड़े हुए आदमीकी ओर देखा । फिर प्यादे तथा और बैठे आदमियों की ओर देखा । वे कुछ बोल नहीं रहे थे, लेकिन प्यादा तीव्र तिरस्कार भाव लक्ष्य कर रहा था बैठे हुए आदमी सोच रहे थे कि हमारा भी क्या कुछ कर्त्तव्य है । रामहरि भय युक्त संकित मन होनेपर भी अपना दाम दिखानेके लिये बाहर वही तेजमय भाव व्यक्त कर रहे थे । मानो कुछ घटना घटी ही नहीं । उन्होंने प्यादाको जोरसे कहा—उठा ले जाओ, पानी छींटा देकर होशमें लाओ और फिर मारो, देखता हूँ कौन आता है बचानेके लिये ।

प्रकाश कुछ काल वहीं नीरव खड़े रहे । फिर तेजोमयी निगाहसे रामहरि की ओर देखा और फिर भीतर चले गये । सबके सामने एक बाहरी अजनबी आदमीके विना बाधाके अन्दर जाना रामहरिको भी बहुत खराब मालूम दिया । उसने समझा उपस्थित जनता को इसकी कैफियत देनी होगी । उसने अपने मनमें सब बल संग्रह करके हँसते हुए कहा— इस आदमी को कहीं खाना नहीं मिला तो यहाँ आकर पड़ा है । मेरी पत्नीका धर्मपुत्र बना है । दो जून खाकर पड़ा है ।

[एकसौ चालीस]

बादमें गुमास्तोंसे कहा—हिसाब देखकर खजाना लेकर सबको विदा कर दो ।

सब जल्दी जल्दी काममें लग गये । लेकिन रामहरि के मनमें वही आदमी बैठा था । कुछ काल बाद प्यादेने आकर कानमें कुछ फुस फुसाकर कहा और खड़ा हो गया ।

बैठे हुए आदमी भयातुर नेत्रोंसे प्यादेकी ओर देख रहे थे । कभी कभी रामहरि की ओर देखकर अपनी आँखें दूसरी ओर घुमा लेते हैं । रामहरिने कुछकाल चुपचाप सोचनेके बाद खड़े हो प्यादे से चुपचाप कुछ कहा और घर के भीतर चले गये ।

—बत्तीस—

घरके भीतर ओसारीमें बैठे प्रकाश और जान्हवी देवी आपसमें बातें कर रहे हैं। रामहरि जाकर खड़े हो गये। जान्हवी देवी हरबरा कर सिरका घूंघट खींचकर एक तरफ हो गई। प्रकाशने हँसते हुए रामहरिके मुख मुद्राकी ओर देखा। रामहरिने वैसे ही खड़े खड़े कहा—देखिये प्रकाशबाबू, आपको यहाँ बहुत दिन रखा—अब आप यहाँ से चले जाइये—नहीं तो....., इतना कहकर चुप हो गये और जान्हवी देवीके मुखकी ओर देख इस कथनकी प्रतिक्रियाको लक्ष्य किया।

प्रकाशने हँसकर कहा—मेरा क्या है ? मैं अभी इसी समय जाता हूँ। मुझे तो केवल माँ की अनुमति चाहिये। आप उनसे कहकर मुझे अनुमति दिलवा दीजिये। मैं चला जाऊँगा। इतना कह प्रकाश बाहर निकल गया।

जान्हवी देवी चिन्ताकुल भावसे नीचेकी ओर ताक रही थी। रामहरिने कहा—जमींदारका घर है। जमींदारी चलानेके लिये न जाने कितनी बातें समझानी बुझानी पड़ती हैं। बाहरी आदमी का यहाँ रहना अच्छा नहीं है। और फिर मैं देखता हूँ कि अगर वह और कुछ दिन यहाँ रहेगा तो मेरी जमींदारी खराब हो जायेगी। २० वर्ष तक परिश्रम कर मैं उसे एक रास्ते पर ला सका हूँ। वह सब उजड़ जायेगी। तुम उसे कह दो

[एकसौ बैयालीस]

वह यहाँ से चला जाय । कुछ दिन रह लिया । नवीनके आनेपर फिर आयेगा । आते जाते रहनेसे अच्छा है । हमेशा यहीं पड़े रहना उचित नहीं ।

जान्हवी देवी कुछ काल तक नीरव रही । फिर बोली—नवीनके आनेमें और दो मास बाकी हैं । उसके आने तक वह यहीं रहे, फिर चला जायेगा । इसके साथ मेरा क्या वास्ता है ? नवीनके लिये मैंने उसे पकड़े हूँ । इसके चले जानेसे यदि नवीन न आये ।

रामहरिने व्यग्रताके साथ कहा—नवीन नहीं आयेगा, जायेगा कहाँ-- मैं उसे जाकर ले आऊँगा । जवान छोकरा है--इसलिये उसका मन बहक गया है । सब दिन क्या वैसे ही रहेगा ?

जान्हवी देवीने सिर हिलाकर कहा—मेरा मन नहीं मानता । तुम नवीनको नहीं ला सकोगे । नवीनके आने तक वह दो मास यहीं रहे ।

रामहरिका धीरज जाता रहा । वे उठ खड़े हुए और क्रोधसे लाल हो, बोले—अच्छा, मैं देखता हूँ वह कैसे यहाँ रहता है । यह कह बाहर चले गये ।

जान्हवी देवी व्यस्त हो प्रतिभाके कमरेमें चली गई । उसने देखा प्रतिभा बैठे सब सुन रही है । जान्हवी देवी--“बहू !” कहकर बैठ गई । बोली—क्या कहती है बहू ! क्या वह चला जाय ?

प्रतिभा निरुत्तर मौन थी । उत्तरके बिना अपेक्षा किये ही प्रतिभाको सुनाकर कहने लगी—प्रकाश जो कहता है मुझे भी कभी कभी अच्छा

नहीं लगता । वह कहता जमींदारी रखना ठीक नहीं है । गाँवके साथ ग्राम्य जीवन-यापन करना धर्म है । लोगोंका उपकार करके उनमें ऐसा मिल जाय जिससे वे समझने लगें कि यह भी हममेंसे एक ही है । तभी उनकी सच्ची सेवा की जा सकेगी । वह कहता है—ठाकुरोंकी सेवा सेवा नहीं है । लोग ही ठाकुर हैं, लोक-सेवा करना ही सच्चा धर्म है ।” ये बातें मुझे अच्छी नहीं लगती हैं । दो पैसे हाथमें होनेसे तो दान धर्म किया जा सकता है । किसीका उपकार किया जा सकता है । हाथमें पैसे न रहनेसे कौन किसका भला क्या उपकार कर सकेगा । अच्छा, यदि भगवान नहीं होते तो ये सूर्य चन्द्र चल भी सकते थे ? भगवान ही तो सभीको चलाते हैं । ऐसा कोई है जो बिना ईश्वरको माने रह भी सकेगा ।

किन्तु जो भी कहे, नवीनके आनेपर सब ठीक हो जायगा । यह ऐसा कहता है, लेकिन नवीनके मुखसे ऐसी बातें कदापि नहीं निकलेगी । नवीनको लानेके लिये ही मैंने उसे अटकवा रखा है । वह जो भी कहे—लेकिन उसके साथ बातें करनेमें शान्ति मिलती है । मेरे साथ तो ठीक पुत्रकी तरह व्यवहार करता है । उसके रहनेसे हमारा भला क्या नुकसान हो सकता है । वे कहते हैं—यह प्रजाओंको भड़काता है । अगर मैं उसे मना कर दूंगी तो वह मान जायगा ।

सारी बातें प्रतिभाने सुनी हैं । लेकिन कुछ भी एक शब्द न बोली—उसके चेहरेसे भी कोई सूचना न मिली । लेकिन प्रतिमा के मनकी अपेक्षा जान्हवी देवीको न थी । उन्हें तो केवल मनकी बातें सुनानी थी । इसीमें उन्हें पूर्ण संतोष है ।

[एकसौ चौआलीस]

जान्हवी देवीने नौकरसे कहा—जा, प्रकाशबाबूको जरा बुला तो ला । फिर अपने आप बतिआने लगी.—मेरा नवीन जल्दी लौट घर आये, एक युग बीत गया । सचमुच वह घर लौटेगा भी ! सचमुच क्या मैं उसका मुख देख सकूंगी ! इतना कहते कहते कण्ठ रुद्ध हो गया । उधर प्रतिभा की आँखें छलछला आईं । •वह बहाँसे उठकर चली गई।

नौकरने आकर कहा—प्रकाश घरके भीतर नहीं जायेंगे । जान्हवी देवी थोड़ा विरक्त हुई । जोर जोरसे बरबराने लगी । भला घरके भीतर आने से क्या बिगड़ जाता था ?

—तीस—

पुराने शास्त्रकारोंने एक स्वरसे यह घोषणा की है कि नर की अपेक्षा नारीकी बुद्धि उत्तम है। इसलिये भयभीत हो नारीसे हमेशा सावधान रहनेके लिये पुरुषोंको उपदेश देते आये हैं। इस ओर शास्त्रकारों का कथन ठीक है कि भूल, इस विषयकी आलोचना करनेका समय नहीं है। परन्तु यह देखा जाता है कि प्रतिभामें समझनेकी शक्ति अपूर्व है और पुरुषकी अपेक्षा समझशक्ति उत्तम है। बातें करनेमें चतुर है—प्रकाश जब जब जान्हवी देवीके साथ बैठे बैठे बातें करते, प्रतिभा वहीं पास बैठे सब सुना करती। कभी कभी बातचीतमें भी शामिल होती। प्रकाशकी हर बात पर गौर करती और आत्मसात करनेकी कोशिश करती। वह यह समझ रही थी कि मेरे स्वामी जो चाहते थे प्रकाश वही सब बातें कहते हैं। एक रोज बातचीतके सिलसिलेमें कहा—माँ ! तुम इतने बड़े पक्के घरमें रहती हो, काम करने, सेवा करने के लिये नौकर चाकर हैं। जो इच्छा होती है, खाती पीती हो, खाना पीना तुम्हारे लिये बड़ी बात नहीं है। दिन दिन अधिक धन बढ़े यही चिन्ता मनमें रहती है; लेकिन देखो—तुम्हारे इसी घरके आसपास ऐसे आदमी हैं जिनको दो जून खाना नहीं मिलता। तन ढकनेके लिये कपड़े नहीं मिलते। अभाव के बस हो मां बेटीके प्रति स्नेह नहीं दिखला पाती। पुत्र मां की सेवा करनेका समय नहीं पाता। स्वामी पेट-चिन्ताके कारण विदेशमें रहता है। वह वर्षमें एक बार भी स्त्रीका मुख देखनेका सौभाग्य नहीं पाता।

[एकसौ छियालीस]

अवश्य जान्हवी देवी “जिसके भाग्यमें जो वदा रहता है, भोगेगा ही; उसमें मनुष्यका क्या दोष”—कहकर बात उड़ाने की चिन्तामें थी; लेकिन यह बात प्रतिभाके मनको खटकी। उसे अपने माँ-बाप के घरकी बात याद आई। उसने सोचा—आज मैं बड़े घरकी बहू बनकर आई हूँ और आनन्दसे हूँ। माँ घरके सारे कार्य करके थक जाती होगी, उसकी सहायता करनेवाला कोई तो नहीं है। पिता-माता मेरे विवाहके बाद किस प्रकार सुखसे रहनेका उपाय सोचा करते थे—‘बिटिया अगर बुद्धिमान् होगी तो क्या हम इसी प्रकार दुःखसे जीवन बिताया करेंगे !’

पिताकी पुरानी बातें याद करके उसे अपने ऊपर लज्जा और श्लानि हुई कि वह इस प्रकार ससुरालमें सुखमें है और माता-पिता दुःखमें अपना जीवन बिताया करते होंगे। मेरे विवाहके समय मेरा भाई सिद्धेश्वर साथ आया था। रामहरिने उसके साथ कैसा अपमानजनक व्यवहार किया था। राह खर्चके बिना उसे विदा कर दिया गया था। मुझे उसके साथ एक बात भी बोलनेका मौका नहीं दिया गया—आदि आदि नाना प्रकारकी पिछली बातें उसको याद आ गईं। उसे उस समय ये बातें नहीं चुभी थीं। उसने सोचा था कि शायद विवाहके थोड़े ही दिनोंके बाद मायकेमें से किसीका यहाँ आना ठीक नहीं हुआ है। लेकिन आज वे बातें याद आईं और मन ही मन उसे लज्जा, अपमान और क्रोधका सञ्चार हो गया। मन ही मन उसने कहा—गरीब आदिमियोंके प्रति बड़े आदिमियोंका इतना अनादर !

[एकसौ सैंतालीस]

एक रोज बातोंके सिलसिलेमें प्रकाशने, मनुष्यके ऊपर मनुष्य किस प्रकार अत्याचार करता है, उसका दिग्दर्शन कराया था। नारी-समाजकी पुरुष-समाजने घरकी सोना-चाँदी सी सम्पत्ति समझ चहरदिवारीके भीतर संभाल कर रखा है। संसारके विषयोंको समझना नारियोंके लिये मुश्किल हो गया है। पुत्र जैसा है, लड़की भी वैसी ही है। सम्पत्तिमें लड़का तो अधिकारी है लेकिन लड़की अपने भाग्यको थाम्भे बैठती है। विवाह होते ही स्वामीका मनोभाव है नारी उसकी एकमात्र सेवादासी है। किन्तु यह भाव नहीं रहता कि स्वामीको स्त्री की जितनी जरूरत है, स्त्रीको स्वामीकी उतनी जरूरत है। विवाहके बाद स्वामी और स्त्रीका सम्बन्ध रह जाता है—केवल बच्चे पैदा करना। मानो उसके जीवनमें और कुछ है ही नहीं। इसका परिणाम होता है यह कि जितने आदमी हैं उनसे आधे हो जाते हैं बेकार और वे भरे बस्तेके समान घरके एक कोनेमें पड़े रहते हैं।

जान्हवी देवीने हँसते हुए कहा—पुरुष और स्त्रियोंको विधिने तो बनाया है आदमी थोड़े ही बनाता है। लेकिन इस बातको प्रतिभा अपने मनमें भली भाँति जान चुकी थी। नाना प्रकारकी भावनाएँ उठकर उसके हृदय-सागरमें लहरें ले रही थीं। वह सोचने लगती है—वास्तवमें स्त्री समाजके प्रति पुरुषकी सुदृष्टि नहीं है। जिस प्रकार हाट बाजारसे गोख खरीद कर लाते हैं और गौसारमें बांध देते हैं उसी प्रकार विवाहके नामसे कन्याओंको लाकर घरके अन्दर बन्द कर देते हैं। उसमें स्नेहबन्धन बिल्कुल नहीं है। केवल समाजका पतन ही उस गौसारकी मीत बन खड़ा है। उसे उस रातकी घटना याद आ गई, जब कि वह स्वामीके पास

मानो कृपाप्रार्थी होकर गई थी। प्रार्थीकी दरखास्तपर विचारपति जैसे विचार करता है वैसे ही मानों उन्होंने दरखास्त नामंजूर कर दी। इतनी अवज्ञा !! लेकिन उसका मूल कारण है नारीको अपनी मान-मर्यादा और महत्वका ज्ञान नहीं है। अगर मैं अपना महत्व समझती होती तो मेरे स्वामी मेरी अवज्ञा न कर खातिर करते। यह गॉठ उसके मनमें रह गई।

एक दिन अधीर होकर जान्हवीने जब नवीनके काराबासके सम्बन्धमें खोद खोदकर प्रकाशसे पूछा तो उसने कहा—मैं जो कहता हूँ वह है विप्लव। इसका अर्थ होता है यह कि इसके कारण मनुष्य, मनुष्यके ऊपर अत्याचार नहीं कर सकता। सभी एक दूसरेके साथ अपने सगे भाई-सा बर्ताव करेंगे। सहायता देंगे, तभी यह दुनिया स्वर्गमें परिणत होगी। कलियुगके स्थानपर सतयुग आयेगा। इसलिये अनेकोंको विप्लवी बनकर निकलनेकी जरूरत है। अर्थात् इस कामकी सफलताके लिये विप्लवी अपने जीवनको वैसे ही फेंक देंगे जैसे पानीमें फेंक दिया जाता है। खाना मिलेगा कि नहीं, रहनेके लिये स्थान मिलेगा कि नहीं, लोग अच्छा कहेंगे कि बुरा, नीचे गिरेगा कि ऊँचे उठेगा, प्राण जायेंगे कि रहेंगे—आदि बातोंपर बिना विचारे अपने काममें लग जाना चाहिये। खुद इस प्रकार काम करेंगे कि किसीको जग भी तकलीफ न मिले। जहाँ कहीं अत्याचार होता हो वहाँ जाकर अत्याचार-शक्तिोंकी सेवा करना, सहायता करना, अत्याचारके विरुद्ध उन्हें खड़ा करना और खुद खड़े हो जाना, यही है प्रधान काम।

इस काममें विपद है। ज़खीनुने सोच समझकर ही इस काममें योग दिया

[प्रकृषी अनुवाक]

है। वह जेलखाना, या फाँसी की भी परवाह नहीं करेगा। दुख तभी बड़ा बनता है जब आदमी उसकी परवाह करता है। अगर दुखकी परवाह न की जाय तो दुख खुद लज्जित हो जाता है। इसलिये नवीन को कुछ भी दुख नहीं है वह खूब खुश है। आनन्दमग्न है।

जान्हवी देवीने इस कथनसे सन्तुष्ट न हो प्रश्न किया—क्या खाता है ? क्या पहिरता है ?

प्रतिभा मन ही मन सोचती थी कि मैं अपने जीवनको भी इसी प्रकार फेंक सकती हूँ कि नहीं। उसने आगे सोचा—मेरे तो कोई नहीं हैं। रास्तेमें सैकड़ों भिखारी खड़े होकर माँगते हैं और पेट भरते हैं। अतएव चिंता की बात सामने यह नहीं थी कि पेट कैसे भरेगा ? उसके मनमें एक और प्रश्न उठा—तुम जैसी युवती इस संसारमें अपने आपकी रक्षा दुष्टोंके हाथ से कर सकेगी तो ! इस भावनाके मनमें उठते ही प्रतिभा जरा शङ्कित हुई। लेकिन हिम्मत किये सोचने लगी—जीवन तो मेरा है अगर मैं उसे खोनेका सङ्कल्प कर लूँगी तो मेरा कोई क्या कर सकता है। रावण तो इतना बड़ा बली था लेकिन वह सीताका सम्मान नष्ट नहीं कर सका। अगर सीताका सम्मान नष्ट करनेका उद्यम करता भी तो खुद ही भस्म हो जाता, अन्यथा सीता खुद जीवित न रहती।

सीताकी यादने प्रतिभाके मनमें अद्भुत बलदान किया।

प्रकाश इस प्रकारकी जितनी बातें करते प्रतिभा उन सभीको ग्रहण करके अपने मनको उसी प्रकार तैयार करनेमें लगी रहती।

[एकसी पचास]

आरंभमें महेन्द्रबाबूके लेख पढ़कर उसकी जो चिंताधारा परबत गुफेको भेदकर फूट निकली थी वही आज चारों ओर फैलकर गङ्गाका आकार धारण किये है। लेकिन जिस प्रकार छोटी छोटी नदियाँ बड़ी नदीमें मिलकर अपने लोह उत्पत्ति-स्थलको भूल जाती हैं वैसे ही प्रतिभा महेन्द्र बाबूको भूल चुकी थी। अनेक दिनसे वह मासिक पत्रिका पढ़ना बन्द किये है। कारण उनमें ऐसे अनेक लेख निकले थे जो उसको अच्छे नहीं लगे। विशेषतः महेन्द्र बाबूके अनेक लेखोंके प्रति उसकी घृणा भी हो गई थी। प्रकाशने कहा था कि महेन्द्र पैरोंसे कुचलकर नवीनके ऊपरसे चला गया था—आदि बातोंसे प्रतिभाने समझ लिया कि महेन्द्र अति लोभी आदमी है, दुनियाका मंगल वह नहीं चाहता है।

इस प्रकारकी चिन्ता और कार्यसे महेन्द्रको प्रतिभाने मनसे पोंछ दिया है। आज कलकी प्रकाशके प्रति रामहरिकी विरक्ति प्रतिभाके मनको विचलित नहीं कर रही थी। कारण वह आत्मचिन्तामें ऐसी लिप्त है कि प्रकाशके जाने और रहनेमें लाभ-हानिकी चिन्ता करनेकी फुरसत उसे नहीं थी। वह सोचती थी मैं क्या कर सकती हूँ—कैसे करूँगी, इस प्रकारकी विप्लवी कल्पनामें इतनी डूबी थी कि प्रकाश भी अपना प्रभाव उसपर विस्तार करनेमें असमर्थ से थे। किन्तु फिर भी उसकी इच्छा थी कि अच्छा ही होता प्रकाश यहाँ और कुछ दिन रह जाते।

—चौतीस—

रामहरि घरसे निकले और अविलम्ब थानेको खबर भेज दी कि एक बाहरका कोई अजनवी आदमी आकर सरकार विरोधी बातचीत कहकर लोगोंको भड़काता है। अतएव उसके परिणाम स्वरूप बहुत जल्दी भगड़ा-फिसाद होनेकी सम्भावना है।

इस खबरके साथ ही थानेदारको जल्दी चले आनेके लिये निमन्त्रण भी दे दिया।

इधर प्रकाशसे बोले—प्रकाश, अगर तुम अभी, इसी वक्त चले न जाओगे तो तुमको पुलिसके द्वारा गिरफ्तार करवा दूँगा।

प्रकाशने हँसकर कहा—मैं पुलिसको क्या डरता हूँ ?

इस कथनको सुन रामहरि मन ही मन जरा दबे। कुछ काल चुप रहे और अन्दर चले गये। गलेकी हुंकार और खाँसनेकी आवाजसे अपने आने की खबर दी। मारे क्रोधके लाल रामहरि जोरसे बोले—उस आदमीसे कह दो चला जाये। अन्यथा अभी थोड़ी देरमें पुलिस आकर पकड़ कर जेल दे देगी। फिर मेरा दोष मत देना। यह कह रामहरि बाहर चले गये।

[एकसौ बावन]

जान्हवी देवी बैठी प्रतिभासे बातें करती थीं। विस्मित हो दोनोंने एक दूसरेको देखा। मानो आपसमें यह विचार विमर्श करती हों—अब क्या किया जा सकता है? प्रतिभा धीरेसे बोली—चले जाना ही अच्छा है। हमारे घरमें रहकर वे क्यों भला अपमानित हों!

जान्हवी देवी भी एक दीर्घ निश्वास छोड़कर जमीनपर लकीरें खींचते हुए गुनगुनाते बोली—चले जानेसे मुझे हानि नहीं, मैं तो नवीनके लिये उसे अटकाये हुए थी। फिर नौकरको बुलाकर कहा—प्रकाशको जाकर कद्व दे—चले जायें।

नौकरके द्वारा खबर पाकर प्रकाश अपना सामान लेकर उसी समय चले गये।

रामहरि कचहरीमें चिन्ताकुल बैठे मुंशीसे खजानेका हिसाब समझ रहे थे। कितना खजाना आया, कितना बाकी है, कितना खर्च हुआ—आदि आदि बातें प्रजाओंको सुना सुना कर कह रहे थे। मिली हुई खजानेकी रकमको जालीदार सूतेकी थैलीमें जमा कर रहे थे।

कचहरी भरी थी। इसी समय प्रकाश जाकर रामहरिके सामने खड़े हो गये। उसके मुखमें न तो हँसी थी न दुःख। उनके खड़े होते ही सभी आदमी उनकी ओर देखने लगे। कुछ कालके लिये खजाना देना बन्द हो गया। रामहरि भी जरा व्यस्तसे हुए। अपने शरीरको आसनसे हिलाते हुए हँसीका स्वांग भरते बोले—जाते हैं, जाइये। कुछ मनमें मत सोचियेगा। यह मूर्ख अज्ञान है अन्यथा.....।

[एकदम [तिस्पन]

प्रकाशने जनताकी ओर अंगुलीसे इंगित करके कहा—“इनको आप मूर्ख कहते हैं। इसलिये कि ये अपनी ताकत नहीं समझते। ये लोग आपके विभवको देख कर डर जाते हैं। पुलिसकी लाल पगड़ीसे भय करते ह। पुलिसका भय मनसे चले जानेके बाद ये ही तो बुद्धिमान होंगे, इन्हींको देश चालाक कहेगा और यही आपके विभवके रक्षक भी होंगे।

मैं जाता हूँ, पर डरसे नहीं। मुझे आपके घरसे, माँ ने चले जानेके लिये कह दिया है, इसीलिये मैं जाता हूँ। मेरी तो इच्छा है कि मैं हमेशा यहीं रहूँ, सो यह भविष्यपर निर्भर करता है। लेकिन प्रकटरूपसे हो या अप्रकट, मैं यहाँके दुखी हृदयमें हमेशा रहूँगा। और आप भी मुझे हमेशा याद करते रहेंगे। मैं जाता हूँ।” यह कह प्रकाश शीघ्रताके साथ वहाँसे चला गया।

वहाँ जितने आदमी थे सभीने उत्तेजनाका अनुभव किया। रामहरिने खुद अन्तरसे एक प्रकारके डरका अनुभव किया। लेकिन लोगोंको भयकी बात मालूम न हो अन्यथा सब सिरपर सवार होंगे इसलिये तेज दिखलाते हुए बोले—हाँ, काम करो, उधर क्या देखते हो। कितने ऐसे घूमा करते हैं। इसी प्रकार लोगोंको भड़का कर उत्तेजित करते हैं। उनका सर्वनाश करते हैं। चले गये नहीं तो अभी पुलिस आकर गिरफ्तार करती।

इतना कह कर समझ गये कि लोगोंने ठीक समझ लिया है। उनकी क्षमताके सामने कोई कुछ भी चीं तक नहीं बोल सकता।

[एकसौ चौवन]

लेकिन वहाँ जितने आदमी बैठे थे सभीने एक दूसरेको देखा—मानो गभीर मन्त्रणा आँखोंके इशारेसे शुरू की जा रही हो।

एक सुरमें जब अनेक वाद्ययन्त्रोंको बाँध दिया जाता है तब एकको बजाने से जैसे सभी बाजोंमेंसे अपने आप सुर निकलता है, उसी प्रकार जनताके दिलमें भी समय आ जानेपर एकके हियकी झड़्कार अपने आप अन्य दिलोंको भी आघात करती है। इसके लिये किसी प्रचारकी या किसी उत्तेजनाकी जरूरत नहीं पड़ती।

जो आदमी वहाँ बैठे थे आपसमें फुसर-फुसर करने लगे। उनके दिलमें एक प्रकारकी हलचल देखी गई। रामहरिने अपनी क्रोधदृष्टिसे उनकी ओर देखा—और उच्च स्वरसे बोले—क्या हो रहा है ? जल्दी जल्दी काम खतम करो।

उन्हींके बीचसे एक आदमीने कुछ कह दिया, वह ध्वनि रामहरिके कानमें लगी। चीत्कार कर बोले—‘क्या कहा ? कौन कह रहा है ?’

एक बूढ़े ने हाथ जोड़कर कहा—जी, हम आपकी प्रजा हैं। पुत्रके समान हैं। आप हैं हजुर माँ बापके समान। माता पिताका कर्तव्य है सन्तानका पालन पोषण करना, न जानसे मार डालना ?

‘क्या कहा—कौन किसको जानसे मार डाला ? फिर तो कह’—रामहरि के इस चीत्कारके साथ मिला हुआ स्वर निकला—“वह विचारा मार खाकर मर गया। यह महान अन्याय है। ऐसा तो कभी देखा नहीं गया।” यह

[एकसौ पचपन]

स्वर क्रमशः बढ़ चला, रामहरिके दिलमें वह उत्तेजना अधिक देर नहीं रही। अति नरम स्वरसे शान्त भावसे कहा—सुनो। ऐसे क्यों होते हो ? किसने मारा, कहाँ क्या हुआ—मुझसे कहो।

कौन किसकी सुनता है, सभी हो हो चिल्लाकर उठ खड़े हुए। रामहरिकी यह कल्पनासे बाहरकी बात थी कि जो अभी तक मांझीके समान चुपचाप बैठे थे—एकाएक भनभना कर उठ खड़े हुए। रामहरिको हठात् खबर लगी कि जो आदमी मारसे मर गया था, जिसको जल्दी जला डालनेके लिये उसने हुक्म दिया था, वह काम सम्पन्न नहीं हुआ है। उसने देखा आदमी वैसे ही मरा पड़ा है। जलानेके लिये नहीं ले जाया गया। जिस पियादेने मारा था और मर जानेके बाद जिसकी जलानेका हुक्म दिया गया था, वह कहीं भाग गया है।

लोग रामहरिकी कचहरीसे उठे और वहीं गये जहाँ वह आदमी मरा पड़ा था। चार आदमियोंने उसे कन्धेपर उठा लिया। बाकी घेरकर खड़े हो गये। जुलूस लेकर चले।

कर्तव्य रामहरिके दिमागमें नहीं आ रहा था। भय और क्रोध दोनोंने ही रामहरिको कस लिया था। उनको लगा—मानो विपद समुद्रकी लहरोंके समान उमड़ी चली आ रही है; लेकिन तत्परताके साथ लहरोंको सिरसे तोड़कर आगे बढ़नेका दम्भ भी बटोर रहे थे। उनके मनमें आया—इस समय ऐसी हालतमें प्रकाशको घरसे जाने देना उचित काम नहीं आ।

—पँतीस—

दावाग्निकी तरह यह बात, बात-बातमें फैल गई कि रामहरिने एक आदमी को मार डाला है। प्रजा मिल गई है। जमींदारी भरमें यह आदेश चला गया, जिसके फल स्वरूप जमींदारके गुमास्तोंको कोई एक बून्द पानी तक नहीं देते। थानेके मुंशीसे लेकर पुलिस साहेब तथा उच्च अधिकारियों तक से मिलकर जो कुछ करना था रामहरिने किया। मृत देह परीक्षार्थ जाजपुर डाक्टर खानेमें जा चुकी थी। लेकिन डाक्टरने मत दिया—वात-कफमें आदमीकी मृत्यु हुई है। रामहरिके पैसेने किसी भी सरकारी कर्मचारीमें साधुताको रहने नहीं दिया। फिर भी दरखास्तपर दरखास्त प्रजागण भेज रहे हैं। यह बात जानकर रामहरि प्रजाकी एकताको तोड़ने में लगे।

उस समय थानेके मुंशी हमेशा रामहरिके घरमें रहते। अपने खर्चसे रामहरिने ४-५ बन्दूकधारी पुलिस द्वारपर खड़ा कर रखी थी। रामहरि इतना डर गये थे कि घरसे कहीं बाहर न निकलते। रातको घरसे दूर जरा भी कुछ आवाज या शब्द सुना जाता तो भूट बन्दूकधारी पुलिस सिपाहीको भेजकर पता लगाते कि क्या हो रहा है। खुद एक प्रजाको मरवा डालनेके कारण उनको हमेशा विभीषिकांका डर लगा रहता था कि कहीं कोई आकर मार न डाले !

इस हालतसे जान्हवी देवी भी अति म्रियमाण हो गई थीं । प्रतिभा चाकर के द्वारा सारी बातें तन्नतन्न करके समझा करती थी, लेकिन चाकरोंकी सहा-नुभूति भी प्रजाओंके साथ थी, वे यह अनुभव करते थे कि नई मालकिन प्रजाके साथ हैं । कारण अनेक बार नौकरोंके आगे प्रतिभा कहती थी कि—“गरीबोंका जीवन जैसा है बड़े आदमियोंका भी वैसा ही है, गरीब होनेसे क्या उसके जीवनका मूल्य नहीं है ?” इधर प्रजाओंने यह भी सुना है कि नवीन हमारे ही मङ्गलके लिये जेल गये हैं । और भीतर बाहर यह खबर फैल गई है कि नवीनकी पत्नी भी प्रजाओंके पक्षमें है । आगे ये ही तो जमींदारीके मालिक होंगे—आदि खयाल प्रजाओंके मनको और अधिक उत्साहित कर रहा था । नवीनका नाम ले लेकर सारी प्रजा एक हो रही थी, यह बात भी रामहरिके कानमें जा रही थी । लेकिन प्रतिभाके बारेमें उनको किसी प्रकारका सन्देह नहीं था । फिर भी एक दिन भोजन करते समय कह ही तो बैठे—‘गांवके लफंगे सब कहते हैं हमारी बहू भी उनकी ही तरफ है ।’

जान्हवी देवीने हठात् कहा—कौन कहता है ? मेरी बहू किसीके सामने भला मुख भी खोलती है ?

रामहरिने सन्तोष जाहिर करते कहा—तो क्या मुझे मालूम नहीं; लेकिन इसीसे समझो इन सबकी गति । यह कह हँसने लगे । उन्होंने यह अनुभव किया कि कमसे कम मैंने पत्नीको अपने पराक्रम और प्रजाओंके अन्यायके सम्बन्धमें समझा तो दिया है ।

[एकसौ अठावन]

रामहरिके खाकर चले जानेके बाद प्रतिभा अपने कमरेसे जान्हवी देवीके पास गई। जान्हवी देवीने जल्दी पानकी पेटी बहूके आगे सरका दी। उन्होंने सोचा—ससुरके लिये पान लगाने बहू आई है। प्रतिभा सूखे मुख धीरे धीरे बोली—माँ ! क्या बोलते थे.....।

जान्हवी देवी बीचमें ही बात काटकर बोली—तू उससे क्या पायेगी। बाहरी आदमी जिनके मुखमें जो आता है बकते हैं। पुलिस अपने आप सबको ठंडा कर देगी।

प्रतिभाने नीचे मुख करके दृढ़ स्वरसे कहा—लोग जो बोलते हैं, सत्य है। एक आदमीको मार मार कर मार डाला गया, इससे आदमी क्या बिगड़ेंगे नहीं ? और अगर पुलिस उनके ऊपर अत्याचार करे तो फिर अन्याय की सीमा नहीं रहेगी। इसीको बन्द करनेके लिये ही तो कितने आदमी जेल गये हैं। जेलसे लौटकर वे क्या कहेंगे ?

जान्हवी देवीका मन हठात् नवीनकी ओर गया। इस गोलमालको सुनकर तो वह घर लौटेगा ही नहीं। इस आशङ्काने उनको घेर लिया। विह्वल हो बोली—तूने सत्य कहा, बहू। भगवान ! तुमने ऐसा काम किया। उसकी मुक्तिके समय यह गोलमाल हो गया। सचमुच वह नहीं आयेगा ना-आ...ऐसा कह वे अवाक हो गईं। उनको और कुछ भी नहीं सूझा।

—छत्तीस—

सूर्यकी किरणें विक्षिप्त होकर चारों ओर फैल गई हैं, इसलिये उत्कटताका हास हो गया है। अन्यथा किरणोंके एक स्थानमें एकीभूत होनेसे अतृप्त-नीय हो जाता। क्रांचके ऊपर एकत्र किरणें आगका काम करती हैं। ठीक मनकी वही हालत है। उसे विक्षिप्त अवस्थासे एक जगह केन्द्रीभूत करनेका उद्यम करनेसे मनमें नाना प्रकारकी उत्कट चिन्ताएँ आती हैं। जिनको दूसरे समय सोचना भी असम्भव हो उठता है। मनुष्यका मन बड़ी दुनियासे आकर कारागारमें संकुचित बना छोटी सी दुनियामें बाध्य हो विचरण करता है। इसलिये जो लालसा व भावनाएँ बड़ी दुनियामें दबी पड़ी थीं, मालूम नहीं था कि हैं कि नहीं, वही इस कारागारमें उत्कट रूपसे जाग्रत हो अंगड़ाई लेती हैं। जो चोर है वह अल्प बुद्धि खर्च करके जेलमें बड़ा हो उठता है। जो देशके लिये जेल गये हैं वे अनुभव करते होंगे कि कितनी छोटी छोटी चीजोंके लिये प्राण व्याकुल हो उठते हैं। कितने लुप्त भाव जाग उठते हैं। नवीन भी विस्मित था कि जो भाव मनमें कभी आते न थे, जिनका चिन्ह तक न था, आज वही यहाँ सामने प्रवल वेगसे उठते हैं।

वसन्त-ऋतुका आरम्भ है। कारागारके बीचमें स्थित पेड़ पौधे अपनेको नूतन वेशमें सजाकर निर्दयभावसे असहाय बन्दियोंका उपहास करते हैं।

पेड़ोंकी डालियोंपर निवास करनेवाले जोड़ीदार पक्षी आपसमें बतिया कर चीं चीं शब्दसे अपनी भाषामें परस्पर बन्धियोंके प्रति विद्रूप भाव दिखला कहते हैं—तुम कैदी हो, हम मुक्त हैं !

वसन्तका जन्म कविकी कल्पनासे नहीं हुआ है, इसने तो खुद अनेक कवियोंकी सृष्टि की है। पर यह बात नवीन भावावेशके वस हो खूब समझता था।

यह ऋतु ही ऐसी है, मनुष्यका जीवन नीरस होनेपर भी आज वही सरसता खोजता है। और जब सौ सौ वर्षके बूढ़े भी तरुणीकी खोजमें व्याकुल होते हैं तो ऐसी हालतमें युवक नवीनके हृदयमें भी प्रेम-पिपासा जागना स्वाभाविक है। वसन्त ऋतु युवक-युवतियोंके मनमें प्रेम और कामोद्दीपन जाग्रत करता है। इसकी बड़े बड़े कवियोंने प्रशंसा की है सच, लेकिन नवीन की तरह युवकोंके लिये तो यह महान अपराध हो सकता है। वे मनकी लगामको अपने हाथ पकड़े रहनेकी ताकत नहीं पाते हैं। उनकी यह प्रबल इच्छा होती है कि अपना प्रेम किसीको दान करें और दूसरेके प्रेम प्राप्त करें। मन ही मन एकान्तमें नवीन नीरस कल्पना किया करते हैं कि हमारे पास प्रेमके आदान प्रदानका साधन तो है। विवाहके समय जब हाथ मिलाया था उसी समय एक अपूर्व भावसंचारका अनुभव किया था, वह आज उनको याद आता है। जितने दिन प्रेमका अनादर कर वह घरमें था वह भी उसे याद आता।

नवीनके मनमें विरहकी अतीव वेदना अनुभव होने लगी। नारीके प्रति जो घृणा भावना थी, विप्लव कल्पनामें जो स्मर नाशककी प्रतिमूर्ति है

[एकसौ इकसठ]

वह सामनेसे दूर हट गई । उसने सोचा—प्रतिभाका अनादर मैंने किया है, अनुचित है । उस विचारीका भला क्या दोष है, न जाने कितनी आशा-तरंगोंके बीचमें अपनी नौकाको खेकर लाई थी । मैंने उसे ठेल दिया । उसके मनमें कितनी चोट लगी होगी ? उसका सारा जीवन दीर्घ-निश्वासमय हो गया होगा । आज मैं जिस प्रकार प्रतिभाके लिये कातर हूँ यह भी मेरे लिये वैसे ही व्याकुल होती होगी । आते समय उसे एक शब्द भी तो प्रेमसे नहीं बोलकर आया । कितने प्रेम और सुहागसे मुझे बुलाने आई थी । नव-विवाहित युवतीके लिये यह कम न था । मैंने उसके भावोल्लासको पदाघात किया है—यह मूर्खताका काम हुआ है । प्रेमसे समझा बुझाकर भी काम चल सकता था । नवपल्लवित वृक्षको कुठाराघात करके खण्ड खण्ड करनेके समान ही नवमुकुलित हृदयको छिन्न-भिन्न मैंने कर दिया है । अगर प्रतिभासे मुलाकात होगी तो मैं भला क्या कैफियत दे सकता हूँ ? किस मुखसे प्रथम बातचीत शुरू करूँगा ? क्या उसके साथ मुलाकात होगी ? क्या तमाम जीवन इसी प्रकारकी भयानक यन्त्रणा सहता रहूँगा ? देशके प्रति मेरा जैसा कर्तव्य है उसके प्रति भी वैसा ही है, क्या इस कर्तव्यको पालन करनेसे देश-काममें त्रुटि आयेगी ? ऐसा क्यों होगा ? कोशिश करनेसे प्रतिभाको अपने पथका पथिक बना सकता था—ऐसी चेष्टा मैंने क्यों नहीं की ? इस चिन्ता की ओर मेरा मन क्यों नहीं गया !

नवीन इसी प्रकारकी चिन्ता, कल्पनामें बूझता उतराता । इसी समय दो गौरैया आपसमें खेलते चीं चीं करते नवीनके सिर पर गिरी और उठकर

चली गईं । नवीन हँस पड़ा । मेरी हँसी करती हूँ । मेरे मनकी बात जान कर मेरी निन्दा करती हूँ । वास्तवमें मैं दोषी हूँ । बड़ी भूल की है मैंने । अच्छी बात है, करो जितना जी में आये । जितना उपहास करोगी सब मैं सहन करूँगा । लेकिन मुझे उपाय कौन बतलायेगा कि भ्रम संशोधन ऐसे हो ! जेलसे मुक्त होते ही कुछ कालके लिये घर जाऊँगा । माता-पिताको समझाऊँगा कि मेरे जीवनकी गतिमें बाधक न बनो । प्रतिभा से खुले दिलसे क्षमाप्रार्थना करूँगा । मैं उसे अपनी सहधर्मिणी बनाऊँगा । मुझे विश्वास है कि वह मेरी बात मानकर आनन्दके साथ मेरा पदानुसरण करेगी, अगर वह मेरे साथ आनेके लिये तैयार हो जाय तब ! तो मैं और वह एक साथ रहेंगे । सब जगह साथ-साथ जायेंगे । किन्तु यह भी तो हो सकता है कि मुझसे बातचीत भी न करे, रुस जाये । उस अभिमानको मैं सह लूँगा । कारण वह मेरी भूल जो है । वह अभिमानसे जीत जायेगी तो फिर खुश भी हो जायेगी । लेकिन मुझे मुक्ति मिलती है कब ! अभी तो और तीन मास बाकी हैं । नब्बे दिन ।

दीर्घ निश्वासके साथ नवीनके मनकी चिंता खतम हो गयी । लेकिन वसन्त उसे शान्ति कहां देता है !

—सैंतीस—

देश-विप्लवको दबानेके लिये उस समयके शासक-वृन्द जो दमन-लीला चलाते थे उसीके फलस्वरूप लाखों व्यक्ति जेलमें हैं । किसीके घरमें आग लग गई, पुलिसको शक हुआ और उस व्यक्तिको पकड़ने गई, दर्शक जमा हो गये, उनको भी पकड़ लिया गया । अपराध ! पुलिसको मारनेके लिये जमा हुए थे—हाकिमने ६-६ मासकी जेल दी । किसीको साल-साल भर । किसी राजाके शासनसे प्रजा असन्तुष्ट हुई, जब लोग सरकारके पास प्रार्थना करने गये तो रास्तेमें पुलिसने उनपर गोली चलायी, लोग मरे—जो बचे उनको जेल मिली । घर द्वार लूट लिया गया । गांव गांवके सभ पुरुष जेल भेज दिये गये । किसीको २, किसीको ३ सालकी सजा हुई इसी प्रकार विप्लवके हजारों बन्दी कटक जेलमें बन्द हैं ।

अब नवीन चोर डाकुओंके साथ नहीं था । वह अब राजनीतिक बन्दियोंके साथ है । जो अभी आये हैं उन लोनोंने पहलेसे नवीनका नाम सुना था । उनके साथ कारागारमें रहकर आनन्द अनुभव करते हैं । नवीन ऐसा व्यवहार करता कि उन लोगोंका साहस कम न होता । लेकिन कभी कभी नवीनका मन दब सा जाता । सोचता—इतना अस्थाचार, अनाचार, निरस्त्र निरीह लोगोंको दबानेके लिये, घर जलाना, घर लूट लेना, गोली चलाना और फिर ऊपरसे जेल—कब तक ऐसा चलेगा ? मनुष्यकी

आशाके दीप न बुझने तक क्या ऐसा ही चलता रहेगा ? इसकी इतिश्री क्या नहीं है ? नवीनको ऐसी ही चिन्ताएँ मथे डालतीं, कभी कभी उत्तेजित कर देतीं । अपने जीवनको बलिवेदीपर चढ़ाकर अत्याचारके विरुद्ध खड़े होनेके लिये उनमें उत्साह होता । उसके साथ साथ उसका कर्तव्य-ज्ञान उसे दबाये हुए था । इतने आदमी आज विप्लवके नामसे सर्व-स्वन्त बने, गृहहीन हुए । प्रकाशके निर्देशानुसार मैं इसका अग्रणी हो काम करता था, लेकिन अब मुझे तो आगे बढ़ जाना होगा । ऐसा न किया तो अत्याचारसे डर कर लोग दब जायेंगे । कितनोंको दम्भ धर कर खड़ा होना चाहिये ।

जेलसे मुक्त होते ही मैं उन अत्याचारित अश्वलोंको जाऊँगा । सबको साहस दूँगा और उत्तेजित करूँगा । इसके फलस्वरूप अगर मुझे फिर जेल आना होगा तो हो । आजीवन कारावास अच्छा है लेकिन अत्याचारके सामने कभी नतमस्तक नहीं होना चाहिये ।

इस प्रकारकी कल्पना जब मनमें उठती तो उसके हृदयके कोनेसे एक प्रकार की आर्त्तनाद निकलती थी । सोचता, तो क्या यह वसन्तका अभियान व्यर्थ हुआ ? उसने जो आशा किये हाथ पकड़ा था, क्या उसके दीर्घ निश्वासके धक्केको सम्भालनेकी शक्ति मुझमें है ? कान लगाकर नवीन बड़े ध्यानसे इस ध्वनिको सुना करता । अनुकम्पासे उसका मन भर जाता था, किन्तु दूसरी ओरका कर्तव्य-ज्ञान, चिन्तार करके पुनः रहा था--यह दुर्बलता है, दुर्बलता — उसपर पदाघात कर—पदाघात कर । इस प्रकार दो भाव नवीनको अपने अपने अधीनतामें लानेकी कोशिश कर रहे थे । नवीन अपनेको किसी एकमें स्थिर नहीं रख सकता था ।

नवीन कभी-कभी सोचता—प्रकाश तो कभी व्यस्त और चिन्तित नहीं देखा गया। मैं अनेक दिनोंसे उसके सम्पर्कमें आया हूँ। कभी भी उसे सूखे मुख नहीं देखा। उसके मनमें, विचारमें कभी द्विविधा परिलक्षित नहीं हुई। विप्लवके नामसे जितनी दया, धैर्य और अन्यान्य जो कुछ उसके साथ होता सभी उसके पास हैं। प्रकाश उन सभीको अधीन किये था। मैं भी क्या वैसा ही बन सकता हूँ। इसी प्रकारकी चिन्ता प्रकाशकी ओर नवीनको खींच ले जाती। कभी कभी बिना प्रसङ्गके भी प्रकाशके सम्बन्धमें बन्दियोंके साथ आलोचना करता। सभी कहते—उसे देखा है, बातचीत किया है, ऐसा कहते भी। घरमें आग लगी थी, धांय-धांय करके घर जलता था, आदमी गिरफ्तार हो रहे थे, प्रकाश उस समय घरवालोंको सान्त्वना दे रहे थे। लोग उनकी बातें सुनकर अपने आपको भी भूल-से जाते। जिनका घर लूटा गया, जो गोलीसे मारे गये, उनके परिवारके आदमी प्रकाशकी बातें सुनकर शांति पाते थे।

ऐसी बातें सुन नवीन सोचता—कितना महान है। कितने ऊँचे विचार हैं। मैं क्या वैसा नहीं बन सकता ! उनकी ही भाषामें मैं क्या पावर-हाउस नहीं बन सकूँगा। मेरे हृदयसे निकली बिजली क्या दुनियामें उजाला नहीं कर सकेगी ? प्रकाशकी बातें सोचकर मन दृढ़ होता। नाना उद्यम करके मजबूत करता और दूसरी ओर ऐसा लगता मानो खार्ह हैं, खोह है। चिन्तामें मग्न होता, घरकी ममता छोड़ना होगा, जीवनकी सभी सरसताको तिलांजलि देनी होगी।

जेलकी छोटी छोटी चिन्ता भी अत्युत्कट होती हैं। इसलिये उनको रोकना नवीनके शक्तिसे बाहरकी बात हो जाती।

—अड़तीस—

जैसे जैसे जेल मुक्तिके दिन समीप आते उतना ही नवीनके मनका उद्वेग बढ़ता जाता। एक दिन रातके समय याद आया—अब जेल मुक्तिकी मियाद १५ दिन रह गई है। फिर वह बाहर जायेगा। एक वर्ष बीत गया। उस समय उसका उद्वेग इतना बढ़ गया था कि वह सो न सका, उठकर बैठ गया। इधरसे उधर चहल-कदमी करने लगा। १५ दिनके बाद मुक्तिकी याद नवीनके मन और मुखको उत्फुल्लित कर रहा था। इस प्रकार नाना चिन्ता-आलिङ्गित मनको साथ लेकर सो गया। सबेरे उठते ही मनमें आया—अरे अभी तो लम्बे १४ दिन जेल मुक्तिके बाकी हैं। ओह, इतने दिन कैसे कटेंगे ?

जेल मुक्तिकी उत्कट लालसा अल्पताको दीर्घतामें परिणत किये थी। चौदहके बाद तेरह, तेरहके बाद बारह और फिर न्यारह इसी प्रकार जेल मुक्तिका दिन आ पहुँचा। नवीन स्थिरताके साथ एक जगह रह नहीं सका। नाना चिन्ता मनको आलोड़ित किये थी। लेकिन सभी चिन्ता क्षण-स्थायी थी। चलचित्रके चित्रके समान एकके बाद एक चिन्ता आती और सरक जाती। मनमें आया—बहुत दिनके बाद जाँघियाके स्थानपर धोती पहिरूँगा। गलेसे यह काठकी तख्ती चली जायेगी। लोहेकी थाली कटोरी भी चली जाएँगी।

[एकसौ सरसठ]

इससे मनमें जितना आनन्द होता, उतना ही एक वर्ष जेलमें रहकर अपने ऊपर करुणा-भाव भी जाग्रत होता। बाहर जाकर क्या करूँगा—ऐसे प्रश्न मनमें उठते तो कलके लिये सोचनेको छोड़ जाता। केवल जेल-मुक्तिके आनन्द-स्रोतमें मनको गोते लगानेकी स्वाधीनता दे रखी थी।

उस समयके जेलकी हालतके बारेमें आज कल्पना ही नहीं की जा सकती। मेल मुलाकात, पत्रादिका आदान-प्रदान राजनैतिक बन्धियोंके लिये आसान नहीं था। नियमानुसार सदाचरणपर व्याघात होनेसे चिट्ठी-पत्र अथवा मुलाकातके लिये अनुमति नहीं मिलती। कहनेकी जरूरत नहीं कि नियमानुसार काम न करनेके कारण नवीन आदि बन्धियोंको जेलकी सुविधा नहीं दी जाती थी। अर्थात् बाहरकी दुनियासे कोई सम्पर्क नहीं रहता। अब वह अवस्था कितने घण्टोंकी मेहमान है—यह चिंता कितनी आनन्द-मयी और उद्वेगोत्पादक है, सहजमें अनुमेय है।

शाम हो गयी। वह बन्द हो गया। सभी अपने अपने स्थानपर कुछ समय तक नीरव बैठे रहे। पश्चात् 'ठीक है' कि ठनठन घण्टी बज उठी जेल कर्मचारियोंके जानमें जान आई कि जमा खर्च ठीक है। बादमें जो जहां पाता जा बैठता, गप करता।

आज नवीनको घेरकर सभी बैठे हैं। वह छोड़कर चला जायगा, इसलिये सभी दुखित हैं। कोई कोई रोने भी लगे। एक साथ एक ही अवस्थामें रहनेके कारण परस्पर इतनी माया ममता हो जाती है कि लोग यह भूल जाते हैं कि इस यन्त्रणासे तो बेचारा मुक्त हुआ। उनको आनन्द नहीं

[एकसौ अरसठ]

मिलता । सभीका मन कहता—क्या ही अच्छा हो कि नवीन न जाय ! इसी प्रकार संगियोंके दुखकी भुनकार नवीनके हृदयके तारोंको भुनभुना रही थी । वह खुद भी छोड़कर जानेमें दुखित था ।

इस हालतको देखकर, जीवनके साथ तुलना करके शायद दार्शनिक कहें शरीरको छोड़नेके लिये भाई बन्धुओंको जितना दुख होता है उससे भी अधिक दुख देहधारीको होता है । इस दुखके समय बन्धनसे मुक्तिका विषय न मालूम कहाँ दबा पड़ा रहता है ।

नवीन सभीको सान्त्वना देता । हरेकने, जिसे जो खबर देनी थी—सभी एक एक करके कहने लगे । कागज तो वहाँ था नहीं और लिखनेकी सुविधा भी तो न थी । नवीनके मनमें जितना धरता क्रमशः लेता जाता । सभीको कहता—मैं खुद जाकर खबर लूँगा ।

सभी अपने अपने परिवारके लिये अति व्यग्र थे । यह देख नवीनके मनमें भी परिवारकी बात जाग उठी । अपने विषयसे मनको हटाकर दूसरोंके विषयको सुनता, सभीकी ओर देखकर चिन्ता करता—मेरे घरमें तो कोई उपवास नहीं रहता होगा । इस आन्दोलनमें शामिल होनेसे मेरी कुछ आर्थिक हानि नहीं हुई । उलट लाभ यह कि मेरा सुनाम हुआ है लेकिन यह जनता पागल होकर इसके ऊपर पड़ी है । अनेकोंके परिवार उपवाससे पड़े होंगे । हो सकता है कि अनेक अपने परिवारको देख भी न पायें । गृह-शून्य हो अनेक इधर उधर घूमते होंगे । लेकिन इनका नाम संसार नहीं जानता । अतएव इस ओर इनको चिन्ता भी तो नहीं

[एकसौ उनहत्तर]

है । इतिहासमें सेनापतिकी गुण-गाथा गाई जायेगी, परन्तु इनका नाम न जाने किस खोहमें जा पड़ेगा । किन्तु इन्हींके त्याग, इन्हींके पागलपनसे विप्लव चिरस्थायी रहेगा ।

नाना चिन्ताओंको भुलाकर विस्तरमें जा सोये । लेकिन नवीनको चिन्ता ग्रास किये थी; मङ्गल यह कि उद्वेगसे रक्षा थी ।

—उनतालीस—

एक सिपाहीने आकर लोहेके मोटे छड़वाला फाटक खोल दिया। नवीन मुस्काता जेल-फाटकके बाहर आया। अनेक दिनसे बाहरकी दुनियाको देखनेके लिये व्याकुल नवीनने चारों ओर आँखें घुमाकर देखा। प्रकाश हँसता हुआ नवीनकी ओर चला आ रहा है। नवीन दौड़कर छातीसे चिपक गया। भाव-प्रवणतावस आँखोंकी तैयार भर आई। नवीनकी पीठ सहलाते हुए प्रकाशने कहा—नवीन ! मैं तुम्हारी अपेक्षामें था। तुम को कितने मधुर और कड़ू सम्बाद दूँगा। चलो चलो।

दोनों बातचीत करते आश्रमकी ओर चले। नवीन बाहरकी सारी खबर जाननेके लिये व्याकुल था। यह सारी दुनिया उसे नई मालूम दे रही थी। दीर्घ निद्राके समय देखे गये खराब स्वप्नके बाद आँखें जब खुलती हैं तो एक नई घटना अनुभूत-सी होती है। ठीक वैसा ही नवीनको लग रहा था। लेकिन दुनिया ठीक अपनी गतिपर चल रही है। आँखोंमें देखने लायक परिवर्तन कुछ भी तो नहीं है। 'नया सड़क' के चौराहे पर बरगदके नीचे अभी तक वही बेंतका पेडारा बेचनेवाले भावियोंकी दुकान है, सैन देन चलता है। घोड़ा गाड़ी, साइकल पूर्वसे चलते हैं। केवल नवीनकी आँखोंमें ये सब नई दुनियावी लग रहे थे।

प्रकाशने कहा—नवीन ! गत वर्षके अन्दर कहाँ क्या घटनायें घटी हैं—

[एकसौ इकहत्तर]

प्रथम जान लो, इतना कहकर हँसते हुए कहा—मैं तुम्हारे घर गया था ।
वहाँ कुछ दिन था ।

नवीन अपने घरके सम्बन्धमें क्या पूछे कुछ सोच नहीं पा रहा था ।
मनमें आता, पूछूँ, प्रतिभा कैसी है । फिर सोचता—अगर पिताजी इनके
साथ दुर्व्यवहार किये हों तो ? विना कुछ कहे प्रश्नोंसे पूर्ण मुख लिये खड़ा
था । फिर बोला—कहिये क्या खबर है वहाँ की ?

प्रकाशने उसी प्रकार हँसते हुए कहा—तुम्हारी माँ तो मुझे बहुत मानती
थी । नवीन विस्मित हो गया । घरके भीतर ये गये क्योंकर ! माँ के
साथ इनकी मुलाकात हुई कैसे ? जिस समय प्रकाशने कहा—“प्रतिभा
तो वास्तवमें प्रतिभा ही है” तो नवीन रोमाञ्चित हो उठा । मनमें आता,
प्रकाश सारी बातें जल्दी कहते क्यों नहीं ।

प्रकाशने कहा—उन्होंने एक पत्र मुझे लिखा है । वह पत्र तुमको
उद्देश्य करके लिखा गया है । आश्रममें दिखलाऊँगा ।

नवीनके आश्चर्यकी सीमा नहीं थी । वह स्वप्न देखता है कि वास्तविक-जगत
में है—इसमें भी उसे शक हो रहा था । एक वर्षके भीतर क्या इतना परि-
वर्तन हो सकता है ! जहाँ कठोर पर्दाका साम्राज्य हो, वहाँ फिर प्रकाशका
प्रवेश ! और फिर चिड़ी-पत्रीका आदान प्रदान ! यह सब क्या व्यापार है ?

प्रकाशने नवीनकी आश्चर्य-जनित कुञ्चित-भ्रू की ओर लक्ष्य किया ।
बोला—इसमें आश्चर्यकी कोई बात नहीं नवीन ! एक वर्षका समय कम
नहीं । और फिर विप्लवका युग ! साधारण समयमें जिस कामको करने

मैं पाँच वर्ष लगेगा इस समय वही ५-६ मासमें हो जायेगा । ५ दिन भी लग सकते हैं । बिप्लवके मन्थनमें यही तो गुण है, कि जिस प्रकार बादल ऊपर उठ आते हैं उसी प्रकार सारे दुर्गुण भी ऊपर आ जाते हैं । एक वर्षके भीतर इस समय तुमको दो प्रकारके परिवर्तनपर लक्ष्य करना होगा । उसीके अनुसार अपने आपको चलाना होगा ।

नवीन आश्रम आया, देखा, मानो श्रीहीन हो गया हो । प्रथम जिस प्रकारकी चहल-पहल थी, कर्ममय जीवनको जिस प्रकार जीवन्त किये था आज न तो वे भाव हैं और न प्रेरणा ही । उसने देखा—एक दो मुर्देकी तरह म्रियमाण भावसे काम करते हैं । घरद्वार मानों सालोंसे साफ नहीं किया गया ।

विस्मयमें डूबे हुए नवीनको प्रकाशने कहा—प्रथम उत्साहित कर्मियोंके कोलाहलसे आश्रम परिपूर्ण था । आज वह नहीं है । एक एक करके सब चले गये । जो हैं भी वे तो ठीक उसी प्रकार हैं जैसे बाढ़से बहे हुए किसी किनारे लगनेपर प्राण रक्षाकी चेष्टा करते हों । सम्भल सम्भलकर चलते हैं । फिर भी बत्ती तो जलाये बैठे हैं ।

नवीन जरा सा हतोत्साह सा हो सामनेके बरामदे पर जा बैठा । प्रकाश चहलकदमी करने लगा । नवीन अस्थिरताके साथ पूछा—देशकी क्या हालत है ?

प्रकाश अन्यमनस्क भावसे बोला—आश्रम ही तो देशका प्रतिबिम्ब है जैसा आश्रम है वैसा देश है ।

[एकसौ तिहत्तर]

प्रकाशका अवहेलना-जनक उत्तर सुनकर नवीनके मनमें जरा विरक्ति आई--ये तो अति उत्साही थे । लेकिन एक वर्षके भीतर यह परिवर्तन ! ये क्या कहते हैं । नवीनके लिये यह गभीर चिन्ताका विषय बन गया । उन्होंने बहुत अवसाद अनुभव किया । मन ही मन प्रश्न किया—तो क्या विप्लव वृथा गया ?

नवीनको चिन्तित देख प्रकाशने हँसते हुए पूछा—क्यों नवीन, अवसन्न हो गये ? वर्तमान जय-जयकारसे तुम्हारा अभिनन्दन करके तुमसे विप्लव की दीक्षा लेनेवाली विराट जनता नहीं है । आज तुम्हारी ओर लोग देखेंगे कि नहीं सन्देह है । हो सकता है कि तुम्हारे संगी साथी तुमको देखकर, 'अहा !' कह दया दिखायेंगे । विप्लवकी एक यह भी अवस्था है । इसमें अगर तुम दम्भ दिखा सके तो तुम्हारी बहादुरी है ।

जो आदमी जिधर जाता है उधर ही उत्साहकी नदी बहा देता है । जिसके साथ बातें करता था उसे पागल कर देता था । आज वही ऐसी बातें कैसे करता है ? नवीनकी समझमें कुछ नहीं आ रहा था ।

बातचीत बन्द करके नवीनके खाने पीनेका वन्दोवस्त करनेके लिये प्रकाशने एक स्वयंसेवकसे कहा । जेलके भीतर रहते नवीन जिस आनन्दकी कल्पना करता था, वह इतनी जल्दी भूल प्रमाणित होगी--यह बात उसे स्वप्नमें भी नहीं आयी थी । लेकिन आज वह मुक्त है, यही अनुभव आनन्दके लिये यथेष्ट है ।

—चालीस—

नवीनके घरसे जो पत्र आया था उसे हाथमें देकर प्रकाशने कहा—
तुम देखो, मुझे काम है । यह कह चले गये ।

नवीनने खतको बार बार पढ़ा । फिर भी मनकी साध नहीं भिट रही थी ।
एक वर्षके बाद नवीन जेल-मुक्त होकर आया है । जो आश्रममें थे, सभी
नवीनके साथ मुलाकात करने आये । सभी उत्साह देनेके लिये उसके पास
आये हैं । नवीनके दिल और दिमागमें वह खेल रहा था सत्य, लेकिन
कर्मियोंके साथ हँसते हुए संभाषण कर रहे थे । इसी समय नवीनकी
निगाह पड़ी उसी सहकर्मीके ऊपर, जिसको स्कूलमें पढ़ते समय
उसके पिताने इस आन्दोलनमें भाग लेनेके लिये मना किया था ।
न मानने पर थप्पड़, मुक्का—यही नहीं, टंगे नये छातेके बेण्टसे मार
मार कर बेदम कर दिया था । छाताका बेंट टूट गया था; लेकिन
बालकने एक न माना । उसी प्रकार क्षत-विक्षत व्यथित देहको लिये
इस विप्लवमें आ शामिल हुआ था । इस आश्रममें रातको छिपकर
आया था । नवीनने उसे देखकर हँसते हुए पूछा—क्यों पुरन्दर, घरकी
कुछ खबर मिली है ?

पुरन्दरने स्वाभाविक मुस्कानके साथ कहा—ना, मुझे कुछ भी मालूम
नहीं । सुना है ? पिताने मुझे त्याग-पुत्र कर दिया है ।

नवीनने गौरसे उसके मुखकी ओर देखा । पूछा—पुरन्दर, तुम क्या सोचते हो ?

पुरन्दरने उत्साहके साथ कहा—कुछ भी नहीं । देश-मुक्तिकी प्रतिज्ञा करके घरसे आया हूँ । लौट नहीं सकता ।

नवीन कुछ काल तक नीचे सिर किये कुछ सोचता रहा—किसके लिये यह अद्भुत त्याग ?

आश्रमकी हालत और बाहर चलते कामके सम्बन्धमें नवीनने पूछा—बाहर जो जो अत्याचारकी कहानियाँ सर्वत्र उछल रही थीं, सभी सुनानेके लिये आतुर से हैं । किसके मुखसे सुने, यही नवीनके लिये चिन्ताका विषय उपस्थित था ।

जगतसिंहपुर की एक विराट सभामें पुलिसने लाठियाँ चलाकर किस प्रकार लोगोंको जखमी किया । एक बूढ़ीकी सिर लाठीकी चोटसे फटकर किस प्रकार रक्तकी नदियाँ बहीं, बालेश्वर जिलेमें अवकारी निलाम के समय स्वयंसेवकोंने धरन दी तो पुलिसवालोंने किस प्रकार उनके मल-द्वारमें बिछुआती की डाल जबरदस्ती भर दी थी । पुरीके स्वयंसेवकोंको ७ दिन तक विना अन्न-जलके हाजतमें रखा गया था और फिर सारे कपड़े छीन कर नङ्गा करके हाजतसे बाहर कर दिया गया था । घरोंमें किस प्रकार आग लगानेकी तरकीब गांव गांव परिव्याप्त हो गई । कनिका अत्याचार की करुण कहानी—कि किस प्रकार नारियोंके ऊपर अकथनीय पाशविक अत्याचार किया गया । यहां तक कि स्वामीको बांधकर उसके सामने खी

[एकसौ छिहत्तर]

पर बलात्कार किया गया। फिर स्वामीको जेल ! वह स्त्री प्रतिशोधका बीड़ा लिये खुले सिर पगली बनी कहीं घूमती फिरती है..... इस प्रकार सभी अपनी अपनी कथा सुनाने लगे।

यह सब सुनकर नवीनका खून खौलने लगा। सोचने लगा अगर मैं बाहर होता तो प्राण देकर इसका प्रतिशोध लिया होता। दीर्घ निश्वास गेरकर कुछ समय तक सोचता रहा। उसके बाद पूछा—अब क्या हालचाल है ?

सभीने कहा—अत्याचारसे लोग दब गये हैं यह सच है, लेकिन उनको अगर उत्साह मिले तो फिर उठ खड़े होंगे। लेकिन मुश्किल तो यह है कि जिन लोगोंने साहस दिया था वे भी दब गये हैं। बादमें जो कर्मी उत्साहके साथ काम करते थे उनमेंसे कई अब छोड़कर चले गये हैं और कुछ तो अब सरकारी नौकरी करने लगे हैं—कितने लौटकर पूर्ण रूपसे इस आन्दोलनके विरुद्ध प्रचार करते हैं—ये बातें सुन नवीन अवसन्न हो गया। पश्चात् जेलखानेकी बात उठी। आश्रममें कभी कभी अर्थाभावके कारण उपवास भी रह जाना पड़ता है—आदि बातोंकी आलोचना हुई।

कुछ समयके बाद सभी अपने अपने काममें जा लगे। नवीन उस चिह्नांको खोलकर फिर पढ़ने लगा। गभीर चिन्ताके भारसे आँखोंके पत्ते लज्जवन्ता पत्तेके समान मुँद रहे थे। नवीन महासङ्कटमें आ पड़ा। उसने अनुभव किया कि जिस समय आन्दोलनमें शामिल होनेके लिये इस आश्रम में आया था उसका उत्साह आकाशको छुए था। लेकिन आज तो धरती छोड़नेके लिये भी तैयार नहीं है। इसका यथार्थ कारण भी सामने

[एकसौ सतहत्तर]

था। उस समय विप्लव सफलताकी प्रतिछवि लेकर घूम रहा था, लोगोंको आह्वान करता था; लेकिन आज उसने अपनी प्रतिश्रुति भङ्ग कर दी है। कोई भला विफलप्रयत्न होनेपर उत्साह अनुभव करता है ? उसने खुद क्या नहीं किया ! पिताकी आज्ञाका उल्लङ्घन किया, नव-विवाहिता पत्नी की ओर भी नहीं देखा। एक वर्ष जेल भोगकर लौटा है। समाजमें उसकी स्थितिके कितने आदमी हैं जिन्होंने ऐसा किया है ? अवश्य देश-भक्तिके लिये सभीको लगना चाहिये। लेकिन प्रथम जिस प्रकार बन्धनको काट दौड़नेकी प्रेरणा थी आज उसकी आवश्यकता नहीं है। धीरे धीरे शांतिसे करना होगा।

इस युक्तिने नवीनके अवसादका समर्थन किया। लेकिन दूसरी युक्तिने उसे विव्रत कर दिया—तो क्या विप्लव कभी सफलताकी प्रतिश्रुति दिये बिना नहीं आता ? लेकिन इसकी प्रतिश्रुतिका रक्षाभार तो उन लोगों पर है, जो उसके आह्वानपर इसमें शामिल होते हैं। उन्हींकी कर्म-तत्परताके ऊपर सब निर्भर करता है। आज मेरी कर्मतत्परताका अभाव ही उसकी सफलतामें बाधक होगा। मैंने सोचा था—मैं माया मोहकी रस्सीको काट चुका हूँ। लेकिन मैं तो फिर उसी रस्सीमें खिंचा जा रहा हूँ, क्यों ? वास्तविक रस्सी पूर्णतया कटी न थी। शायद अज्ञानमें कहीं रस्सीका एक लर-लगा रह गया है। वही मुझे खींच रहा है। इस विप्लवमें कितने आदमियोंने कितना त्याग नहीं किया ? वे मुझे आगे रखकर चल रहे थे। अगर मैं न अग्रसर होऊँ तो वे और भी दब जायेंगे। यही पुरन्दर—किस उत्साहमें है ! देश-भक्तिकी आशा छोड़कर उसके मनमें दूसरी आशा

[एकसौ अठहत्तर]

नहीं है । मैंने प्रथमसे पकड़ लिया था कि मेरा जीवन साधारण नहीं है । वहीं प्रतिष्ठाकी लुप्त-लालसा रह गई । विप्लवके आरम्भमें जब जय-जय-कारकी धून थी तब वह लालसा मेरी अनजानमें कहीं सन्तुष्ट होकर बैठ गई थी । आज जब सारा कोलाहल बन्द हो गया, अनाहारसे छटपटाते लोगोंको दिखाकर मुझे निराश करती है । संसारकी सभी आशा, माया, ममताको छोड़कर मेरे समान व्यक्ति अगर आगे न आयेंगे, प्राण न देंगे तो देशकी मुक्ति कैसे होगी ?

दोनों प्रकारकी चिंतासे खींचा नवीन बहुत व्याकुल और अस्थिर था ।

—एकतालीस—

आश्रमके कर्मवृन्द अपने नेताको अपने बीच पाकर अति आनन्दित हैं । आज रसोईमें देर भी नहीं हुई । सभीने लगनसे घर बार साफ सुथरा कर दिया है । नवीन समझ रहा था कि वे उससे क्या आशा कर रहे हैं । इसलिये उनकी अस्थिरता और बढ़ गई थी । पहले जैसे आश्रम को अपना समझता था आज वैसे भाव न जाने क्यों नहीं आते । ऐसा लगता है मानो आज वह भी एक पाहुन है । किन्तु इतनेसे ही उसका मन नहीं मानता । आश्रमको अपना समझनेका प्रयास करता है । कर्मियों के साथ अन्यमनस्क भावसे बातचीत करता है— यह जानकर कभी कभी संकुचित हो जाता । बड़ी चेष्टा करके मनको बटोर कर बातचीतके स्थानपर आसीन करता । ‘प्रकाशने उसके ऊपर नेतृत्वका भार क्यों सौंपा ? उसीके लिये तो आज वह उलझनमें फँसा हुआ है ।’ नाना प्रकारकी दायित्वकी चिन्ता घेरे हुए थी, इसलिये कभी कभी प्रकाशके प्रति विरक्ति-भाव भी उठते थे । फिर इस विरक्तिके लिये भी दुःखी होता था ।

रात्रिके भोजनोपरान्त नवीन अपने कर्तव्यकी चिन्तामें लीन है । इठात् उठा और लालटेन लाकर उस चिड़ीको फिर पढ़ने लगा—प्रतिभाने प्रकाशको लिखा है—“अगर वे यह सोचते हैं कि इस विवाहके सम्बन्धमें उनका हाथ नहीं है । अतएव विवाह सम्बन्धी कोई दायित्व लेनेके लिये वे तैयार नहीं

हूँ, तो मैं भी यह कह सकती हूँ कि इसमें मेरा भी तो हाथ नहीं था मैं भी तो दायित्वसे मुक्त हो सकती हूँ। समाजकी प्रचलित प्रथाके अनुसार विधिने हम दोनोंको आकस्मिक भावसे मिलाया है। यह मिलन परीक्षाके उपरान्त अहितकर समझा जा सकता है लेकिन प्रथम परीक्षाकी जरूरत है। बिना परीक्षाके मिलनका अनादर करनेका अर्थ है विधिका अपमान करना। अगर वे अपनी बनानेके लिये मुझे अनुपयुक्त समझते हैं तो मैं भी उनको अपने पतिके योग्य कैसे समझ सकती हूँ—यह अधिकार मेरा है। अगर वे अपनेको एक बड़े विप्लवी समझ कर मेरी उपेक्षा कर सकते हैं तो मैं भी अपनेको उनसे बड़ा विप्लवी समझकर, उन्हें और सारे संसारकी उपेक्षा कर सकती हूँ। आपकी प्रेरणासे मैं अब वह अवला नहीं रही जो कि जिंदगी भर नामका रट लगाये कुढ़ा करूँगी। मेरे लिये भी विप्लवका पथ खुला है। आज साधारण प्रजा जमींदारके विरुद्ध होकर मुझे ही अपना हितैषी समझती है। अब मैं भी इस बन्धनमें पड़े रहना पसन्द नहीं करती। मैं संसार छोड़ दूँगी। नदीकी बीच धारामें जीवनको फेंक दूँगी। मुझमें भी तैरनेकी ताकत है, साहस है। मैं आपकी अनुगत हो, बहकर हो या तैरते तैरते हो, समुद्रकी ओर गति करूँगी। अगर बीचमें डूब भी जाऊँ तो मुझे दुख नहीं। कारण तब मैं दुनियाँमें अकेली हूँगी, मेरा कोई नहीं होगा।”

प्रतिभा, वह फिर ऐसा पत्र लिख सकती है। वह विप्लवका इस प्रकारका चित्र खींच सकती है !! उसमें अगर अपनी ही कुछ प्रतिभा न होती तो प्रकाश इन कई दिनोंमें ऐसी प्रेरणा नहीं दे पाते। इस प्रकारका

ख्याल रखनेवाली प्रतिभाका अनादर करके चला आया है—नवीनके मनमें यही एक गभीर परितापका विषय था ।

पिताके विरुद्ध मेरी स्त्री आन्दोलनका नेतृत्व कर रही है—यह सोचते ही नवीनका शरीर शिहर उठता था । जिस विप्लवका प्रचार उसने खुद किया है अगर उसीका प्रचार उसकी पत्नी करे तो उसमें उसका क्या दोष ! अगर विप्लव पथपर वह और उसकी पत्नी दोनों चलें तो फिर पिता माताका साथ छोड़ना होगा—यह चिंता नवीनको अस्थिर किये थी ।

अपने विचारोंके बल विप्लवको अपने ही ऊपर चलाने और प्रचार करनेकी बात वह सोचता था । अपनी भूलको समझना भी एक बड़ा गुण है; लेकिन उस गुणके अधिकारी बननेमें बाधक होता है दुष्ट मन । वह दूसरोंके दोष खोजनेमें लगा रहता है ।

नवीन उस अनिश्चिततामें असुविधाके अन्दर अपनेको देख रहा था । अत-एव प्रकाशके दोष खोजनेमें लग गया । बार बार चिंता करके वह समझ रहा था कि इन्होंने कालेजमें पढ़ते समय अच्छी तरहसे विषयको समझनेका मौका नहीं दिया । अन्तमें उसे पुरानी टूटी नौकामें बैठाकर समुद्रमें छोड़ दिया है ।

—बयालीस—

विस्तार पर पड़े पड़े नाना प्रकारकी चिंता करते करते वह क्रमशः चेतनावस्थासे अर्द्ध चेतनावस्थामें पहुँचा, वहाँपर मनकी विक्षिप्तता नहीं गई थी। न तो जागते थे न सोते—ऐसी ही हालतमें मन था। ऐसी दशामें आँखोंके सामने घटती हुई घटना स्वप्नमें घट रही हैं। उसने देखा—काठयोड़ी नदी बढ़ी है। दोनों किनारोंको तोड़ती फोड़ती छाती फुलाये हुए नदी दौड़ रही थी। बड़े बड़े फेन खण्ड ऐसे लगते मानो कोई हिंस्र-जन्तु दंष्ट्रा विस्तार कर दौड़ रहा हो। किनारेसे बहुत दूर फेनराशिके बीच एक काठ सा क्या बहा जा रहा है, उसके ऊपर नवीन अभी निगाह गेरा ही था कि कहींसे एक मुरझनामयी सङ्गीत लहरी कानके पर्दों को गुद-गुदा रही थी। मालूम होता है मानो बहुत दूरीपर प्रतिभा गा रही हो। “मुँ एका जीवन नई रे, केहि नहिँ मोर साहा।” मैं इस जीवनकी नदीमें अकेले तैर रही हूँ, मेरा सहायक कोई नहीं है। इस स्वरको ध्यानसे सुन रहा था कि उसे ऐसा जान पड़ा मानो नदीमें जो काठ बहा जा रहा था वही धीरे धीरे आदमी सा सिर उठा कर गाना गा रहा हो। कुछ ही कालके बाद मालूम हो गया कि प्रतिभा नदीके भीतर स्रोतके अन्दर पड़े रो रही है। वह नवीनकी ओर हाथ फैलाकर बुलाती है। उसका मन करुणामें डूब सा गया। वे अपनेको सम्भाल भी तो नहीं सकते। किनारे पर खड़े अनेक आदमी भी चीत्कार

करते हैं—‘अहा, बही जाती है ।’ वह खुद नदीमें कूदकर प्रतिभाको बचाने जा रहा है—उसी समय प्रकाश पीछेसे आकर पकड़ लेते हैं । निष्ठुर रूपसे हँसते हुए प्रकाशने कहा—जाने दो कहाँ तक बहकर जाती है जाय । वह विरक्त हो उन्हें धक्का देनेमें लगा है—प्रकाश विकट हास्य कर कह रहे हैं—मुझे ढकेलनेके लिये बलप्रयोग क्यों करते हो, मैं तो खुद एक चिंता हूँ, जरा जीके कड़ा करते ही कहीं उलट जाऊँगा, यह कहते हुए वे हाथ छोड़ देते हैं । नवीन धमसे नदीमें कूद पड़ता है । इसी समय नवीनका स्वप्न भङ्ग हुआ । अर्द्धजाग्रत अवस्थामें भी मनकी गति उसी प्रकार चञ्चल है । अस्थिरता और भयसे उसका दिल भरा हुआ है । उसने चारों ओर देखा, कोई कहीं नहीं है । केवल लालटेन जलती है और प्रतिभाकी चिढ़ी जमीनपर पड़ी है ।

नवीन उठा, बाहर गया और फिर आकर विस्तर पर बैठकर स्वप्नके सम्बन्धमें पागुर सा करने लगा । असहाय प्रतिभाकी करुणध्वनि कानोंसे आकर मनमें झङ्कार करने लगी । अपनेको वह एक बहुत बड़ा अपराधी समझने लगा । घर जाना निश्चय करते ही जो कर्मी जेलमें हैं, आते समय घेर कर बैठे थे, सभी एकके बाद एक सामने आने लगे । चारों ओर जो दमन लीला चल रही है उसके लिये सभीके स्थानमें जाना और उनको सान्त्वना देना भी तो कर्तव्य है । इस कामको किये बिना अपने घर जाना उनके प्रति भयानक विश्वासघात होगा । घरके साथ क्या सम्बन्ध रखना चाहिये यह भी स्थिर करना है ।

प्रतिभाको लाकर आश्रममें दोनों रहेंगे, काम करेंगे, परस्परको सहायता

देंगे तो कितना सुन्दर काम होगा---यह सोच नवीनका मन मारे खुशीके खिल उठता । लेकिन माता पिता यह काम करने नहीं देंगे । और उनसे विछिन्न होकर चले आना भी सहज व्यापार नहीं है । यह बात मनमें आते ही एक प्रकारका विषाद मनमें आ जाता था । माता पितासे अलग होते ही वे सहायता भी भला क्यों देंगे । अगर सहायता न दें तो फिर उपाय क्या है ?

इस प्रकारकी नाना चिंता करते करते उसके मनमें आया कि जिस विप्लव-का प्रचार वे करते हैं वही उसकी जमींदारीमें है, गाँवमें है । उसीके फल स्वरूप लोग अत्याचारके विरोधमें खड़े हैं । पिताकी जमींदारी-शासन अत्याचारमूलक है इसमें तो शक है ही नहीं । वे प्रजाओंसे परामर्शकर जमींदारीका शासन कार्य नहीं चलाते हैं । अगर ऐसा प्रस्ताव मैं करूँगा तो पिताजी अति खुशीसे मान लेंगे । प्रजा भी अत्याचारसे रक्षा पायेगी और लोग सोचेंगे हम विप्लवसे विजयी हो गये हैं । अब प्रतिभा भी अकेली नहीं रहेगी । इस प्रकार सोचता रहा कि उसका पथ अनेक दूर तक साफ हो गया । पर दूसरी ओरका पथ जितनी दूर तक दिखाई दे रहा था अरण्यमय हो गया । तो फिर क्या अच्छे जमींदार बनकर घरमें रहेगा—इससे क्या जीवन सफल हो गया ? आज जो चारो ओर देश प्रेमिकके नामसे ख्याति मिली है वह सब व्यर्थ जायेगी । जिन लोगोंने मेरी प्रेरणासे तकलीफ सहन की है वे क्या कहेंगे ?—आदि आदि नाना चिंतारत नवीनको कब नींद आ गई उसे मालूम ही नहीं दिया ।

—ततालीस—

प्रतिभाने जो पत्र प्रकाशक के पास लिखा था वह जान्हवी देवी के कहने पर ही लिखा था । प्रजा जैसे जैसे एकतावद्ध होती वैसे वैसे रामहरि सौंभ सकारे असहयोग आन्दोलन को, प्रकाश को और इन सब के साथ नवीन को भी गाली देते । उससे जान्हवी देवी की आशङ्का मजबूत होती जाती कि नवीन अब शायद ही घर लौटे । “अगर प्रजा मिलकर कुछ करना या कहना चाहती है तो कह दो नवीन के आने तक चुप रहें । नवीन को आने दें । वही करेगा जो कुछ करेगा । ऐसा कहने से प्रजा तो चुप हो जाती । वह भी तो तुम्हारा पुत्र है इतना क्यों नहीं कह देते ।” —ऐसी बातें एक बार रोते रोते जान्हवी देवी ने रामहरि बाबू से कहा था । यह सुनकर हिंस्र जन्तु के समान चीत्कार करके रामहरि ने कहा—नवीन, वह क्या जानता है जमींदारी की बातें; उसे भला क्या मालूम । २० वर्ष से मैं जमींदारी सम्भाले हूँ । मुझसे जो न होगा वह भला क्या कर सकता है । वह तो अमनुष्य है । उसके साथ पढ़ने वाले आज सौ सौ रुपये कमाते हैं । यह तो पागल बना घूमता है । पिता की सम्पत्ति है, बैठे बैठे खायेगा । यही तो...आदि आदि । बाद शुरू हुई गाली । जान्हवी देवी नीरव हो गयीं । आगे चलकर इसी नीरवताने प्रकाश को एक पत्र लिखने के लिये बाध्य किया—जिसका प्रकाश हो चुका है ।

दूसरे ही दिन जान्हवी देवीने प्रतिभाको बुलाकर कहा—बहू, चिठी नहीं लिखी ? प्रतिभा सिर नीचे किये चली गई । बादमें वे खुद प्रतिभाके पास गईं और बोलीं—बहू, तू कागज फलम ला, लाकर मेरे सामने लिख । तू लिख—तुम्हारी माता रोती है । तुम जो कर रहे हो ठीक है । एक बार आकर माता पिताके साथ मुलाकात करके जाना क्या उचित नहीं है ? इस अञ्चलके विरोधकी बात मत लिखना । पिता ऐसी ऐसी गालियाँ देते हैं यह भी मत लिखना । लिख मेरे सामने ही लिख । प्रतिभा गम्भीर हो कुछ काल नीरव रही । फिर धीरे धीरे बोली—मैं आज ही लिख दूँगी । जान्हवी देवी कसम-सौगन्ध दिलाकर उपस्थित शांति लेकर चली गईं । पत्र लिखूँ कि नहीं, इसके बारेमें प्रतिभाने बहुत सोचा । एक बार सास के कथनपर जो अपमान मुझे मिला है मैं उसे जीवन भर नहीं भूल सकती । उसपर फिर पत्र लिखूँ । अगर वह चिट्ठी लेकर फाड़ फेंके तो ! सझी साथियोंको पढ़ाकर मेरी खिल्ली नहीं उड़ायेंगे ? ना, नहीं, चिट्ठी नहीं लिखूँगी । सास नाराज होंगी, हुआ करें । फिर सोचा एक बार मनकी सारी बातें मालूम करा देना उचित है । उनको मालूम हो कि दूसरोंको भी कुछ आत्मसम्मानका ज्ञान है । इसलिये उनके अहंकारको ठोकर देना उचित है । अगर उनके मनमें दूसरोंके प्रति सम्मानका ज्ञान उदय न हो तो मैं भी समझूँगी—मेरा विवाहित जीवन यहीं शेष । उसके बाद मैं मुक्त । नौकाकी रस्सी कट जानेके बाद फिर उसे जहाँ लगना होगा लगेगी । इस प्रकारकी चिन्ताने प्रतिभाके मनमें दम्भभाव जाग्रत किया जिसे अनुभव कर वह प्रसन्न हुई । उसे ऐसा लगा मानो उसके सिरसे एक प्रकारका बोझ सा टल गया हो ।

बहुत चिंताके बाद उसने प्रकाशके पास, आश्रमके पतेपर पत्र लिखा । उसने सोचा आश्रमके ठिकानेपर देनेसे चिठी उन्हें मिलेगी और मनकी बात कड़ी भाषामें नवीनको भी सुना सकेगी । चिठी लिखना खतम होते ही उसके मनमें एक प्रकारकी प्रतिज्ञा करनेकी बात उठ रही थी । चिठी लिखकर ढाकमें देनेके लिये नौकरके हाथ भेजे कि नहीं, चिंता करते करते प्रतिज्ञाने एक आकार धारण किया । जैसे हो उसने चाकरके हाथमें पत्र दिया कि प्रतिज्ञा मजबूत हो गई । वह देख रही थी कि नौकर चिठी लेकर बाहर गया—जब वह आँखोंसे ओझल हो गया तो प्रतिभाने मन ही मन कहा—यह शेष उद्यम है । अगर जेलसे मुक्त होनेके १५ दिन भीतर वे न आयेंगे तो मैं भी अपने जीवनको लेकर अकेले खेलना शुरू करूँगी । मुझे भी माया ममता नहीं । मैं पथकी भिखारिन बनूँगी । मैं दुष्ट पाप प्रवृत्तिवाले मनुष्यके आगे विपद मोल लूँगी । किन्तु मैं मुक्त । उसके बाद मैं और मेरा काम विप्लव, जहाँ अत्याचार होगा वहीं मैं पहुँचूँगी । जहाँ आर्तनाद है वहीं मैं सेवा करूँगी । उसीमें मेरा जीवन सार्थक होगा ।

जान्हवीने जब पूछा—बहू, पत्र लिखा है ? प्रतिभाके हाँ भरते ही सासके मनमें आनन्दकी लहरें उठने लगीं । मुस्कुराकर बोलीं—बहूके मनमें नवीन के आनेकी प्रबल आशा है—यह जान जान्हवी देवीके आनन्दकी सीमा न थी । वे अति प्रसन्न हुईं । बहूके सजल नेत्र देख वे इसलिये अति प्रसन्न हुईं कि वह मेरे पुत्रके लिये दुःखी है; किन्तु नूतन उरसाह, सर्वत्यागी होनेकी उन्मादनाने जो आँखोंमें विकार पैदा किया है—यह जान्हवी देवीके कल्पनातीत था ।

—चौवालीस—

चिन्ती लिखनेके तीन दिन बाद प्रतिभा अपने भविष्यके सम्बन्धमें बैठी चिन्ता कर रही थी । और जान्हवी देवी स्नान करने गई हैं, पूजा पाठ में भी कुछ समय तो लगेगा । अतएव रामा बालक नौकरने सोचा यही समय है छोटी मालकिनसे बातचीत करनेका । इधर उधर नजर गेरता रामा भीतर घुसा । प्रतिभाने अन्यमनस्क रूपसे पूछा—क्या है रामा !

रामा कपाट पर ओढ़क कर बोला—‘बहुत बातें कहनी हैं ।’ प्रतिभा धूमकर बैठ गई और पूछा—क्या कहता है बोल ।

रामा एक बार नीचेको, एक बार ऊपरको, फिर इधर उधर देखकर बोला—प्रजाने कल एक सभा करनेका निश्चय किया है । प्रतिभा कुतूहल प्रकाश करते बोली—बहुत अच्छा, सर्वत्र सभा होती है, यहाँ पर भी हो । क्या कहता है ।

रामाने धीरे धीरे कहा—मुझे उन लोगोंने कहा है आपसे कहनेके लिये, और उपाय नहीं देखा गया । हाकिम लोगोंको अख्तियार करके बाबू जोर जबरदस्तीसे प्रजाओंको दबाकर उनपर शासन करना चाहते हैं; प्रजाका नाम-निश्चयन मिटानेपर तुले हैं । अतएव अब वे कुछ भी माननेको तैयार नहीं हैं—चाहे कुछ भी हो ।

[एकसौ नवासी]

यह तो पुरानी बातें हैं । प्रतिभाने व्यग्र हो पूछा—क्या खबर है ? कुछ नई बात है ?

रामाने साहस बयोर कर कहा—उस दिन मारते मारते एक आदमीको मार डाला गया । उसके बारेमें कुछ भी नहीं हुआ । जो प्रजाकी एकताके नेता थे उन पर सात आठ नम्बरका मुकदमा दायर किया गया है । पुलिस के पास जानेपर वह भी मारने दौड़ती है । हाकिमके पास प्रार्थना-पत्र देनेपर सब फाड़कर फेंक दिया जाता है । मनुष्य कब तक चुप रह सकता है,—यह कह रामा चुप हो गया ।

प्रतिभाने व्यग्रता सहित पूछा—उसके बाद क्या हुआ ? डरता क्यों है साफ साफ सब कहता क्यों नहीं ?

रामाने धीरे धीरे कहा, उसका स्वर नरम पड़ गया था । सारी प्रजा इस ताकमें बैठी है कि ‘एक रोज जमींदार साहेबको.....’ आगे कुछ भी बोल न सका । नीचेकी ओर ताकने लगा ।

प्रतिभा जरा व्यग्र हो बोली—‘तो मारेंगे क्या ? क्या बात है, कहता क्यों नहीं ।’

रामाकी आँखें प्रतिभाके प्रश्नका उत्तर ‘हाँ’ में दिया । लेकिन कुछ भी बोल न सका ।

प्रतिभा समझ गई । उसने जोरसे कहा—‘मेरे समान यदि भीरु सब प्रजा होगी तो वह जमींदारपर हाथ उठायेगी । बोली सुनकर प्राण ले भाग खड़ी होगी, मारेगा कौन ?

[एकसौ नब्बे]

रामा हँसीको मुखमें दबाये हुए, पूर्व नम्रताको प्रकाश करते बोला—नहीं, प्रजा बहुत उत्तप्त हो उठी है। अब उनका साहस और विश्वास किसीपर नहीं रहा। केवल यही उन लोगोंका कहना है—नयी मालकिन हमारी बातें सुनें। उनको अपनी बातें कहनेके बाद फिर हमें जो करना होगा, करेंगे।

प्रतिभा नीचे सिर किये कुछ काल तक सोचती रही। फिर उसने कहा—नये मालिक आ जायें। इतने दिन तो गये, २० दिनके बाद तो वे यहाँ आयेंगे। मैंने चिट्ठी लिखी है।

प्रतिभा कह रही थी, लेकिन उसके मनकी शान्ति इस कथन पर नहीं थी, जोर भी नहीं था।

रामा गरीब था; लेकिन पेटमें चतुरता थी, सब समझता था। धीरे धीरे बोला—प्रजामें यह प्रचार हो गया है कि नये मालिक अब घर नहीं लौटेंगे। वे गांधीके साथ मिल गये हैं। उनकी राह देखते रहेंगे तो इधर सब सत्यानाश हो जायेगा।

हठात् एक बात प्रतिभाको सूझी—वह इतनी प्रसन्न हुई कि मुखसे गम्भीरताकी छाया भी गायब हो गई। बोली—सब मिलकर नये मालिक को आनेके लिये चिट्ठी क्यों नहीं लिखते? आजसे ५ रोज बाद शुक्रवारके दिन वे जेलसे मुक्त होंगे। उसी समय कोई कटक क्यों नहीं चला जाता। उनको सब बातें समझाकर लिवा लाते। तू जाकर सरदारसे कहना मैंने

[एकसौ इक्यानवे]

ऐसा कहा है । नये मालिक आकर सब भंभट मिटा देंगे । प्रजाका मज्जल होगा ।

रामा खुद तो इस बातसे खुश न था, लेकिन इस कथनका प्रतिवाद कर उत्तर भी नहीं दे पा रहा था । कुछ काल चुप रहनेके बाद कहा—अच्छा तो मैं यही बात सबसे कह दूँगा । जो वे लोग कहेंगे आपसे आकर कहूँगा । यह कह वह धीरे धीरे चला गया ।

दूसरी बेला आकर रामाने कहा—सबने कहा है वे चिढ़ी लिखेंगे और कटक आदमी भी भेजेंगे । किन्तु अगर न आयें तो ?

यह सुन प्रतिभाके मनमें क्रोध जाग उठा, उसने उत्तेजित हो कहा—अगर नहीं आयेंगे तो फिर मैं तुम लोगोंकी बातें सुनूँगी, यथोचित व्यवस्था करूँगी । इस शुक्रवारसे पन्द्रहवें दिन जो शुक्रवार पड़ेगा उसके दूसरे दिन शनिवारको तुम सब एक सभा बुलाना । मैं खुद उस सभामें जाऊँगी । आयेंगे क्यों नहीं ? निश्चय आयेंगे । नहीं आयेंगे तो मैं सब समझूँगी ।

इस कथन पर प्रतिभाने इतना जोर दिया कि सुन कर रामा गद गद हो गया । जाकर वैसी ही खबर सबको दी ।

चाणक्यके समान कूटनीतिक-चतुरता भी उत्कलकी निरीह जनताके भीतर प्रच्छन्नरूपसे छिपी ग्राम्य-चतुरताके आगे हार मान जायेगी । रामा प्रजा की खबर लाकर प्रतिभाको देता और प्रतिभाकी खबर प्रजाको देकर अपने आपको सरल सीधा मातवर कहलाने लगा था । इसी सम्पर्कको लेकर

[एकलौ बयानवे]

लोग रामहरिके मनमें एक प्रकारका डर घुसानेकी चेष्टा कर रहे थे। उनको विश्वास था कि अगर प्रतिभाके कानमें बात जायेगी तो वह साससे जहूर कहेगी और बड़ी मालकिन फिर मालिकको समझायेंगी, फलस्वरूप मालिकके मनमें यह भय घुस जायेगा कि प्रजा मौका पाकर पीटेगी। इस प्रकारका डर रामहरिके मनमें अपना आसन जमा लेगी तो फिर जो जीमें आयेगा वह सुविधा उनसे करा लेंगे। इसीलिये रामाने उक्त खबर लाकर प्रतिभाको दी है। यह भला क्या जाने कि प्रतिभाका मन किधर गति करता है।

—पैतालीस—

प्रतिभाने जोरसे कह तो दिया लेकिन उसके मनमें भय हुआ। उसके मनमें विचारोंके तूफान उठे,—यदि सैकड़ों आदमी रामहरि पर आक्रमण करें ! नवीन न आये ! तो क्या वह उत्तेजित जनताका नेतृत्व करके ससुरको मारने आयेगी ? न, तो फिर किस उपायसे उनकी सहायता कर सकेगी ?—वह जाकर उन लोगोंको समझायेगी कि भाई, जरा शांतिसे रहिये। लेकिन उनके दुख दूर होंगे किस उपायसे ? प्रथम तो यही चिंता की बात है कि सास ससुर और समाजको ठेलकर प्रजाके पास जाकर खड़ी होगी कैसे ? किसी भी प्रकारका सम्पर्क रखे भी तो प्रजाके दुख किस उपाय से दूर किये जा सकते हैं ?—नाना प्रकारके उधेड़ बुनके बाद भी उसे कोई ठीक पथ नहीं मिल रहा था। वह जितना समाधानके बारेमें आगे सोचती उतना अधिक भय उसके सामने भयानक रूप धारण कर खड़ा हो जाता था कि प्रजा उससे अप्रत्यक्षा उत्साह पाकर उसे ससुरकी हत्याका भागी बना सकती है। जब वह सोचती—कि प्रजा आकर घरको घेर लेगी, रामहरि डरके मारे लुक जायेंगे, लोग घरके भीतर घुसकर खोज निकालेंगे और निर्ममताके साथ उन पर आक्रमण करेंगे—उसकी देह शिहर उठती। उसने सोचा—काश यह खबर उनको मिल जाती ! एक दिन बातचीतके सिलसिलेमें प्रतिभा जान्हवी देवी से बोली—मैंने सुना है उत्तेजित प्रजा ससुरजी की हत्या करेगी।

जान्हवी देवीने अति व्यग्रता सह पूछा—यह खबर तूने कहाँसे सुनी है ? प्रतिभा जरा सा इतस्ततः हो बोली—रामा कहता था । मैं उससे हमेशा बाहरकी खबर सुना करती हूँ । वह जो वहाँ सुनता है मुझसे कहता है ।

जान्हवी देवीने नाराज हो कहा—वह मरा रामा तुझसे सब कहता है क्यों ? मुझसे तो कभी कुछ भी नहीं कहता । अरे रामा ! ओ रामा !!

पुकार सुन रामा अति भयभीत हो आकर खड़ा हो गया । जान्हवी देवीने पूछा—तूने सुना है प्रजा मालिकको मारेगी ? रामा प्रतिभाकी ओर देख कर बोला—नहीं, मुझे कुछ भी नहीं मालूम है । मैंने तो कहीं कुछ भी नहीं सुना है । किन्तु उसने सोचा—प्रतिभा इससे अपदस्थ हो गई । उसे यह ख्याल न रहा कि लोग प्रतिभाको नवीनकी पत्नी समझ जिस निगाहसे देखते हैं जमींदारकी पत्नी जान्हवी देवीको उस निगाहसे नहीं देखते ।

प्रतिभा विरक्त हो बोली—तूने मुझसे अभी नहीं कहा ? मैंने तुझे समझाया कि वे ऐसा क्यों करते हैं, नये मालिकको आ जाने दें ।

रामा नयी और पुरानी मालकिनके बीचमें पड़ गया । अपनी बुद्धि विस्तार न कर सका; चुप हो गया । जान्हवी देवी प्रश्नपर प्रश्न कर रही थीं । तूने सुना है तो कह—सुना है ?

रामाने सिर खजुआता कहा—मैंने तो उड़ती खबरें सुनी थीं, सच थोड़े ही है । लोग भला क्यों ऐसा करने जायें ।

[एकसौ पञ्चानवे]

जान्हवी देवी चुप हो गईं, नीरव, कुछ बोल न सकीं, गम्भीर हो बैठ गईं। लेकिन रामा भयके मारे काँपने लगा—अगर यह खबर जमींदार साहेबके कानमें पड़ी तो फिर मुश्किलमें पड़ जायेगा। प्रतिभा और जान्हवी देवीको बातचीत करते देख खिसक गया। अति चिन्तित हो जान्हवी देवी ने कहा—भगवान भी कैसी कैसी विपद लाकर यहाँ पहुँचाते हैं। अगर नवीन आ जाता तो मेरी हिम्मत भी कुछ बढ़ती। मैं बाहरकी खबर भला क्या जानूँ, किससे क्या कहूँ ?

प्रतिभा सान्त्वना देते बोली—वह उड़ती खबरें सुनकर कहता था। कितना इसमें सच है कितना भूठ, किसे मालूम ?

जान्हवी देवी सिर हिलाकर भौंहें चढ़ाकर बोलीं—चाहे उड़ती खबर हो या सच; लेकिन बातें उठी हैं तो उसमें कुछ अंश सत्य जरूर होगा। बिना आगके भी भला धुआँ निकलता है ? मालिकके कानमें ये बातें डाल देनी चाहिये।

अब प्रतिभाको लगा कि रामा विपदमें पड़ा। इन सारी बातोंके मुकाबिला करते जब उनको यह मालूम हो जायेगा कि रामा इस प्रकारकी खबरोंका आदान-प्रदान करता है तो वे मारे क्रोधके आग बबूला हो जायेंगे—इस कल्पनाके आते ही प्रतिभा विचलित हो उठी। अधीरताको छिपा न सकी, बोली—उनसे कहनेसे क्या लाभ ? बिना कारणके गुस्सा करेंगे।

जान्हवी देवीकी चिंता अनेक दूर तक चली गई थी, मन ही मन नाना प्रकार की आशङ्का करने लगीं और उन्होंने जोर-जोर से कहा—गुस्सा करेंगे, करें।

[एकसौ छियानवे]

लेकिन उनके कानमें ये बातें डाल देना उचित है, कदाचित् संसारमें क्या नहीं हो सकता ? आगेसे कहनेसे वे प्रतिकारकी कुछ चिंता करेंगे ।

प्रतिभा और कुछ आगे कह नहीं सकी । उसने सोचा—रामाको और खुदको उसने बड़ी विपदमें फँसा दिया है । अधीरताके बीच मनको दृढ़ करनेकी भी कोशिश करती थी । कारण अगर नवीन न आये तो उस दिन उसे कुछ न कुछ तो करना ही है । क्या करना है—सोच नहीं पाती थी ।

प्रतिभाके मनमें जो आशङ्का थी वह नहीं हुई । जान्हवी देवीके मुखसे बात निकलते ही रामहरि उत्तेजित हो बोले—ये सारी बातें मैंने सुनी हैं । उनकी कमेटीमें जो होता है उन्हींका एक आदमी मुझसे सारी बातें कहता है, खबर पाकर मैंने सब प्रतिकार कर लिया है । मेरे साथ ये कौवे लगे हैं, जब तक कुछ मर नहीं जाते, नहीं मानेंगे । यह कह वे कुछ काल तक चुप रहे । इसके बाद शायद इतनेसे ही अपनी पूरी प्रधानता प्रमाणित नहीं हो सकी—यह सोचकर अथवा परिवारको सान्त्वना देनेके ख्यालसे बोले—मैंने पुलिस और जाजपुरके हाकिमको खबर दे दी है । जिस समय बन्दूकधारी पुलिस आयेगी उस समय, आज जो कुत्ते भूकते हैं, मजा चखेंगे ।

—छियालीस—

रामहरिके मुखसे बन्दूकधारी पुलिसकी बात सुनकर प्रतिभाके होश उड़ गये। सभा होगी, हजार हजार आदमी बैठे होंगे, उन लोगोंपर गोली चलेगी, कितने आदमी वहीं मारे जायेंगे कितने घायल होंगे—कितना भयङ्कर दृश्य होगा ! और वह सब होगा, किस लिये ? इसलिये तो, कि गरीब आदमी अत्याचारसे बरी होनेके लिये सिर उठाते हैं ? उन लोगोंका सिर नीचे रखनेके लिये यह सब व्यवस्था होती है। धन क्या ऐसी वस्तु है कि उसके लिये दुनियामें सब कुछ किया जा सकता है ! पुलिस, हाकिम क्या इसी धनके आधीन हो गये हैं ? परन्तु धन आया कहाँसे है ? यह तो उन्हीं गरीबोंसे संगृहीत होकर मुट्ठीभर लोगोंके पास जमा होता है ! उसे फिर उन्हीं दाताओंके विरोधमें खर्च किया जाता है ! वास्तवमें इस अन्याय का अवसान जितना जल्दी हो उतना ही उत्तम है। नवीन घरद्वार छोड़ कर इस अन्यायके विरुद्ध लगे हैं, अच्छा काम किया है। इस चिन्ताने नवीनके कार्यके प्रति प्रतिभाके मनमें श्रद्धा उत्पन्न कर दी। उसके मनसे एक प्रकारकी गाँठ खुल गई। आज तक उसे ख्याल था कि नवीनका घरद्वार छोड़ कर जाना एक प्रकार निन्दनीय कार्य हुआ है; लेकिन आज उसे मालूम हुआ है कि उसके चले जानेके पीछे एक महत् कार्यकी प्रेरणा है। किन्तु यह खबर पाकर उनका आना उचित है और प्रजाओंकी सहायता करना जरूरी है। अगर उनका काम अन्यायके विरुद्ध लड़ना

है, तो यह खबर पाकर वे निश्चय आयेंगे। उनके आनेसे सब ठीक हो जायेगा।

इस चिन्तासे प्रतिभाके मनमें अज्ञात भावसे प्रसन्नता खेलने लगी। उसने रामाको बुला कहा—तुम किसी प्रकारका भय मत करना और सबसे कहना—डरें नहीं। सभी नवीनके आने तक अपेक्षा करें।

यह सान्त्वना रामाके मनको भाई कि नहीं पता नहीं। यह भी तो सोच सकता है कि नई मालकिन इधर यह कहती हैं उधर वैसी। रामाके मनमें इस कथनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा—यह जानकर प्रतिभा दुःखित हुई। उसने पूछा—सब आदमी और क्या कहते हैं?

रामाने मुख सुखाकर कहा—कुछ भी तो नहीं। मुझे तो मालूम नहीं।

प्रतिभाने सोचा—रामाने अपनेको सावधान कर लिया है। अतः उसे कामके बहाने भेज दिया। लेकिन वह समझ नहीं रही थी कि रामा आज क्यों नहीं कहता है।

शिकारसे खिसक जानेवाली चिड़ियाको प्रेमसे दाने दिये जाने पर भी जैसे वह पास नहीं फटकती उसी प्रकार बहुत दिनोंसे अत्याचार-पीड़ित जनता भी अपने हिताकांक्षीको विश्वास नहीं कर सकते—यह बात प्रतिभाके मनको आघात नहीं पहुँचाती थी। लेकिन उसे यह तो मालूम हो गया कि सासके सामने रामाको लाकर खड़ा कर देना भूल हुई

[एकसौ निन्यानवे]

है। रामाने क्या यह सब लोगोंसे कह दिया होगा ? क्या मुझे भी लोग सन्देहकी निगाहसे देखते होंगे कि उनकी बातको प्रकाश करके मैंने उन्हें खतरेमें डाल दिया है—यह सोच प्रतिभा जरा सा चिन्तित हुई। पर मनमें उसने सोचा मैं तो प्रजाओंका हित चाहती हूँ; आज नहीं तो कल यह बात अवश्य प्रकटमें आ जायेगी, सत्य कब तक छिपा रहेगा ? लेकिन अब चिन्ताकी बात है कि अगर नवीन न आये तो क्या मैं अकेली प्रजाओंका पक्ष लूँगी ? इस चिन्ताके आते ही वह सोचने लगी, किस हालतमें उसे क्या करना होगा। प्रथम तो वह किसीकी बात न मानकर प्रजाओंकी सभामें जायेगी। शरीरको पत्थर-सा कड़ा कर सास-ससुर, जात-पाँत, पास-पड़ोस सभीकी आँखें बन्द करके वह आगे बढ़ेगी। वहाँ जाकर वह क्या कहेगी ? कैसे कहेगी ? पाँच आदमियोंके साथ तो उसने आज तक बातें नहीं की है ! केवल सभाओंमें दी हुई वक्तृता खबर कागजमें पढ़ी है। सभामें पहुँचकर वह सबको देखेगी, सभी उसे देखेंगे—यह सोचते ही प्रतिभाके मुखमें लज्जा हिलोर मारने लगी। उसे ऐसा लगता कि चिन्ता उसके मनमें आये ही नहीं। बहुत चेष्टा करके छाती कड़ी कर वह सभामें पहुँच जोरसे पुकार कर कहेगी—‘भाइयो ! आप लोग चले जाइये; मैं आप लोगोंकी सारी बातें पूर्ण करानेकी कोशिश करूँगी।’ इतनी चिन्ताके आते ही उसकी देह पसीनासे तर हो गई। सभामें क्या केवल इतना ही कहेगी, लोग इतनी सी बातें सुनकर चले जायेंगे ?

अनेक सभाओंमें पुलिस जैसे जाकर कुछ बोलनेके लिये मना करती है अगर वहाँपर भी वैसा ही हो तो ऐसी दशामें वह क्या करेगी ? क्या वह

लम्बा जोरदार व्याख्यान देकर लोगोंको निर्भीक होनेके लिये कह सकेगी ? उस समय वह न किसीकी स्त्री है न पुत्रवधू , उसका न घर है न संसार । पति परित्यक्ता सीताने जैसे विशाल विदीर्ण वसुधाके भीतर आश्रय लिया था उसी प्रकार वह उन्मुक्त पृथ्वीमें अपनेको मिला देगी । अतएव जी भरकर वह रामहरिके अत्याचारकी निन्दा करेगी । उस अत्याचारके विरुद्ध उत्साहके साथ लड़नेके लिये लोगोंसे कहेगी ।

इस प्रकारकी वक्तृता मनमें जमाते प्रतिभाकी आँखें लाल और सतेज हो उठी थीं, मुखमण्डल अरुण हो गया था ।

जिसप्रकार कारागारमें बन्दीका मुक्ति-दिवस जितना निकट होने लगता है उतना ही वह युग-सा बनना जाता है उसी प्रकार प्रतिभा चिंतामें डूबती उतराती थी, १५ दिन खतम ही नहीं हो पाते थे ।

—सतालीस—

दिनके बाद दिन अति कष्टके साथ बीत रहे थे । नवीनकी जेल मुक्तिकी खबर समाचारपत्रोंमें प्रकाशित हो गई ! उसके बाद एक, दो, तीन करके दिन महीनेके समान बीत रहे थे । अब पन्द्रहवाँ दिन बीतनेवाला है । बस आते ही होंगे—आधे रास्तेमें होंगे—इसी प्रकारकी कल्पना प्रतिभा अपने मनमें कर रही थी । इस बीचमें उसे खबर मिली है कि नवीनको लानेके लिये जनताने कटक आदमी भेजा है । किन्तु उस सूत्रसे भी कुछ खबर नहीं मिलती । पन्द्रहवें दिन प्रतिभा रामासे गंभीर हो बोली—
कल सभा करें । मैं जाऊँगी ।

रामाको विश्वास नहीं हुआ । इधर उधर देखते खड़ा रहा । लेकिन जब प्रतिभाने जोर देकर कहा तब उसे विश्वास हुआ । वह धीरे धीरे वहाँसे गया और गाँववालोंको यह खबर दी ।

प्रतिभाके मनमें कितना अभिमान है और अत्याचारियोंके प्रति कितनी सहानु-भूति है, समझना कठिन है । क्योंकि नाना प्रकारके भावोंके घात-प्रतिघातसे मनुष्यका मन ऐसा हो जाता है जिससे पूरापूरी समझना मुश्किल होता है । प्रतिभाके मनमें ज्वार-भाटा उठा—इतना अहङ्कार, इतना गर्व ! उस दिन मैं खुद गई थी बुलानेके लिये—भिखारीको दुरदुरानेकी तरह मुझे भगा

दिया, फिर इतनी विनयके साथ चिट्ठी लिखी उस चिट्ठीको तो उन्होंने जरूर देखा होगा। आनेकी बात तो दूर रही उत्तर तक भी नहीं दिया। गाँववालोंने आदमी भेजे, उनकी बात भी नहीं रखी। गाँववाले कोई नहीं, माता पिता कोई नहीं, मैं तो कोई नहीं हूँ। वे यदि इतना बेपरवाह हो सकते हैं तो मैं क्यों इतना संकोच रखूँ। मैं दूसरेके घरकी लड़की हूँ। सास-ससुर मिलेंगे इसलिये नहीं आई थी। मेरा भी आत्म-सम्मान है। मैंने लोगोंको वचन दे दिया है १५ दिनके बाद सभा करनेके लिये। मैं उसमें भाग लूँगी। मैं भाग लूँगी, लूँगी। उसी रोज मेरा यह संसार खतम। माता पिताके घर काम करके भूख-प्याससे जीवन कटता था। यहाँ एक वर्ष हो गया--अब मेरे भाग्य। वन-पट्टीकी भाँति उड़ जाऊँगी। जिस डालमें मेरा मन होगा बैठूँगी--बुछ भी न होगा तो अनेक “माताजी” जैसे भीख माँगकर चलती हूँ मैं भी वैसे ही एक बन जाऊँगी। इस चिंता से प्रतिभाका क्रोध, अभिमान और दुख एक साथ मिलकर साँस प्रखर होती जा रही थी।

घर छोड़कर चली जायेगी—यह चिंता उसके भीतर ही भीतर उमस रही थी। अपनेको संभालकर फिर उसी चिंतामें डूब जाती। उसका मन अपने आपको भविष्यकी एक अपरिचित हालतकी ओर तैयार करता है। सूर्य भी इसी हालतकी अपेक्षा करते हुए लौटा जा रहा है, इसी समय खूब जोरसे रामहरिकी बोली सुनाई दी। जान्हवी देवी खिड़कीके पास आकर सुनने लगीं। देखने लगीं क्या होता है। प्रतिभाने सोचा शायद नवीन आ गये। उसका मन करता दौड़ कर जाये और देखे। किन्तु मनमें अभिमान करके

बैठी रही। आये हैं—आवें। अब मैं प्रथम उनसे बात नहीं करूँगी। कुछ कालके बाद जान्हवी देवीने आकर कहा—बहू ! सुना, वे सब डुग्गी पीटकर कह रहे हैं कि कल शामको हाटके मैदानमें एक सभा होगी और तू वहाँ व्याख्यान देगी। ससुर सुनकर गुस्सा होते हैं, पुलिसको आनेके लिये खबर दे दी है। बहूके नामसे डुग्गी पीटते हैं इसलिये उनको गाली देते हैं। इन लोगोंकी मान-मर्यादा कुछ भी नहीं है। कुलवधूके नामसे नगरा दे रहे हैं।

आगामी कलकी सभाके लिये लोगोंके भीतर जिस प्रकार उत्तेजनापूर्ण उत्साह है रामहरिके घरमें भी उसी प्रकारकी उत्तेजना खेल रही है। रामहरि उसी दिन सभीको शिक्षा देंगे—इसके लिये उनका खून खौल रहा है। लोगोंके मुखसे जान्हवी देवीने जो अफवाह सुनी थी—सोचती थी, कहीं वास्तवमें सत्य न हो जाय, इसलिये उनका मन चञ्चल है। नवीन नहीं आयैगा—इस खबर को सुन प्रतिभा अपने आपको पिंजरेसे निकालनेके लिये तैयार कर रही है इसलिये उसके मनकी चञ्चलता दुगुनी गतिपर थी। उस रातको प्रतिभा अपने पलङ्गपर न सोकर जमीनपर एक चटाई बिछाकर सोई थी। मन ही मन पलङ्गसे उसी रोज विदा ले ली। जो गहने पहिने थे सभी को उतार कर बक्सेमें बन्द कर दिया, केवल हाथमें दो दो चूड़ियाँ रह गई थीं। ताला लगा प्यासी आँखोंसे कुछ समय देखती रही फिर दीर्घ निश्वास गेरकर उनसे विदा ली। चटाई पर लेटे लेटे घरके चारों ओर देखती अपने जीवन वृत्तान्तको स्मरण कर रही थी। उसकी इच्छाके विरुद्ध आँसू आया करते थे। बाल्यकाल, स्कूलमें पढ़ते समय ‘अपुलि’

नामसे किस प्रकार प्रतिभा बना, महेंद्र बाबूके नामसे मिथ्या प्रचार, घरमें माता-पिताकी ताड़ना, विवाहके बारेमें माता-पिताका सुख-स्वप्न, शेषमें सासका स्नेह, निज स्वामीका अनादर तथा अवहेलना आदि मनमें स्मरण कर रही थी। इस अतीतके साथ उसके भविष्यका कोई सम्बन्ध नहीं रहेगा। वह इस संसारसे कूदेगी और किसी दूसरे अज्ञात संसारमें जाकर गिरेगी। नई दुनियासे अपरिचित होनेके कारण वह उसके बारेमें अधिक चर्चा नहीं कर रही थी। अतएव उसका उत्तिष्ठत मन परिचित विषयकी ओर अधिक जा रहा था। वह जितना सोचती थी, कभी कभी उसका मन क्रोधके मारे दुःख और अवसादसे भर जाता था। एकके बाद एक दीर्घ निश्वास निकल रहा था। रातभर छुटपटाती करवटें बदलती रही। सबेरेकी शीतल वायुके स्पर्शसे उसे जरा सी शांति मिली और उसे मालूम नहीं हुआ कि अब किसकी अपरिचित गोदमें वह सो गई है। सारी चिंताओंसे मुक्त हो गई।

प्रतिभा कुछ काल तक निद्रामें लीन रही, फिर वह स्वप्नावस्थामें भ्रमण करने लगी। स्वप्नमें नवीन उसके पास आकर खड़ा हो गया। नवीन अति नम्र भावसे कहता है — प्रतिभा मुझे क्षमा कर दो।

प्रतिभा कहती है—मैं अकेली ही आई हूँ और अकेली चली जाऊँगी। मेरा किसीसे कोई नाता नहीं है। मैं क्षमा क्या करूँगी, मुझसे तो किसीने दोष ही नहीं किया।

अति व्यस्त हो नवीन कहता है, तो क्या मेरा जीवन व्यर्थ हो जायेगा ?

प्रतिभाने कहा—वह तो उसी दिन व्यर्थ हो गया है जिस दिन कि तुमने मुझे दुर्दुराया था। लेकिन अब मैं अपना जीवन व्यर्थ नहीं करना चाहती। मुझे छोड़ दो। यह कह प्रतिभा धीरे धीरे चलकर दूर शून्यके साथ मिल जाती है। वहींमे खड़ी खड़ी वह आँखें खोलकर देखती है कि नवीन उसकी ओर कातरताके साथ देख रहा है। उसकी कातरता को देख प्रतिभाके मनमें दयाका सञ्चार हो उठता है। चली आनेकी इच्छा होती है; लेकिन बीचमें एक महाशून्य है, कोई किसीके पास तक नहीं जा पाता।

इस समय किवाड़के खुड़कनेसे प्रतिभाकी नींद भूट गई और सुना गया प्रेमके साथ जान्हवी देवीका स्नेहपूर्ण स्वर—बहू आज अभी तक सोई हो क्यों ? प्रतिभाका मन निद्रा त्यागते ही नवीनकी ओर गया। उसके मनमें यह आशा लगी थी कि कोई आकर कहेगा कि नवीन आ गया है। किंतु निराश भावसे सासकी ओर उसने देखा। दीर्घ निश्वास गेरा। उसीमें मानो उसने कहा—“आज शेष है।”

—अड़तालीस—

सबेरा हो गया । सभी साज-सज्जोंमें लग गये । रामहरि जल्दी जल्दी स्नान पूजापाठ कर हाकिम और पुलिसके रहने-खानेकी व्यवस्थामें लग गये । कारण खबर मिली है कि हाकिम, २० बन्दूखधारी पुलिस सिपाही, इन्स्पेक्टर, सबइन्स्पेक्टर सभी ११ बजे पहुँच जायेंगे । दाल, चावल, काठ, हाँड़ी आदि सब ठीक ठाक करके एक बकरेको काटकर लानेकी आज्ञा रामहरिने दे दी है । उसके बाद १० आदमियोंको लगा दिया है कि वे सभाके सम्बन्धमें कहाँ क्या होता है उसकी खबर लाकर दें ।

सभा आज साधारण वस्तु बन गई है; लेकिन विद्रोहकी सभा अत्याचारि राजा या जमींदारके मनमें ऐसे भयका सञ्चार कराती है जैसे पुराणोंमें कंसके मनमें कृष्णके प्रति भयका वर्णन है ।

अनेक लोगोंको दाबकर रखनेकी प्रतिक्रिया अपने मनमें ऐसी होती है कि कहीं सभी मिलकर उन्हें दाब न दें ।

लेकिन उसके अलावा भी नाना प्रकारकी अफवाह रामहरिके कान तक आ गई है । वे अग्निवाणसे कभी इस घरमें तो कभी उस घरमें आ जा करं थे और आदेश भी कर रहे थे । जान्हवी देवी भी सबेरे स्नान करके पूज करनेमें लगी हैं ताकि किसी प्रकारका डर न हो, विघ्न न आवे ।

उस दिन प्रतिभा सबेरेके नित्य कर्म शेष कर मन ही मन प्रत्येक वस्तुसे, कामसे मानो विदाय ले रही हो। उसकी देहमें सोनेकी दो-दो चूड़ियोंके सिवा और कुछ भी गहना नहीं है। यह देख जान्हवी देवीने पूछा—क्यों बहू, सब तो निकाल ही डाला था शरीरमें जो था उसे भी उतारकर रख दिया ?

प्रतिभा गम्भीर हो कुछ काल तक नीरव रही। फिर बोली—गहनेकी पेटी आपके कमरेमें रहे।

जान्हवी देवी इस कथनका अर्थ कुछ भी न समझ सकी। उसने सोचा, बहूके मनमें डर होता है कि कहीं आदमी घुसकर गहने न ले जायें। हँस कर बोली—तू पगली भयी है बहू। घरके भीतर कौन आयेगा—वहीं रहने दो।

लेकिन प्रतिभा बिना अपेक्षा किये गहनेकी पेटी उठाकर सासके कमरेमें रख आई। जान्हवी देवीने इस घटनाको अधिक महत्त्वका नहीं समझा। प्रतिभा आकर सासके लिये पान लगाने बैठ गई। लेकिन आज पान भी प्रतिभाने नहीं खाया। भोजन भी अच्छा बना है; लेकिन प्रतिभा खा नहीं सकी। जान्हवी देवीके बहुत कहनेपर उसने कहा—‘मेरे पेटमें कुछ गड़बड़ी सी है।’

रामहरि हाकिमोंकी चर्चामें व्यस्त हैं। रोजकी तरह चटई बिछाकर जान्हवी देवी जरा आराम करने लगी और प्रतिभा पैर दबाने लगी।

[दोसौ आठ]

बहुकी सेवासे खुश हो सासने पूछा —तूने खाया नहीं जा जरा सा लेटे रह । किन्तु प्रतिभा उस कथनपर ध्यान न दे पैर दबाती रही । बीचमें जान्हवी देवीको नींद लग गई है । इसी समय प्रतिभा कुछ काल सासके तलवोंपर सिर रख लेटी रही । ‘माँ ! मुझे विदाय दो’ मन ही मन कहते कहते आँखोंसे आँसुओंकी धार बह चली । वह हृदयके भाव सम्भाल न सकी, उठकर चली गई ।

प्रतिभा अपने कमरेके फर्श पर बैठकर बड़ी देर तक रोती रही । चलचित्रके समान भविष्य उसकी आँखोंके आगे खेल रहा था ।

निस्तब्ध चाँदनी रातमें किसी विशाल मैदानमें अकेले खड़े होनेपर जिस प्रकार शून्य मालूम पड़ता है उसी प्रकार प्रतिभा अपनेको संसारमें अकेली समझ रही थी । धीरे धीरे चिन्ता अतीतको छोड़कर भविष्यकी ओर जा रही थी । वह सोचती थी— सन्ध्या होते ही मैं सभामें धीरेसे जा पहुँचूँगी; जो सूझेगा कहूँगी । साथमें रामको ले जाऊँगी । उस सभामें वह सबसे कहेगी—मैं अत्याचारके विरुद्ध लड़नेके लिये घरद्वार सब छोड़कर चली आई हूँ । उसके लिये आज मैंने जीवन दान दिया है । उसके बाद जहाँ प्रकाश होंगे वहीं वह जायेगी । वास्तविक वे जो कहा करते थे सब अक्षरशः सत्य निकला । इतने बड़े आदमी, पर उन्हें कैसे अपमानित कर निकाल दिया गया । उन्हींके हाथ वह अपनेको समर्पण कर देगी ।

इस समय छोटी छोटी चिन्ता भी प्रतिभाके मनको आती—प्रकाशके साथ रहते नवीनसे भी मुलाकात होगी । तो फिर !.....लेकिन इस

[दोसौ नौ]

चिंताको विरक्तिके साथ फेंक देती। नहीं, उनसे मेरा अब कोई सम्पर्क नहीं रहेगा। नाता तक नहीं रखूँगी। अब वे मेरे कौन हैं? मैं उनकी क्या हूँ? प्रकाश जैसी आज्ञा देंगे वैसे ही करूँगी। मैं फिर कभी इधर नहीं लौटूँगी। अगर मेरी खबर लेनेके लिये आयेंगे तो मैं ऐसे रहूँगी कि मेरी खबर जरा भी किसीको न लगे। मैं अदृश्य हो जाऊँगी।

अन्तमें रामाको लेकर साँभको किस प्रकार घरके पिछवाड़ेसे जायेगी उसीकी चिंता करने लगी। एक घण्टेके अन्दर न जाने कितने विचार उठे और गये। फिर वह भविष्य जीवनके लिये अपनेको तैयार करने लगी।

—उनचास—

हाट बाजारके मैदानमें सभा होगी, इसलिये चारो ओरसे आदमी दोपहरसे ही चलकर आ रहे हैं। सभा होते ही अत्याचार एकदम बन्द हो जायगा, ऐसा लोगोंका विश्वास है; आग्रह भी है। यहाँ तक कि रामहरिकी जमीं-दारीके बाहरके आदमी भी आ रहे हैं। आखिर वे भी तो अपने अपने जमीं-दारोंके द्वारा अत्याचारित हैं। इसके बाद तमाम जगह प्रचार हो गया है कि प्रतिभा इस सभामें भाषण देगी। नवीन देशके कामके लिये जेल गया है। उसीके लिये अपना सारा जीवन दान करनेका निश्चय किया है—यह बात सभीको मालूम है। सीता देवीके समान उसकी पत्नी भी उसका अनुकरण कर रही है—यह दर्शन भी बड़े सौभाग्यकी बात होगी। विद्रोह के सरदार अपनेको गौरवान्वित समझते हैं कि वे लोग उनकी बहूको लाकर ससुरके विरुद्ध खड़ा कर सके हैं। आज हाकिम, पुलिसका डर नहीं रहा। कारण खुद जमींदारकी पुत्रवधू इस सभामें आ रही हैं।

शाम होनेके प्रथम प्रायः २-३ हजार आदमी जम गये। सभामें लोगोंको शान्तिसे बैठानेकी अभिज्ञता किसीमें नहीं है। प्रथम तो इतने लोगोंके समागमसे हरेक व्यक्ति सारी जनताकी मिलित शक्ति तथा उत्साहको अपनेमें अनुभव करता था। साथ ही सामूहिक उत्साह भी बढ़ रहा था। इस प्रकार नाना उन्मादना सभामें परिलक्षित होती थी। चित्कार

हल्लेकी सीमा न थी। लोगोंका समागम और कोलाहल सुनकर बन्दूक-धारी पुलिस दौड़ आई। बन्दूकधारी पुलिसको देख भयका थोड़ा भी सञ्चार नहीं देखा गया; बल्कि उससे उतेजना और अविक बढ़ी। सभा के बीचमें चौकीदारके द्वारा लाई गई कुरसीपर हाकिम बैठ गये। और सामने रखी गई एक मेज। मेजके दोनों ओर इन्स्पेक्टर, सबइन्स्पेक्टर खाता पित्तल लेकर बैठ गये और सभाके चारों ओर आँखें घुमाकर देखा। उनकी आँखोंको कौन देखता है। भयभीत लोगोंके लिये न वे भयके सामान हैं; लेकिन निर्भय वायुमण्डलके पास वे हीन जन्तु ही हैं। हाकिम उत्साहहीन हो चारों ओर देख रहा था। उसके मुखपर विपाद की छाया भी देखी जा रही थी।

धीरे धीरे कोलाहल शांत होने लगा। लोग बैठने लगे। दूरसे “बैठ जाइये” “बैठ जाइये”की आवाज प्रोत्साहित करती थी। प्रकाश और पुरन्दर घूम घूमकर सभामें सबको बैठा रहे थे। चुप करा रहे थे। प्रकाशके ऊपर हाकिमकी आँखें पड़ीं। उन्होंने उनको पास बुलाया। प्रकाश देखकर जरा हँसते हुए भीड़से निकलकर हाकिमसे बेपरवाहीके साथ बोले—कहिये महेंद्र बाबू! आप आये हैं गोली चलानेका आदेश देनेके लिये? बहुत अच्छा, आज ही इस रङ्गमञ्चपर इतने आदमियोंको आपका अन्तिम अभिनय देखनेका सौभाग्य मिलेगा। हाकिमके सामने प्रकाशको इस प्रकारकी निर्भीक बातचीत करते देख उपस्थित जनता अवाक् हो ताकती रह गई। और कान लगाकर यह भी सुननेके लिये उत्सुक थी कि क्या बातें होती हैं।

[दोसौ बारह]

प्रकाश महेंद्रके एक परिचित बन्धु हैं, और एक समय वे उनका सम्मान भी करते थे। इसलिये कुरसीपर बैठे होनेके कारण मनमें भाव उठते थे कि कहे—आइये, बैठिये। लेकिन हाकिम भावने उस ज्ञानको गर्दनिश दिया। महेंद्र बाबू प्रकाशकी बातें सुन प्रथम जरा दबसे गये थे। लेकिन हाकिम होकर दब जाना अनुचित है इसलिये तेजीयान हो बोले—अगर आप लोग अशांति करेंगे तो गोली चलानी ही पड़ेगी। इसमें विस्मित होनेकी कोई भी बात नहीं है। ‘गोलीका डर तो तब होता जब देखते कि इसी गोलीसे हमारी मुक्ति है’—यह कह प्रकाश ठट्ठा मारकर हँसने लगे। महेंद्रके मनमें जरा विरक्तिका भाव आया। विरक्तिभरी मुस्कानके साथ कहा—सब जगह व्याख्यान देना तो आपका काम हो गया है। कहिये और क्या खबर है ?

प्रकाशने इस प्रश्नकी सुविधा लेकर कहा—हाकिमके साथ घरेलू बात क्या की जा सकती है। आप हाकिम हैं, मैं एक साधारण आदमी। आप कुरसी पर हैं, मैं पास खड़ा बातचीत करूँगा—इसमें घरेलू बातें कुछ भी नहीं हैं।

महेंद्र बाबू मन ही मन लज्जित हुए। सिर घुमाकर इधर उधर देखा; फिर पूछा—सभा किस समय आरम्भ होगी ?

‘शामको’ प्रकाशने कहा।

महेंद्रने हँसकर कहा—शाम किस समयको कहते हैं ?

[दोसौ तेरह]

वहाँसे जाते हुए प्रकाशने कहा—बड़े आदमियोंके पास घड़ी है, गरीब कैसे समझेंगे। उनके पास तो तीन जून हैं। सबेर, दोपहर और शाम। उसके बाद रात। इतना कह वे चले गये।

महेंद्र बाबू व्यग्र हो बोले—जरा ठहरिये, ठहरिये। हाँ, प्रतिभा देवी सभामें किस समय आवेंगी? प्रकाश इस प्रश्नको अनसुना करके चले गये। अब महेंद्रका मुखमण्डल गम्भीर हो गया। पिछली नाना बातें महेंद्रको मथने लगीं, यह केवल वही जानता था।

अनेक समय तक सभा में चुप बैठे रहना भी कष्टदायी है। आपसमें धीरे धीरे बातचीत होते होते फिर कोलाहल हो जाता है। इसलिये कुछ काममें व्यस्त रखनेके लिये प्रकारा चेष्टा करने लगे। ऐसी सभाओंमें प्रथम सभापति निर्वाचन, फिर सभापतिके द्वारा वक्ताओंका आह्वान आदि कुछ नहीं होते। इसीलिये पुरन्दर खड़े होकर देशकी परिस्थितिके बारेमें व्याख्यान देने लगा। पंजाबके अत्याचारसे लेकर अंग्रेजी राज्यमें यह देश किस प्रकार दुरवस्थाको पहुँचा आदि विषयपर एक लम्बा व्याख्यान देने लगा। उपस्थित जनता नीरव निस्तब्ध होकर सुन रही थी। बीच बीचमें व्याख्यानकी गति सरकारी कर्मचारियोंकी ओर भी चली जाती थी।

—पचास—

शाम हो गई । सभाके बीचमें चार गैस बत्ती जला दी गयी । पुरन्दर अन-
गल व्याख्यान दे रहा था । जो देहाती आदमी अपने गाँवको या अधिक
से अधिक आस पासके कई गाँवोंको लेकर, जिसे कि वे अञ्चल कहते हैं,
उसीको अपना देश भी समझते हैं । जिनकी दृष्टिसे जिलेका अर्थ—जहाँ
अपीलें होती हैं, मुकदमेकी सुनाई होती है; प्रदेशका अर्थ जो नहीं सम-
झते, जीवनमें जिन्होंने मानचित्र (नक्सा) कभी नहीं देखा है वे भला
आयरलैंडका विप्लव, रूसकी राजक्रांति, चीनका राष्ट्रीय आन्दोलन कैसे
समझेंगे । पंजाब कहनेसे किस जन्तुको कहा जाता है उनके दिमागमें
नहीं घुसता था । फिर भी उत्साहके बल पुरन्दर अपनी ओजस्विनी
भाषामें व्याख्यान दिये चला जाता था । फूलका आदर बिना देखे
भी गन्धके द्वारा जैसे उसका अनुभव जाग्रत होता है उसी प्रकार बातको
न समझते हुए भी पुरन्दरकी उत्साहमयी ओजस्विनी भाषासे लोग
प्रभावित थे । मोटे तौरसे उनके मनमें कुहिरा सी एक धारणा होती थी
कि अब उनके सारे कष्ट दूर होंगे । यही आशा उनको मन्त्रमुग्ध किये
हुए थी । संपेरेकी बीनसे मुग्ध साँपके समान सब वक्ता के मुखकी ओर
देख रहे थे ।

सभाके पीछे धीरे धीरे सुरसुराहट सी होने लगी । एक एक करके उधर देखने लगे । धीरे धीरे सभीकी निगाह सभामञ्चकी ओर चली । कोला-हल भी बढ़ चला । पुरन्दर श्रोताओंके ऊपर विरक्त नहीं हुआ । उल्टे वह भी उधर देखने लगा, वह चुप हो गया । “प्रतिभा देवी आती हैं, नई मालकिन आती हैं ।” कहते कहते ‘महात्मा गांधीकी जय’के नारे लगने लगे । जयध्वनिसे सभास्थल हिलोरें मारने लगा । पुरन्दर चित्कार करता है—भाइयो ! बैठ जाइये, बैठ जाइये । लेकिन कौन सुनता है ? हाकिम भी अपनी कुरसीपर खड़े होकर उधर देखने लगे । सोचने लगे, यह वही बालिका है जिसे एक दिन अपने हियमें स्थान दिया था । जिसके मुख मण्डलको अनेक दिनों तक आँखोंके सामने रखा था । पिछली सभी स्मृति महेंद्र बाबूके सामने नावने लगी । प्रकारा रास्ता दिखाते हुए प्रतिभाको सभाके बीच ले आये ।

प्रतिभाके मनमें लज्जा संकोचका चिन्ह भी नहीं था । उनके नेत्रोंसे एक प्रकारकी अपूर्व ज्योति निकल रही थी । उसका हृदय और शरीर इस प्रकार सजोर और उत्साहमय है मानो कोई पहलवान कुस्ती लड़नेके लिये अखाड़ेके मैदानमें लंगोटा बांध उतर रहा हो । प्रतिभाने दृढ़ताके साथ सभाके चारों ओर देखकर प्रकाशकी ओर देखा । प्रकाशने चुपकेसे कहा—तुमको जो कहना है कहो, आदमी बड़ी देरसे बैठे हैं और काफी सुना भी है ।

प्रतिभा चुपचाप धीर स्थिर कुछ काल खड़ी रही, फिर अपने स्वरको जितना ऊँचा कर सकती थी करके बोली—भाइयो ! मैं नई हूँ, अभी अभी

[दोसौ सोलह]

पिंजड़े से निकली हूँ, अच्छी तरह से उड़ भी नहीं सकूँगी, इसलिये मुझसे अधिक कुछ आशा न कीजियेगा। किन्तु इतना ही कहे देती हूँ कि मैं आप लोगों के दुखमें दुखी होने के लिये घर से निकली हूँ। आप लोगों की भलाई ही मेरी भलाई है। आप लोगों का अमङ्गल ही मेरा अमङ्गल है। सूर्य के उदय होने के प्रथम जिस प्रकार महोखे बोल उठते हैं, उसी प्रकार आज यह सभा सारे अत्याचार को लोप करके शांति-विस्तार का संदेश दे। मैं भी अपनी क्षीण शक्ति उसी लक्ष्य साधन में लगाऊँगी। मैं और अधिक कुछ भी नहीं कह सकूँगी। इतना कहकर प्रतिभा बैठ गई। बैठते ही वह प्रायः अज्ञान सी हो गई। उसे ऐसा लगा मानो किसी मन्त्र के बल से उसने आज इतना कहा है। कहने के बाद उसके भीतर की वह कृत्रिम शक्ति चली गई। प्रकाश उसे पकड़कर अपने चादर के छोर से हवा करने लगा। लेकिन उधर सबकी निगाह न थी कुछ पास के ही लोगों की थी। बाकी सब 'महात्मा गांधी की जय' बोल रहे थे।

प्रकाश के निर्देश से पुरन्दर सब को चुपचाप चले जाने के लिये चिन्तार कर कह रहा था। लेकिन सुनता कौन है ? धीरे धीरे प्रतिभा की ओर सब बढ़ने लगे। घेर लिया। एक विराट जनता घेरकर खड़ी देख रही है। प्रतिभा को चैतन्य हुआ। लोगों को देखा। फिर सकुचाती हुई प्रकाश से बोली — 'किधर चलना है, चलिये।' प्रकाश लोगों से चले जाने के लिये कहते हैं। कितने चले भी जाते हैं परन्तु फिर आ जाते हैं, भीड़ नहीं घटती। बाद फिर पीछे की ओर कोलाहल होने लगा—भीड़ को ठेलपेल कर कोई मानो चला आ रहा हो। "रास्ता दो" "रास्ता दो" की चिन्तार सुनाई देने लगी।

आनन्दध्वनि दे देकर लोग पागल-से होने लगे । नवीन आकर खड़ा हो गया । उसकी निगाह प्रतिभा पर पड़ी । दोनों कुछ देर तक एक दूसरेको अपलक देखते रहे ।

महेंद्र बाबू विषम भावसे कुछ दूर पर खड़े दोनोंको देख रहे थे । नवीन प्रतिभाको कैफियत देनेके उद्देश्यसे प्रकाशको लक्ष्य करके बोला—‘मैं कल आ पहुँचता, लेकिन ‘छमका’ से पैदल चलकर आ रहा था, स्टेशन आने के पूर्व गाड़ी छूट गई । कितना अत्याचार वहाँ हो रहा है, लोग...’ प्रकाश खड़े होकर बोले—“मेरा श्रम आज सार्थक हुआ है, विप्लवका दह बनकर तुम दोनो चिरंजीवी होवो, दुख ही तुम दोनोका चिर सुख हो । निर्धनता ही तुम्हारी सम्पद हो, विच्छेद ही तुम्हारा मधुर मिलन हो, आदर्श विप्लवियोंको यही मेरा आशीर्वाद है ।”



